अंगसुत्ताणि

३

नायाधम्मकहाओ. उवासगदसाओ. अंतगडदसाओ
अणुत्तरोववाइयदसाओ. पण्हावागरणाइं. विवागसुयं

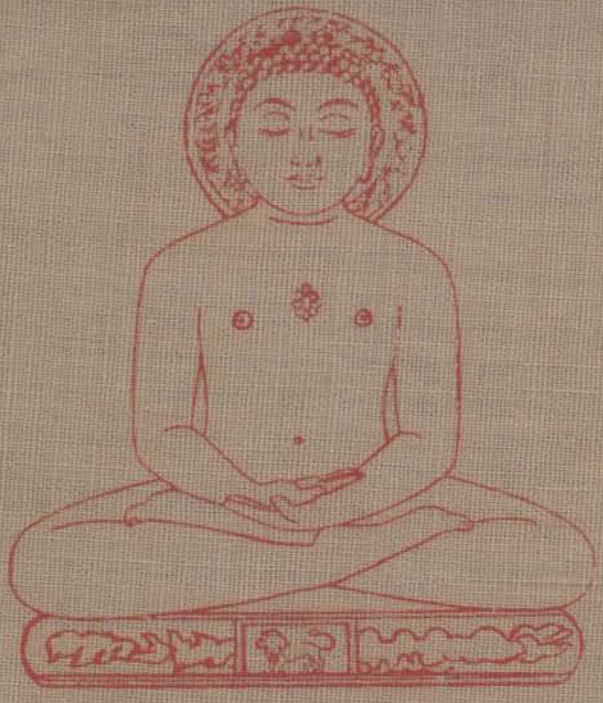

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
मुनि नथमल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में

निग्गंथं पावयणं

अंगसुत्ताणि

३

नायाधम्मकहाओ • उवासगदसाओ •
अंतगडदसाओ • अणुत्तरोववाइयदसाओ •
पण्हावागरणाइं विवागसुयं

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
मुनि नथमल

प्रकाशक
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रबंध सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया,
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
(जैन विश्व भारती)

आर्थिक सहायक
श्री रामलाल हंसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि :
विक्रम संवत् २०३१
कार्तिक कृष्णा १३
(२५०० वां निर्वाण दिवस)

पृष्ठांक : ६२५

मूल्य : ८०/

मुद्रक :—
एस. नारायण एण्ड संस (प्रिंटिंग प्रेस)
७११७/१८, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ANGA SUTTĀNI

III

NAYĀDHAMMAKAHĀO. UWĀSAGADASĀO.
ANTAGADADASĀO. ANUTTAROWAWĀIYADASAO.
PANHAWAGARANAIN. VIVĀGASUYAM.

(Original text Critically edited)

Vāćanā PRAMUKHA
ĀCĀRYA TULASI

EDITOR
MUNI NATHAMAL

Publisher
JAIN VISWA BHĀRATI
LADNUN (Rajasthan)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Managing Editor
Shreechand Rampuria
Director :
Āgama and Sahitya Publication Dept.
JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

Financial Assistance
Sri Ramlal Hansraj Golchha
Biratnagar (Nepal)

V.S. 2031
Kārtic Kṛishnā 13
2500th Nirvaṇa Day

Pages 925

Rs. 80/-

Printers :
S. Narayan & Sons (Printing Press)
7117/18, Pahari Dhiraj,
Delhi-6

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समर्पण

पुट्ठो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु,
होकर भी आगम-प्रधान था।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से।

विलोडियं आगमदुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं।
सज्झाय - सज्झाण - रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत।
श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से।

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन में।
हेतुभूत श्रुत - सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है—

संपादक :		**मुनि नथमल**
	सहयोगी :	मुनि दुलहराज
पाठ-संशोधन :	,,	मुनि सुदर्शन
	,,	मुनि मधुकर
	,,	मुनि हीरालाल

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

सन् १९६७ की बात है। आचार्यश्री बम्बई में विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता से पहुचकर उनके दर्शन किए। उस समय श्री ऋषभदासजी रांका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठौतिया आदि आचार्यश्री की सेवा में उपस्थित थे और 'जैन विश्व भारती' को बम्बई के आस-पास किसी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुझाव रखा कि सरदारशहर में 'गांधी विद्या-मन्दिर' जैसा विशाल और उत्तम संस्थान है। 'जैन विश्व भारती' उसी के समीप सरदारशहर में ही क्यों न स्थापित की जाये? दोनों संस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुझाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ (सरदारशहर) को बम्बई बुलाया गया। सारी बातें उनके सामने रखी गई और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक बार इसी दृष्टि से 'गांधी विद्या-मन्दिर' संस्थान को देखा जाए। निश्चित तिथि पर पहुंचने के लिए कलकत्ता से श्री गोपीचन्दजी चोपड़ा और मैं तथा दिल्ली से श्रीमती इन्दु जैन, लादूलालजी आच्छा सरदारशहर के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ दिल्ली से हम लोगों के साथ हुए। श्री रांकाजी बम्बई से पहुंचे। सरदारशहर में भावभीना स्वागत हुआ। श्री दूगड़जी ने 'गांधी विद्या-मन्दिर' की प्रबन्ध समिति के सदस्यों को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारशहर 'जैन विश्व-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान लगा। आगे के कदम इसी ओर बढ़े।

आचार्यश्री संतगण व साध्वियों के वृन्द सहित कर्नाटक में नंदी पहाड़ी पर आरोहण कर रहे थे। आचार्यश्री ने बीच में पैर थामे और मुझ से कहा "जैन विश्वभारती के लिए प्रकृति की ऐसी सुन्दर गोद उपयुक्त स्थान है। देखो, कैसा सुन्दर शान्त वातावरण है।"

'जैन विश्व भारती' की योजना को कार्य-रूप में आगे बढ़ाने की दृष्टि से समाज के कुछ और विचारशील व्यक्ति भी नंदी पहाड़ी पर आए थे। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ भी थे। (सरदार-शहर) प्रतिक्रमण के बाद का समय था। पहाड़ी की तलहटी में दीपक और आकाश में तारे जग-मगा रहे थे। आचार्यश्री गिरि-शिखर पर काँच महल में पूर्वाभिमुख होकर विराजित थे। मैं उनके सामने बैठा था। वचनबद्ध हुआ कि यदि 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन लगाऊंगा। उस समय 'जैन विश्व भारती' की जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के एक विभाग के रूप में परिकल्पना की गई थी। महासभा ने स्वीकार किया और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मैं उसका संयोजक चुना गया। सरदारशहर में स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड़ और मैं प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहां महासभा के सभापति श्री हनुमानमलजी बेंगाणी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से साधना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान में होने की बात ठहरी। इस तरह नंदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी मुक्त नहीं किया। आखिर 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से ६६ मील दूर लाडनूं (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो संयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-संशोधन का कार्य सं० २०११ की चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हाथ में लिया। कुछ समय बाद उज्जैन में दर्शन किए। सं० २०१३ में लाडनूं में आचार्यश्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनों बाद सुजानगढ़ में दशवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढंग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्ध हुए। मुनिश्री नथमलजी ने फरमाया—"ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।" आचार्यश्री की वाचना में प्रस्तुत आगम वैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा में कदम आगे बढ़े। पर अन्त में प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन की रूपरेखा इस प्रकार रही—

१. आगम-सुत्त ग्रन्थमाला : मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।

२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला : मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।

३. आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला : आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण।

४. आगम-कथा ग्रन्थमाला : आगमों से सम्बन्धित कथाओं का संकलन और अनुवाद।

५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला : आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रंथमाला में—(१) दसवेआलियं तह उत्तरज्झयणाणि, (२) आयारो तह आयारचूला, (३) निसीहज्झयणं, (४) उववाइयं और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइयं एवं सूयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) का मुद्रण-कार्य तो प्रायः समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नहीं हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला में—(१) दसवेआलियं एवं (२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायांग का मुद्रण-कार्य प्रायः समाप्त हुआ पर प्रकाशित नहीं हो पाया।

तीसरी ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौथी ग्रंथमाला में कोई ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ।

पाँचवीं ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. १) और (२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. २)।

उक्त प्रकाशन-कार्य में सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी) का बहुत बड़ा अनुदान महासभा को रहा। अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी एवं उनके पुत्र पन्नालालजी सरावगी की स्मृति में प्राप्त हुआ था। भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानों में ज्यों-के-त्यों गूंज रहे हैं—"धन देने वाले तो मिल सकते हैं, पर जो इस प्रकाशन-कार्य में जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार हैं, उनकी बराबरी कौन कर सकेगा ?" उन्हीं तथा समाज के अन्य उत्साहवर्धक सदस्यों के स्नेह-प्रदान से कार्य-दीपक जलता रहा।

कार्य के द्वितीय चरण में श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा (विराटनगर) ने अपना उदार हाथ प्रसारित किया।

आचार्यश्री की वाचना में सम्पादित आगमों के संग्रह और मुद्रण का कार्य अब 'जैन विश्व भारती' के अंचल से हो रहा है। प्रथम प्रकाशन के रूप में ११ अंगों को तीन खण्डों में 'अंगसुत्ताणि' के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है :

प्रथम खण्ड में आचार, सूत्रकृत्, स्थान, समवाय—ये प्रथम चार अंग हैं।
दूसरे खण्ड में भगवती—पाँचवाँ अंग है।

तीसरे खण्ड में ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्न-व्याकरण और विपाक—ये ६ अंग हैं।

इस तरह ग्यारह अंगों का तीन खण्डों में प्रकाशन 'आगम-सुत्त ग्रथमाला' की योजना को बहुत आगे बढ़ा देता है।

ठाणांग सानुवाद संस्करण का मुद्रण-कार्य भी द्रुतगति से हो रहा है और वह आगम-अनुसन्धान ग्रंथमाला के तीसरे ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत होगा।

केवल हिन्दी अनुवाद के संस्करण के रूप में 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' का प्रकाशन हुआ है; जो एक नई योजना के रूप में है। इसमें सभी आगमों का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का निर्णय है।

दशवैकालिक एवं उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र को गुटकों के रूप में दिया जा रहा है।

'जैन विश्व भारती' की इस अंग एवं अन्य आगम प्रकाशन योजना को पूर्ण करने में जिन महानुभावों के उदार अनुदान का हाथ रहा है, उन्हें संस्थान की ओर से हार्दिक धन्यवाद है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुद्रण-कार्य में एस० नारायण एण्ड संस प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिंह जी का विनय, श्रद्धा, प्रेम और सौजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए बिना नहीं रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने में श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस सम्बन्ध में श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

इस अवसर पर मैं आदर्श साहित्य संघ के संचालकों तथा कार्यकर्त्ताओं को भी नहीं भूल सकता। उन्होंने प्रारम्भ से ही इस कार्य के लिए सामग्री जुटाने, धारने तथा अन्यान्य व्यवस्थाओं को क्रियान्वित करने में सहयोग दिया है। आदर्श साहित्य संघ के प्रबन्धक श्री कमलेश जी चतुर्वेदी सहयोग में सदा तत्पर रहे हैं, तदर्थ उन्हें धन्यवाद है।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मंत्री श्री सम्पत्तरायजी भूतोड़िया तथा कार्य समिति के अन्यान्य समस्त बन्धुओं को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिनका सतत सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे बल देता रहा।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा से उदार आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है, इसके लिए संस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

सन् १९७३ में मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था में लगा। आचार्यश्री यात्रा में थे। दिल्ली में मुद्रण की व्यवस्था बैठाई गई। कार्यारंभ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था में विलंब होने से कार्य में द्रुतगति नहीं आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे बढ़ा। स्वल्प समय में इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम संपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा संपादक-विवेचक मुनि श्री नथमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा दुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचारी का एक कर्त्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैंने इससे अधिक कुछ और नहीं किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर संस्करण 'जैन विश्व भारती' के प्रारंभिक उपहार के रूप में उस समय जनता के कर-कमलों में आ रहे हैं, जबकि जगत्वंद्य श्रमण भगवान् महावीर की २५००वीं निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६८४, अंसारी रोड़
२१, दरियागंज
दिल्ली-६

श्रीचन्द रामपुरिया
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
जैन विश्व भारती

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादकीय

ग्रन्थ-बोध—

आगम सूत्रों के मौलिक विभाग दो हैं—अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य। अंग-प्रविष्ट सूत्र महावीर के मुख्य शिष्य गणधर द्वारा रचित होने के कारण सर्वाधिक मौलिक और प्रामाणिक माने जाते हैं। उनकी संख्या बारह है—१. आचारांग २. सूत्रकृतांग ३. स्थानांग ४. समवायांग ५. व्याख्याप्रज्ञप्ति ६. ज्ञाताधर्मकथा ७. उपासकदशा ८. अंतकृतदशा ९. अनुत्तरोपपातिकदसा १०. प्रश्नव्याकरण ११. विपाकश्रुत १२. दृष्टिवाद। बारहवां अंग अभी प्राप्त नहीं है। शेष ग्यारह अंग तीन भागों में प्रकाशित हो रहे हैं। प्रथम भाग में चार अंग हैं—१. आचारांग २. सूत्रकृतांग ३. स्थानांग और ४. समवायांग, दूसरे भाग में केवल व्याख्याप्रज्ञप्ति और तीसरे भाग में शेष छह अंग।

प्रस्तुत भाग अंग साहित्य का तीसरा भाग है। इसमें नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं और विवागसुयं—इन ६ अंगों का पाठान्तर सहित मूल पाठ है। प्रारम्भ में संक्षिप्त भूमिका है। विस्तृत भूमिका और शब्द-सूची इसके साथ सम्बद्ध नहीं है। उनके लिए दो स्वतन्त्र भागों की परिकल्पना है। उसके अनुसार चौथे भाग में ग्यारह अंगों की भूमिका और पांचवें भाग में उनकी शब्द-सूची होगी।

प्रस्तुत पाठ और सम्पादन-पद्धति

हम पाठ-संशोधन की स्वीकृत पद्धति के अनुसार किसी एक ही प्रति को मुख्य मानकर नहीं चलते, किन्तु अर्थ-मीमांसा, पूर्वापरप्रसंग, पूर्ववर्ती पाठ और अन्य आगम-सूत्रों के पाठ तथा वृत्तिगत व्याख्या को ध्यान में रखकर मूलपाठ का निर्धारण करते हैं। लेखनकार्य में कुछ त्रुटियां हुई हैं। कुछ त्रुटियां मौलिक सिद्धान्त से सम्बद्ध हैं। वे कब हुई यह निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता। पाठ के संक्षेप या विस्तार करने में हुई हैं, यह संभावना की जा सकती है। 'नायाधम्मकहाओ' १।५।५९ में बारह व्रत और पांच महाव्रतों का उल्लेख है। स्थानांग ४।१३६, उत्तराध्ययन २३।२३-२८ के अनुसार यह पाठ शुद्ध नहीं है। बाईस तीर्थंकरों के युग में चातुर्याम धर्म होता है, पांच महाव्रत और द्वादशव्रत रूप धर्म नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि अगार-विनय और अनगार-विनय का पाठ ओवाइय सूत्र के अगारधर्म और अनगारधर्म के आधार पर पूरा किया गया है। इसलिए जो वर्णन वहां था वह यहां आ गया। हमने इस पाठ की पूर्ति रायपसेणइय सूत्र के आधार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर की है, देखें—नायाधम्मकहाओ पृष्ठ १२२ का सातवां पाद-टिप्पण। इस प्रकार के आलोच्य पाठ नायाधम्मकहाओ १।१२।३६, १।१६।२१, १।१६।४६ में भी मिलता है। प्रश्नव्याकरण सूत्र १०।४ में 'कायवर' पाठ मिलता है। वृत्तिकार ने इसका अर्थ 'काचवर'—प्रधान काच दिया है, किन्तु यह पाठ शुद्ध नहीं है। लिपि-दोष के कारण मूलपाठ विकृत हो गया। निशीथाध्ययनके ग्यारहवें उद्देशक (सूत्र १) में 'कायपायाणिवा और वइरपायाणिवा' दो स्वतन्त्र पाठ हैं। वहां भी पात्र का प्रकरण है और यहां भी पात्र का प्रकरण है। काँचपात्र और वज्रपात्र—दोनों मुनि के लिए निषिद्ध हैं। इस आधार पर यहां भी 'वर' के स्थान पर 'वइर' पाठ का स्वीकार औचित्यपूर्ण है। लिपिकाल में इस प्रकार का वर्ण-विपर्यय अन्यत्र भी हुआ है। 'जात' के स्थान पर 'जाव' तथा 'पचंकमण' के स्थान पर 'एवंकमण' पाठ मिलता है। पाठ-संशोधन में इस प्रकार के अनेक विचित्र पाठ मिलते हैं। उनका निर्धारण विभिन्न स्रोतों से किया जाता है।

प्रतिपरिचय

१. नायाधम्मकहाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटोप्रिंट) मूलपाठ—

यह प्रति जेसलमेर भंडार से प्राप्त है। यह अनुमानतः बारहवीं शताब्दी की है।

ख. नायाधम्मकहाओ (पंचपाठी) मूल पाठ वृत्ति सहित—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। पत्र के चारों ओर हासियों (Margin) में वृत्ति लिखी हुई है। इसके पत्र १८६ तथा पृष्ठ ३७२ हैं। प्रत्येक पत्र १०½ इंच लम्बा तथा ४½ इंच चौड़ा है। पत्र में मूलपाठ की १ से १३ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ३२ से ३८ तक अक्षर हैं। प्रति स्पष्ट और कलात्मक है। बीच में तथा इधर-उधर वापिकाएं हैं। यह अनुमानतः १४-१५ शताब्दी की होनी चाहिए।

प्रति के अंत में टीकाकार द्वारा उद्धृत प्रशस्ति के ११ श्लोक हैं। उनमें अन्तिम श्लोक यह है—

एकादशसु गतेष्वथ विंशत्यधिकेषु विक्रमसमानां।
अणहिलपाटकनगरे भाद्रवद्वितीयां पज्जुसणसिद्धयं ॥१॥

समाप्तेयं ज्ञाताधर्मप्रदेशटीकेति ॥छ॥ ४२५५ ग्रंथाग्रं ॥ वृत्ति। एवं सूत्र वृत्ति ६७५५ ग्रंथाग्रं ॥१॥छ॥

ग. नायाधम्मकहाओ (मूलपाठ)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ११० तथा पृष्ठ २२० हैं। प्रत्येक पत्र १०½ इंच लम्बा तथा ४½ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां हैं और प्रत्येक पंक्ति में ४८ से ५३ तक अक्षर हैं। प्रति जीर्ण-सी है। बीच में बावड़ी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिपि संवत् १५५४ है। अंतिम प्रशस्ति में लिखा है—संवत् १५५४ वर्षे प्रथम श्रावण वदि २ रवौ। श्री श्री श्री शीरोही नगरे। राया राउ श्रीजगमालराज्ये॥ श्रीत पागच्छे गच्छनायकश्रीसुमतिसाधसूरि। तत्पट्टे श्रीहेमविमलसूरिराज्ये। महोपाध्याय श्रीअनंत-हंसगणीनां उपदेशेन॥ साह श्री सूरा लिखापितं॥ जोसी पोपा लिखितं॥ भ्राति उज्जल संजुक्त घीआ लिखापितं॥छ॥छ॥१॥ इसके आगे १२ श्लोक लिखे हुए हैं।

घ. टब्बा

यह प्रति १२वें अध्ययन से आगे काम में ली गई है।

२. उवासगदसाओ—

क. उवासगदसाओ—मूल पाठ (ताडपत्रीय फोटो प्रिंट)—

इसकी पत्र संख्या २० व पृष्ठ ४० है। पत्र क्रमांक संख्या १८२ से २०२ तक है। फोटो प्रिंट पत्र संख्या ६ है व एक पत्र में ८ पृष्ठों का फोटो है। इसकी लम्बाई १४ इंच, चौड़ाई $\frac{3}{4}$ इंच है। प्रत्येक पत्र में ४ से ६ तक पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ४५ के करीब अक्षर हैं।

प्रति के अन्त में 'ग्रन्थ ८१२' इतना ही लिखा हुआ है। संवत् वगैरह नहीं है पर विपाक सूत्र पत्र संख्या २८५ में लिपि संवत् ११८६ है। अतः उसके आधार पर यह ११८६ से पहले की ही मालूम पड़ती है।

ख. उवासगदसाओ—टब्बेयुक्त पाठ (हस्तलिखित)—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर की है। इसके पत्र ३६ तथा पृष्ठ ७२ हैं। प्रत्येक पत्र में पाठ की आठ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में करीब ५२ अक्षर हैं। पाठ के नीचे राजस्थानी में अर्थ लिखा हुआ है। प्रत्येक पृष्ठ १० इंच लम्बा व ४$\frac{1}{2}$ इंच चौड़ा है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्न प्रशस्ति है—

संवत् १७७८ वर्षे मिति माघमासे कृष्णपक्षे पंचमीतिथौ बुधवारे मुनिना सिवेना-लेखि स्ववाचनाय श्रीमत्फतेपुरमध्ये श्रीरस्तु कल्याणमस्तु लेखकपाठकयोः श्रीः।

३. अंतगडदसाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट)। पत्र संख्या २०३ से २२२ तक। विपाक सूत्र के अंत में (पत्र संख्या २८५ में) लिपि संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ है। अतः क्रमानुसार पत्रों से यह प्रति भी ११८६ से पहले की होनी चाहिए।

ख. हस्तलिखित—गधैया पुस्तकालय, सरदाशहर से प्राप्त तीन सूत्रों की संयुक्त प्रति (उवासगदशा, अंतगड, अणुत्तरोववाइय) परिचय—देखें अणुत्तरोववाइय 'ख' प्रति—लेखन संवत् १४९५ है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग. हस्तलिखित—गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त ।

यह प्रति पंचपाठी है। इसके पत्र २६ तथा पृष्ठ ५२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में १३ पंक्तिया तथा प्रत्येक पंक्ति में ४२ से ४५ तक अक्षर हैं। प्रति की लम्बाई १०½ इंच तथा चौड़ाई ४½ इंच है। अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं। प्रति 'तकार' प्रधान तथा अपठित होने के कारण कहीं-कहीं अशुद्धियां भी हैं। प्रति के अंत में लेखन संवत् नहीं है। केवल इतना लिखा है—॥छ॥ ग्रंथाग्रं ८९० ॥०॥ ॥०॥ पुण्यत्नसूरीणा ॥

•

घ. यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त है। इसके पत्र २० हैं। प्रत्येक पत्र में पाठ की पांच पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति के बीच में टब्बा लिखा हुआ है। प्रति सुन्दर लिखी हुई है। पत्र की लम्बाई १० इंच व चो० ४½ इंच है। प्रति के अंत में तीन दोहे लिखे हुए हैं।

थली हमारौ देश है, रिणी हमारो ग्राम।
गोत्र वंश है माहातमा, गणेश हमारो नाम ॥१॥

गणेश हमारा है पिता, मैं सुत मुन्नीलाल।
बड़ो गच्छ है खरत्तरो, उजियागर पोसाल ॥२॥

बीकानेर वस्मान है, राजपुतानां नाम।
जंगलधर बादस्या, गंगासिंहजी नाम ॥३॥
श्रीरस्तु ॥छ॥ कल्याणमस्तु ॥छ॥

•

४. अणुत्तरोववाइयदसाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट)। पत्र संख्या २२३ से २२८ तक। विपाक सूत्र पत्र संख्या २८५ में लिपि संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ है। अतः क्रमानुसार यह प्रति ११८६ से पहले की है।

•

ख. गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त तीन सूत्रों की (उपासकदशा, अन्तकृत और अनुत्तरोपपातिक) संयुक्त प्रति है। इसके पत्र १५ तथा पृष्ठ ३० हैं। प्रत्येक पत्र १३½ इंच लम्बा तथा ५½ इंच करीब चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में २३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में करीब ८२ अक्षर हैं। प्रति पठित तथा स्पष्ट लिखी हुई है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है। उसके अनुसार यह प्रति १४९५ की लिखी हुई है :—

ऊकेशवंशो जयति प्रशंसापदं सुपर्वा बलिदत्तशोभः।
डागाभिधा तत्र समस्ति शाखा पात्रावली वारितलोकतापा ॥१॥

मुक्ताफलतुलां बिभ्रत् सद्वृत्तः सुगुणास्पदं।
तस्यां श्रीशालभद्राख्यः सम्यग्रुचिरजायत ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तदन्वयस्याभरणं बभूव वांगाभिधानः सुविशुद्धबुद्धिः ।
विवेकसत्संगतिलोचनाभ्यां दृष्ट्वा सुमार्गं य उरीचकार ॥३॥
तदंगजन्माजनि वाहडाख्यः सद्धर्मकर्मार्जनबद्धकक्षः ।
वक्षो यदीयं गुरुदेवभक्तिरलंचकाराब्जमिवालिराजी ॥४॥
क्रमेण तद्वंशविशालकेतुः कर्माविधः श्रावकपुंगवोभूत् ।
चित्रं कलावानपि यः प्रकामं बुधप्रमोदार्पणहेतुरुच्चैः ॥५॥
तदंगभूरभूत्साधु महणो द्रुहिणोपमः ।
राजहंसगतिः शश्वच्चतुराननतां दधत् ॥६॥
तस्यार्हदंह्रियुगलाब्जमधुव्रतस्य यात्रादिभूरिसुकृतोच्चयकारकस्य ।
आसीदसामयशसः किल माल्हणाद्या देविप्रिया प्रणयिनी गिरिजेव शंभोः ॥७॥
तत्कुक्षिप्रभवाबभुवुरभितोप्युद्योतयंतः कुलं,
चत्वारस्तनया नयार्जितधना नाम्यर्थना भीरवः ।
आद्यस्तत्र कुमारपाल इति विख्यातः परो वर्द्धन-
स्तार्त्तीयस्त्रिभुवाभिधस्तदपरो गेलाह्वयोमा भुवि ॥८॥
चत्वारोपि व्यधुरचरितां मर्त्यधात्रीरुहस्ते,
स्वौदार्येणातनुधनभृतो बांधवा धर्मकर्म ।
अन्योन्यं स्पर्द्धयेव प्रतिदिनमनयास्तेषु गेलाख्य भार्या,
गंगा देवीति गंगावदमलहृदयास्तीह जैनांह्रिलीना ॥९॥
तत्कुक्षिभूः श्रावक ऊदराज, आद्यो द्वितीयः किल बूट नामा ।
द्वावप्यभूतां गुरुदेवभक्तौ मंदोदरी नाम सुता तथास्ति ॥१०॥
ऊदाख्यस्य सभीरीति माऊ बूटस्य च प्रिया ।
आसधरो मंडनश्व तयो पुत्रौ यथाक्रमम् ॥११॥
अमुना परिवारेण, सारेण सहिता शुभा ।
गंगादेवी गुरोर्वक्त्रादुपदेशामृतं पपौ ॥१२॥
आबाल्याद्धर्मकर्माणि तत्वान्यसौ निरंतरं ।
एकादशांगसूत्राणि लेखयामास हर्षतः ॥१३॥
विजयिनि खरतरगच्छे जिनभद्रसूरिसाम्राज्ये ।
गुण[३] निधि[९] 'वार्द्धींदु[१४]' मिते विक्रमभूपाद् व्रजति वर्षे ॥१४॥
गंगादेवी सुतोपेता, लेखयित्वांगपुस्तकं ।
दत्तेस्म श्रीतपोरत्नोपाध्यायेभ्यः प्रमोदतः ॥१५॥
॥छ॥ श्रीः ॥

ग. हस्तलिखित प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त । इसके पत्र ९ तथा पृष्ठ १८ हैं । प्रत्येक पत्र में ११ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ३५ से ४० तक अक्षर हैं । प्रति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की लम्बाई १०½ इंच तथा चौड़ाई ४½ इंच है। अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं। प्रति शुद्ध तथा 'त' प्रधान है। अंत में लेखन-संवत् तथा लिपिकर्ता का नाम नहीं है केवल निम्नोक्त वाक्य हैं--

।।छ।। अणुत्तरोववाइयदशांगं नवमं अंगं समत्तं छ।। श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः छ छः प्रति का अनुमानित समय १६०० है।

५. पण्हावागरणाइं--

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मूलपाठ--

पत्र संख्या २२८ से २५६

ख. पंचपाठी। हस्तलिखित अनुमानित संवत् १२वीं सदी का उत्तरार्ध।

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ६८ हैं। प्रत्येक पत्र १०×४½ इंच है। मूलपाठ की पंक्तियां १ से १२ तथा पंक्ति में लगभग २३ से ३५ अक्षर हैं। चारों ओर वृत्ति तथा बीच में बावड़ी है। अन्तिम प्रशस्ति की जगह-- ग्रंथाग्र १२५० शुभं भवतु कल्याणमस्तु ।। लिखा है। लेखन कर्ता तथा लिपि-संवत् का उल्लेख नहीं है किन्तु अनुमानतः यह प्रति १३वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

ग. त्रिपाठी (हस्तलिखित)--

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। इसके पत्र १११ हैं। प्रत्येक पत्र १०×४½ इंच है। मूल पाठ की पंक्तियां १ से ८ तथा प्रत्येक पंक्ति में ३६ से ४६ तक लगभग अक्षर हैं। ऊपर नीचे दोनों तरफ वृत्ति तथा बीच में कलात्मक बावड़ी है। प्रति के उत्तरार्ध के बीच बीच के कई पन्ने लुप्त हैं। अंत में सिर्फ ग्रंथाग्र १२५० ।छ।। श्री ।। छ।।०।। लिखा है। लिपि संवत् अनुमानतः १६वीं शताब्दी होना चाहिए।

घ. मूलपाठ (सचित्र)--

पूनमचंद दुधोड़िया, छापर द्वारा प्राप्त। इसके पत्र २७ हैं। प्रत्येक पत्र १२×५ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५१ से ६० तक अक्षर हैं। बीच में बावड़ी है तथा प्रथम दो पत्रों में सुनहरी कार्य किए हुए भगवान् महावीर और गौतम स्वामी के चित्र हैं। लेखन संवत् नहीं है पर यह प्रति अनुमानतः १५७० के लगभग की होनी चाहिए। अशुद्धि बहुल है।

च. मूलपाठ तथा टब्बा की प्रति--

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। पत्र संख्या ८३।

चव. यह प्रति वर्तमान में जैन विश्व भारती, लाडनूं में है। इसके पत्र १०३ तथा पृष्ठ २०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है। बालावबोध पंचपाठी। पंक्तियां नीचे में १ ऊपर में ११ तक हैं। अक्षर २८ से ३५ तक हैं। लेखन संवत् १६६७। लेखक सुदर्शन। प्रति काफी शुद्ध है।

६. विवागसुयं—

क. मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त (ताडपत्रीय फोटो प्रिंट) २६० से २८५ तक। (मूलपाठ) पंक्तियां ५ से ६ तक। कुछ पंक्तियां अधूरी तथा कुछ अस्पष्ट हैं। प्रति प्रायः शुद्ध है। लेखन संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ सोमवार। पुष्पिका काफी लम्बी है पर अस्पष्ट है। प्रति की लम्बाई १४ इंच तथा चौड़ाई १½ इंच है और तीन कोष्ठकों में लिखी हुई है।

ख. मूलपाठ—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ३२ तथा पृष्ठ ६४ हैं। पत्रों की लम्बाई १०½ तथा चौड़ाई ४½ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४५ तक अक्षर हैं। कहीं-कहीं भाषा का अर्थ लिखा हुआ है। प्रति प्रायः शुद्ध है। अन्तिम प्रशस्ति में लिखा है:—

शुभं भवतु लेखकपाठकयोः ॥ संवत् १६३३ वर्षे आसो वदि ८ रवि लिखितं ।छ॥ : ।

ग. मूलपाठ—

यह प्रति हनूतमलजी मांगीलालजी बेंगानी बीदासर से प्राप्त हुई। इसके पत्र ३५ तथा पृष्ठ ७० हैं। प्रत्येक पत्र ११½ इंच लम्बा तथा ४½ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १२ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४५ से ४६ तक अक्षर हैं। प्रति अशुद्धि बहुल है। अन्तिम प्रशस्ति में—

एक्कारसयं अंगं समत्तं ॥ ग्रंथाग्र १२१६ ॥ टीका ६०० एतस्या ॥ लिपि संवत् नहीं है, पर पत्रों की जीर्णता तथा अक्षरों की लिखावट से यह प्रति करीब ४०० वर्ष पुरानी होनी चाहिए।

वृ. एम० सी मोदी तथा वी० जी० चोकसी द्वारा सम्पादित तथा गुर्जरग्रंथरत्न कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण १६३५, 'विवागसुयं'।

सहयोगानुभूति

जैन-परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएं हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, तटस्थ-दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्यश्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊं, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत पाठ के सम्पादन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी का पर्याप्त योग रहा है। मुनि बालचन्द्रजी, इस कार्य में क्वचित् संलग्न रहे हैं। प्रति-शोधन में मुनि दुलहराजजी का पूर्ण योग मिला है। इसका ग्रंथ-परिमाण मुनि मोहनलाल (आमेट) ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योगका मूल्यांकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगमविद् और आगम-संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्दजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबन्ध-सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया प्रारम्भ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए वे कृत-संकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। 'अंगसुत्ताणि' के इस प्रकाशन में इन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

'जैन विश्व-भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्द जी सेठिया, 'जैन विश्व-भारती' तथा 'आदर्श साहित्य संघ' के कार्यकर्त्ताओं ने पाठ-सम्पादन में प्रयुक्त सामग्री के संयोजन में बड़ी तत्परता से कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्त्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सब का पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

अणुव्रत विहार
नई दिल्ली
२५०० वां निर्वाण दिवस।

मुनि नथमल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूमिका

नायाधम्मकहाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का छठा अंग है। इसके दो श्रुतस्कन्ध हैं। प्रथम श्रुतस्कन्ध का नाम 'नाया' और दूसरे श्रुतस्कन्ध का नाम 'धम्मकहाओ' है। दोनों श्रुतस्कन्धों का एकीकरण करने पर प्रस्तुत आगम का नाम 'नायाधम्मकहाओ' बनता है। 'नाया' (ज्ञात) का अर्थ उदाहरण और 'धम्मकहाओ' का अर्थ धर्म-आख्यायिका है। प्रस्तुत आगम में चरित और कल्पित—दोनों प्रकार के दृष्टान्त और कथाएं हैं।[1]

जयधवला में प्रस्तुत आगम का नाम 'नाहधम्मकहा' (नाथधर्मकथा) मिलता है। नाथ का अर्थ है स्वामी। नाथधर्मकथा अर्थात् तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित धर्मकथा। कुछ संस्कृत ग्रन्थों में प्रस्तुत आगम का नाम 'ज्ञातृधर्मकथा' उपलब्ध होता है। आचार्य अकलंक ने प्रस्तुत आगम का नाम 'ज्ञातृधर्मकथा' बतलाया है।[2] आचार्य मलयगिरि और अभयदेवसूरि ने उदाहरण-प्रधान धर्मकथा को ज्ञाताधर्मकथा कहा है। उनके अनुसार प्रथम अध्ययन में 'ज्ञात' और दूसरे अध्ययन में 'धर्म-कथाएं' है। दोनों ने ही ज्ञात पद के दीर्घीकरण का उल्लेख किया है।[3]

श्वेताम्बर साहित्य में भगवान् महावीर के वंश का नाम 'ज्ञात' और दिगम्बर साहित्य में 'नाथ' बतलाया गया है। इस आधार पर कुछ विद्वानों ने प्रस्तुत आगम के नाम के साथ भगवान् महावीर का सम्बन्ध जोड़ने का प्रयत्न किया है। उनके अनुसार 'ज्ञातृधर्मकथा' या 'नाथधर्मकथा'

---

१. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सूत्र ९४।

२. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७२ : ज्ञातृधर्मकथा।

३. (क) नंदीवृत्ति, पत्र २३०,३१ : ज्ञातानि—उदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथाः, अथवा ज्ञातानि—ज्ञाताध्ययनानि प्रथमश्रुतस्कन्धे, धर्मकथा द्वितीयश्रुतस्कन्धे यासु ग्रन्थपद्धतिषु (ता) ज्ञाताधर्मकथाः पृषोदरादित्वात्पूर्वपदस्य दीर्घान्तता।

(ख) समवायांगवृत्ति, पत्र १०८ : ज्ञातानि—उदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा, दीर्घत्वं संज्ञात्वाद् अथवा प्रथमश्रुतस्कंधो ज्ञाताभिधायकत्वात् ज्ञातानि, द्वितीयस्तु तथैव धर्मकथाः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का अर्थ है--भगवान् महावीर की धर्मकथा[1]। वेबर के अनुसार जिस ग्रंथ में ज्ञातृवंशी महावीर के लिए कथाएं हों उसका नाम 'नायाधम्मकहा' है[2]। किन्तु समवायांग और नंदी में जो अंगों का विवरण प्राप्त है उसके आधार पर 'नायाधम्मकहा' का 'ज्ञातृवंशी महावीर की धर्मकथा'--यह अर्थ संगत नहीं लगता। वहां बतलाया गया है कि ज्ञाताधर्मकथा में ज्ञातों (उदाहरणभूत व्यक्तियों) के नगर, उद्यान आदि का निरूपण किया गया है[3]। प्रस्तुत आगम के प्रथम अध्ययन का नाम भी 'उक्खित्तणाए' (उत्क्षिप्त ज्ञात) है। इसके आधार पर 'नाय' शब्द का अर्थ 'उदाहरण' ही संगत प्रतीत होता है।

विषय-वस्तु--

प्रस्तुत आगम के दृष्टान्तों और कथाओं के माध्यम से अहिंसा, अस्वाद, श्रद्धा, इन्द्रिय-विजय आदि आध्यात्मिक तत्त्वों का अत्यन्त सरस शैली में निरूपण किया गया है। कथावस्तु के साथ वर्णन की विशेषता भी है। प्रथम अध्ययन को पढ़ते समय कादम्बरी जैसे गद्य काव्यों की स्मृति हो आती है। नवें अध्ययन में समुद्र में डूबती हुई नौका का वर्णन बहुत सजीव और रोमांचक है। बारहवें अध्ययन में कलुषित जल को निर्मल बनाने की पद्धति वर्तमान जल-शोधन की पद्धति की याद दिलाती है। इस पद्धति के द्वारा पुद्गल द्रव्य की परिवर्तनशीलता का प्रतिपादन किया गया है।

मुख्य उदाहरणों और कथाओं के साथ कुछ अवान्तर कथाएं भी उपलब्ध होती हैं। आठवें अध्ययन में कूप-मंडूक की कथा बहुत ही सरस शैली में उल्लिखित है। परिव्राजिका चोखा जितशत्रु के पास जाती है। जितशत्रु उसे पूछता है--'तुम बहुत घूमती हो, क्या तुमने मेरे जैसा अन्तःपुर कहीं देखा है?' चोखा ने मुस्कान भरते हुए कहा--'तुम कूप-मंडूप जैसे हो।'

'वह कूप-मंडूप कौन है?' जितशत्रु ने पूछा।

चोखा ने कहा--'कूएं में एक मेंढक था। वह वहीं जन्मा, वहीं बड़ा। उसने कोई दूसरा कूप, तालाब और जलाशय नहीं देखा। वह अपने कूप को ही सब कुछ मानता था। एक दिन एक समुद्री मेंढक उस कूप में आ गया। कूप-मंडूक ने कहा--तुम कौन हो? कहां से आए हो? उसने कहा--मैं समुद्र का मेंढक हूँ, वहीं से आया हूँ। कूप-मंडूक ने पूछा--वह समुद्र कितना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा--वह बहुत बड़ा है। कूप-मंडूक ने अपने पैर से रेखा खींचकर कहा--क्या समुद्र इतना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा--इससे बहुत बड़ा है। कूप-मंडूक ने कूप के पूर्वी तट से पश्चिमी तट तक फुदक कर कहा--क्या समुद्र इतना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा--इससे भी बहुत बड़ा है। कूप-मंडूक इस पर विश्वास नहीं कर सका। इसने कूप के सिवाय कुछ देखा ही नहीं था[4]।

इस प्रकार नाना कथाओं, अवान्तर-कथाओं, वर्णनों, प्रसंगों और शब्द-प्रयोगों की दृष्टि से प्रस्तुत आगम बहुत महत्वपूर्ण है। इसका विश्व के विभिन्न कथा-ग्रन्थों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर कुछ नए तथ्य उपलब्ध हो सकते हैं।

---

१. जैन साहित्य का इतिहास, पूर्व-पीठिका, पत्र ६६०।
२. Stories From the Dharma of NAYA इं० एं० जि० १६, पृष्ठ ६६।
३. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सूत्र ६४।
   (ख) नंदी, सूत्र ८५।
४. नायाधम्मकहाओ ८।१५४, पृ० १७६,१८७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवासगदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का सातवां अंग है। इसमें दस उपासकों का जीवन वर्णित है इसलिए इसका नाम 'उवासगदसाओ' है। श्रमण-परम्परा में श्रमणों की उपासना करने वाले गृहस्थों को श्रमणोपासक या उपासक कहा गया है। भगवान महावीर के अनेक उपासक थे। उनमें से दस मुख्य उपासकों का वर्णन करने वाले दस अध्ययन इसमें संकलित हैं।

विषय-वस्तु—

भगवान् महावीर ने मुनि-धर्म और उपासक धर्म—इस द्विविध धर्म का उपदेश दिया था। मुनि के लिए पांच महाव्रतों का विधान किया और उपासक के लिए बारह व्रतों का। प्रथम अध्ययन में उन बारह व्रतों का विशद वर्णन मिलता है। श्रमणोपासक आनन्द भगवान् महावीर के पास उनकी दीक्षा लेता है। व्रतों की यह सूची धार्मिक या नैतिक जीवन की प्रशस्त आचार-संहिता है। इसकी आज भी उतनी ही उपयोगिता है जितनी ढाई हजार वर्ष पहले थी। मनुष्य स्वभाव की दुर्बलता जब तक बनी रहेगी तब तक उसकी उपयोगिता समाप्त नहीं होगी।

मुनि का आचार-धर्म अनेक आगमों में मिलता है, किन्तु गृहस्थ का आचार-धर्म मुख्यतः इसी आगम में मिलता है। इसलिए आचार-शास्त्र में इसका मुख्य स्थान है। इसकी रचना का मुख्य प्रयोजन ही गृहस्थ के आचार का वर्णन करना है। प्रसंगवश इसमें नियतिवाद के पक्ष-विपक्ष की सुन्दर चर्चा हुई है। उपासकों की धार्मिक कसौटी की घटनाएं भी मिलती हैं। भगवान महावीर उपासकों की साधना का कितना ध्यान रखते थे और उन्हें समय-समय पर कैसे प्रोत्साहित करते थे यह भी जानने को मिलता है।

जयधवला के अनुसार प्रस्तुत आगम उपासकों के ग्यारह प्रकार के धर्म का वर्णन करता है। उपासक-धर्म के ग्यारह अंग ये हैं—दर्शन, व्रत, सामायिक, पौषधोपवास, सचित्तविरति, रात्रि-भोजन विरति, ब्रह्मचर्य, आरंभविरति, अनुमति विरति और उद्दिष्ट विरति[1]। आनन्द आदि श्रावकों ने उक्त ग्यारह प्रतिमाओं का आचरण किया था। व्रतों की आराधना स्वतन्त्र रूप में भी की जाती है और प्रतिमाओं के पालन के समय भी की जाती है। व्रत और प्रतिमा—ये दो पद्धतियां हैं। समवायांग और नन्दी सूत्र में व्रत और प्रतिमा दोनों का उल्लेख है। जयधवला में केवल प्रतिमाओं का उल्लेख है।

---

१. कसायपाहुड भाग १, पृष्ठ १२६, १३०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतगडदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का आठवां अंग है। इसमें जन्म-मरण की परम्परा का अंत करने वाले व्यक्तियों का वर्णन है, तथा इसके दस अध्ययन हैं इसलिए इसका नाम 'अंतगडदसाओ' है। समवायांग में इसके दस अध्ययन और सात वर्ग बतलाए गए हैं[1]। नंदी सूत्र में इसके अध्ययनों का कोई उल्लेख नहीं है, केवल आठ वर्गों का उल्लेख है[2]। अभयदेवसूरि ने दोनों में सामञ्जस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने लिखा है कि प्रथम वर्ग में दस अध्ययन हैं इस अपेक्षा से समवायांग सूत्र में दस अध्ययन और अन्य वर्गों की अपेक्षा से सात वर्ग बतलाए गए हैं। नन्दी सूत्र में अध्ययनों का उल्लेख किए बिना केवल आठ वर्ग बतलाए गए हैं[3]। किन्तु इस सामञ्जस्य का अंत तक निर्वाह हो नहीं सकता, क्योंकि समवायांग में प्रस्तुत आगम के शिक्षा-काल (उद्देशन-काल) दस बतलाए गए हैं। नंदीसूत्र में उनकी संख्या आठ है। अभयदेवसूरि ने लिखा है कि उद्देशनकालों के अन्तर का आशय हमें ज्ञात नहीं[4]। नंदीसूत्र के चूर्णिकार श्री जिनदास महत्तर और वृत्तिकार श्री हरिभद्रसूरि ने भी यह लिखा है कि प्रथम वर्ग में दस अध्ययन होने के कारण प्रस्तुत आगम का नाम 'अंतगडदसाओ' है[5]। चूर्णिकार ने दसा का अर्थ अवस्था भी किया है[6]।

प्रस्तुत आगम का वर्णन करने वाली तीन परम्पराएं हैं—एक समवायांग की, दूसरी तत्त्वार्थवार्तिक आदि की और तीसरी नंदी की।

प्रथम परम्परा के अनुसार प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन हैं। इसकी पुष्टि स्थानांग सूत्र से होती है। स्थानांग में प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन और उनके नाम निर्दिष्ट हैं, जैसे—नमि, मातंग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, जमाली, भगाली, किंकष, चिल्वक और फाल अंबडपुत्र[7]। तत्त्वार्थवार्तिक में कुछ पाठ-भेद के साथ ये दस नाम मिलते हैं, जैसे—नमि, मातंग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, यमलीक, वलीक, कंबल, पाल और अंबष्ठपुत्र[8]। समवायांग में दस अध्ययनों का उल्लेख है, किन्तु उनके नाम निर्दिष्ट नहीं हैं। तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार प्रस्तुत आगम में प्रत्येक

---

१. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सूत्र ९६ :.....दस अज्झयणा सत्त वग्गा।

२. नंदी, सूत्र ८८.....अट्ठ वग्गा।

३. समवायांगवृत्ति, पत्र ११२ : दस अज्झयण त्ति प्रथमवर्गापेक्षयैव घटन्ते, नन्द्यां तथैव व्याख्यातत्वात्, यच्चेह पठ्यते 'सत्त वग्ग' त्ति तत् प्रथमवर्गादन्यवर्गापेक्षया, यतोऽभ्यष्ट वर्गाः, नन्द्यामपि तथा पठितत्वात्।

४. समवायांगवृत्ति, पत्र ११२ : ततो भणितं—अट्ठ उद्देसणकाला इत्यादि, इह च दश उद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः।

५. (क) नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ : पढमवग्गे दस अज्झयण त्ति तस्सक्खतो अंतकडदस त्ति।
(ख) नन्दीसूत्र, वृत्तिसहित पृ० ८३ : प्रथमवर्गे दशाध्ययनानि इति तत्सङ्ख्यया अन्तकृद्दशा इति।

६. नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ : दस त्ति—अवत्था।

७. ठाणं, १०।११३।

८. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीर्थंकर के समय में होने वाले दस-दस अंतकृत केवलियों का वर्णन है[1]। जयधवला में भी तत्त्वार्थ-वार्तिक के वर्णन का समर्थन मिलता है[2]। नंदी सूत्र में दस अध्ययनों का उल्लेख और नाम निर्देश दोनों नहीं हैं। इस आधार पर अनुमान किया जा सकता है कि समवायांग और तत्त्वार्थवार्तिक में प्राचीन परम्परा सुरक्षित है और नंदी सूत्र में प्रस्तुत आगम के वर्तमान स्वरूप का वर्णन है। वर्तमान में उपलब्ध आठ वर्गों में प्रथम वर्ग के दस अध्ययन हैं, किन्तु इनके नाम उक्त नामों से सर्वथा भिन्न हैं, जैसे—गौतमसमुद्र, सागर, गम्भीर, स्तिमित, अचल, कांपिल्य, अक्षोभ, प्रसेनजित, और विष्णु। अभयदेवसूरि ने स्थानांग वृत्ति में इसे वाचनान्तर माना है[3]। इससे स्पष्ट होता है कि नंदी में जिस वाचना का वर्णन है वह समवायांग में वर्णित वाचना से भिन्न है।

'अंतगड' शब्द के दो संस्कृत रूप प्राप्त होते हैं—अंतकृत और अंतकृत्। अर्थ की दृष्टि से दोनों में कोई अन्तर नहीं है, किन्तु 'गड' का 'कृत' रूप छाया की दृष्टि से अधिक उपयुक्त है।

विषय-वस्तु—

वासुदेव कृष्ण और उनके परिवार के सम्बन्ध में इस आगम में विशद जानकारी मिलती है। वासुदेवकृष्ण के छोटे भाई गजसुकुमाल की दीक्षा और उनकी साधना का वर्णन बहुत ही रोमांच-कारी है।

छठे वर्ग में अर्जुनमालाकार की घटना उल्लिखित है। एक आकस्मिक घटना ने उसे हत्यारा बना दिया और एक प्रसंग ने उसे साधु बना दिया। परिस्थिति और वातावरण से मनुष्य बनता-बिगड़ता है—इसे स्वीकार न करें फिर भी यह स्वीकार किया जा सकता है कि मनुष्य के बनने-बिगड़ने में वे निमित्त बनते हैं।

अतिमुक्तक मुनि के अध्ययन में आन्तरिक साधना का महत्व समझा जा सकता है। समग्र आगम में तपस्या ही तपस्या दृष्टिगोचर होती है। ध्यान के उल्लेख नगण्य हैं। भगवान् महावीर ने उपवास और ध्यान—दोनों को स्थान दिया था। तपस्या के वर्गीकरण में उपवास बाह्य तप और ध्यान आन्तरिक तप है। भगवान् महावीर ने अपने साधना-काल में उपवास और ध्यान—दोनों का प्रयोग किया था। यह अनुसन्धेय है कि प्रस्तुत आगम में केवल उपवास पर ही इतना बल क्यों दिया गया? विस्मृति और नव-निर्माण की शृंखला में बचा हुआ प्रस्तुत आगम अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण और अनुसन्धेय है।

———

१. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३ :·····इत्येते दश वर्धमानतीर्थङ्करतीर्थे। एवमृषभादीनां त्रयोविंशतेस्तीर्थेष्वन्येऽन्ये च दश दशानगारा दश दश दारुणानुपसर्गान्निर्जित्य कृत्स्नकर्मक्षयादन्तकृतः दश अस्यां वर्ण्यन्ते इति अन्तकृद्दशा।

२. कसायपाहुड भाग १ पृ० १३० : अंतयडदसा णाम अंगं चउव्विहोवसग्गं दारुणे सहिऊण पाडिहेरं लद्धूण णिव्वाणं गदे सुदंसणादि-दस-दस-साहू तित्थं पडि वण्णेदि।

३. स्थानांगवृत्ति पत्र ४८३·····ततो वाचनान्तरापेक्षाणीमानीति सम्भावयामः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुत्तरोववाइयदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का नवां अंग है। इसमें अनुत्तर नामक स्वर्ग-समूह में उत्पन्न होने वाले मुनियों से सम्बन्धित दस अध्ययन हैं, इसलिए इसका नाम 'अणुत्तरोववाइयदसाओ' है। नंदी सूत्र में केवल तीन वर्गों का उल्लेख है[1]। स्थानांग में केवल दस अध्ययनों का उल्लेख है[2]। राजवार्तिक के अनुसार इसमें प्रत्येक तीर्थंकर के समय में होने वाले दस-दस अनुत्तरोपपातिक मुनियों का वर्णन है[3]। समवायांग में दस अध्ययन और तीन वर्ग—दोनों का उल्लेख है[4]। उसमें दस अध्ययनों के नाम उल्लिखित नहीं हैं। स्थानांग और तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार उनके नाम इस प्रकार हैं।

(१) स्थानांग के अनुसार—

ऋषिदास, धन्य, सुनक्षत्र, कार्त्तिक, स्वस्थान, शालिभद्र, आनंद, तेतली, दशार्णभद्र और अतिमुक्त[5]।

(२) राजवार्तिक के अनुसार—

ऋषिदास, धान्य, सुनक्षत्र, कार्त्तिक, नन्द, नन्दन, शालिभद्र, अभय, वारिषेण और चिलातपुत्र[6]।

उक्त दस मुनि भगवान् महावीर के शासन में हुए थे—यह तत्त्वार्थवार्तिककार का मत है। धवला में कार्तिक के स्थान पर कार्तिकेय और नंद के स्थान पर आनंद मिलता है[7]।

प्रस्तुत आगम का जो स्वरूप उपलब्ध है वह स्थानांग और समवायांग की वाचना से भिन्न है। अभयदेवसूरि ने इसे वाचनान्तर बतलाया है[8]। उपलब्ध वाचना के तृतीय वर्ग में धन्य,

१. नंदी, सूत्र ८९ :.....तिण्णि वग्गा।

२. ठाणं १०।११४

३. (क) तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३।

.....इत्येते दश वर्धमानतीर्थकरतीर्थे। एवमृषभादीनां त्रयोविंशतेस्तीर्थेष्वन्येऽन्ये च दश दशानगारा दश दश दारुणानुपसर्गान्निर्जित्य विजयाद्यनुत्तरेषूत्पन्ना इत्येवमनुत्तरौपपादिकाः दशास्यां वर्ण्यन्त इत्यनुत्तरौपपादिकदशा।

(ख) कसायपाहुड भाग १, पृ० १३०।

अणुत्तरोववादियदसा णाम अंगं चउव्विहोवसग्गे दारुणे सहियूण चउवीसण्हं तित्थयराणं तित्थेसु अणुत्तरविमाणं गदे दस दस मुणिवसहे वण्णेदि।

४. समवाओ, पइण्णगसमवाओ ९७।

.....दस अज्झयणा तिण्णि वग्गा.....।

५. ठाणं १०।११४।

६. तत्त्वार्थवार्तिक १।२० पृ० ७३।

७. षट्खण्डागम १।१।२।

८. स्थानांगवृत्ति पत्र ४८३ :

तदेवमिहापि वाचनान्तरापेक्षयाऽध्ययनविभाग उक्तो न पुनरुपलभ्यमानवाचनापेक्षयेति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुनक्षत्र और ऋषिदास—ये तीन अध्ययन प्राप्त हैं। प्रथम वर्ग में वारिषेण और अभय—ये दो अध्ययन प्राप्त हैं, अन्य अध्ययन प्राप्त नहीं हैं।

विषय-वस्तु—

प्रस्तुत आगम में अनेक राजकुमारों तथा अन्य व्यक्तियों के वैभवपूर्ण और तपोमय जीवन का सुन्दर वर्णन है। धन्य अनगार के तपोमय जीवन और तप से कृश बने हुए शरीर का जो वर्णन है वह साहित्य और तप दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

पण्हावागरणाइं

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का दसवां अंग है। समवायांग सूत्र और नंदी में इसका नाम 'पण्हावागरणाइं' मिलता है[1]। स्थानांग में इसका नाम 'पण्हावागरणदसाओ' है[2]। समवायांग में 'पण्हावागरणदसासु'—यह पाठ भी उपलब्ध है। इससे जाना जाता है कि समवायांग के अनुसार स्थानांग-निर्दिष्ट नाम भी सम्मत है। जयधवला में 'पण्हवायरणं' और तत्त्वार्थवार्तिक में 'प्रश्नव्याकरणम्' नाम मिलता है[3]।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के विषय-वस्तु के बारे में विभिन्न मत प्राप्त होते हैं। स्थानांग में इसके दस अध्ययन बतलाए गए हैं—उपमा, संख्या, ऋषि-भाषित, आचार्य-भाषित, महावीर-भाषित, क्षौमक प्रश्न, कोमल प्रश्न, आदर्श प्रश्न, अंगुष्ठ प्रश्न और बाहु प्रश्न[4]। इनमें वर्णित विषय का संकेत अध्ययन के नामों से मिलता है।

समवायांग और नंदी के अनुसार प्रस्तुत आगम में नाना प्रकार के प्रश्नों, विद्याओं और दिव्य-संवादों का वर्णन है[5]। नंदी मे इसके पैंतालिस अध्ययनों का उल्लेख है। स्थानांग से उसकी

---

१. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ सूत्र ९८।
   (ख) नंदी, सूत्र ९०।

२. ठाणं १०।११०।

३. (क) कसायपाहुड, भाग १ पृष्ठ १३१ : पण्हवायरणं णाम अंगं···।
   (ख) तत्त्वार्थवार्तिक १।२० : ···प्रश्नव्याकरणम्।

४. ठाणं १०।११६:
   पण्हावागरणदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—उवमा. संखा, इसिभासियाइं, आयरियभासियाइं, महावीरभासियाइं, खोमगपसिणाइं, कोमलपसिणाइं, अद्दागपसिणाइं, अंगुट्ठपसिणाइं बाहुपसिणाइं।

५. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ सूत्र ९८:
   पण्हावागरणेसु अट्ठुत्तरं पसिणसयं अट्ठुत्तरं अपसिणसयं अट्ठुत्तरं पसिणापसिणयं विज्जाइसया, नागसुवण्णेहि सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति।
   (ख) नंदी, सूत्र ९०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोई संगति नहीं हैं। समवायांग में इसके अध्ययनों का उल्लेख नहीं है, किन्तु उसके 'पण्हावागरण-दसासु' इस आलापक (पैराग्राफ) के वर्णन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता हैं कि समवायांग में प्रस्तुत आगम के दस अध्ययनों की परम्परा स्वीकृत है। उक्त आलापक में बतलाया गया है कि प्रश्नव्याकरणदसा में प्रत्येक बुद्ध भाषित, आचार्य भाषित, वीरमहर्षि भाषित, आदर्श प्रश्न, अंगुष्ठ प्रश्न, बाहु प्रश्न, असि प्रश्न, मणि प्रश्न, क्षौम प्रश्न, आदित्य प्रश्न आदि-आदि प्रश्न वर्णित हैं। इन नामों की स्थानांग में निर्दिष्ट दस अध्ययन के नामों के साथ तुलना की जा सकती है। यद्यपि उद्देशनकाल पैंतालिस बतलाए गए हैं फिर भी अध्ययनों की संख्या का स्पष्ट निर्णय नहीं किया जा सकता। गंभीर विषय वाले अध्ययन की शिक्षा अनेक दिनों तक दी जा सकती है।

तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार प्रस्तुत आगम में अनेक आक्षेप और विक्षेप के द्वारा हेतु और नय से आश्रित प्रश्नों का उत्तर दिया गया है, लौकिक और वैदिक अर्थों का निर्णय किया गया है[1]।

जयधवला के अनुसार प्रस्तुत आगम आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेजनी और निर्वेदनी—इन चारों कथाओं तथा प्रश्न के आधार पर नष्ट, मुष्टि, चिन्ता, लाभ, अलाभ, सुख, दुख, जीवन और मरण का वर्णन करता है[2]।

उक्त ग्रंथों में प्रस्तुत आगम का जो विषय वर्णित है वह आज उपलब्ध नहीं हैं। आज जो उपलब्ध है उसमें पांच आश्रवों (हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह) तथा पांच संवरों (अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) का वर्णन है। नंदी में उसका कोई उल्लेख नहीं है। समवायांग में आचार्य भाषित आदि अध्ययनों का उल्लेख है तथा जयधवला में आक्षेपणी आदि चारों कथाओं का उल्लेख है। इससे अनुमान किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम का उपलब्ध विषय भी प्रश्नों के साथ रहा हो, बाद में प्रश्न आदि विद्याओं की विस्मृति हो जाने पर वह भाग प्रस्तुत आगम के रूप में बचा हो। यह अनुमान भी किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम के प्राचीन स्वरूप के विच्छिन्न हो जाने पर किसी आचार्य के द्वारा नए रूप से रचना की गई हो। नंदी में प्रस्तुत आगम की जिस वाचना का विवरण है, उसमें आश्रवों और संवरों का वर्णन नहीं है, किन्तु नंदी चूर्णि में उनका उल्लेख मिलता है[3]। यह संभव है कि चूर्णिकार ने उपलब्ध आकार के आधार पर उनका उल्लेख किया है।

---

१. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३, ७४ :
आक्षेपविक्षेपैर्हेतुनयाश्रितानां प्रश्नानां व्याकरणं प्रश्नव्याकरणम्। तस्मिल्लौकिकवैदिकानामर्थानां निर्णयः।

२. कसायपाहुड, भाग १, पृ० १३१, १३२:
पण्हवायरणं णाम अंगं अक्खेवणी-विक्खेवणी-संवेयणी-णिव्वेयणीणामाओ चउव्विहं कहाओ पण्हादो सट्ठ-मुट्ठि-चिंता-लाहालाह-सुखदुक्ख-जीवियमरणाणि च वण्णेदि।

३. नंदी सूत्र, चूर्णि सहित पृ० ६६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवागसुयं

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का ग्यारहवां अंग है। इसमें सुकृत और दुष्कृत कर्मों के विपाक का वर्णन किया गया है, इसलिए इसका नाम 'विवागसुयं' है[1]। स्थानांग में इसका नाम 'कम्म विवागदसा' है[2]।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के दो विभाग हैं—दुःख विपाक और सुख विपाक। प्रथम विभाग में दुष्कर्म करने वाले व्यक्तियों के जीवन प्रसंगों का वर्णन है। उक्त प्रसंगों को पढ़ने पर लगता है कि कुछ व्यक्ति हर युग में होते हैं। वे अपनी क्रूर मनोवृत्ति के कारण भयंकर अपराध भी करते हैं। दुष्कर्म व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक स्थितियों को किस प्रकार प्रभावित करता है, यह भी जानने को मिलता है। दूसरे विभाग में सुकृत करने वाले व्यक्तियों के जीवन-प्रसंग हैं। जैसे क्रूर कर्म करने वाले व्यक्ति हर युग में मिलते हैं वैसे ही उपशान्त मनोवृत्ति वाले लोग भी हर युग में मिलते हैं। अच्छाई और बुराई का योग आकस्मिक नहीं है।

स्थानांग सूत्र में कर्म विपाक के दस अध्ययन बतलाए गए हैं—मृगापुत्र, गोत्रास, अंड, शकट, माहन, नन्दीषेण, शौरिक, उदुम्बर, सहसोदाह-आमरक और कुमार लिच्छवी[3]। ये नाम किसी दूसरी वाचना के हैं।

उपसंहार

अंग सूत्रों के विवरण और उपलब्ध स्वरूप में पूर्ण संवादिता नहीं है। इस आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि अंग सूत्रों का उपलब्ध स्वरूप केवल प्राचीन नहीं है, प्राचीन और अर्वाचीन दोनों संस्करणों का सम्मिश्रण है। इस विषय का अनुसन्धान बहुत ही महत्वपूर्ण हो सकता है कि अंग सूत्रों के उपलब्ध स्वरूप में कितना प्राचीन भाग है और कितना अर्वाचीन तथा किस आचार्य ने कब उसकी रचना की। भाषा, प्रतिपाद्य, विषय और प्रतिपादन शैली के आधार पर यह अनुसन्धान किया जा सकता है। यद्यपि यह कार्य बहुत ही श्रम, साध्य है, पर असंभव नहीं है।

---

१. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ सूत्र ९९।
   (ख) नंदी, सूत्र ९१।
   (ग) तत्त्वार्थवार्तिक १।२०।
   (घ) कसायपाहुड, भाग १ पृ० १३२।
२. ठाणं १०।११०।
३. ठाणं १०।१११।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगमों के पाठ-संशोधन में अनेक मुनियों का योग रहा है। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नथमल को है, क्योंकि इस कार्य में अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्रहस्य पकड़ने में इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनय-शीलता, श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्त्तव्य-परता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

मैंने अपने संघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियों के बल-बूते पर ही आगम के इस गुरुतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि अपने शिष्य साधु-साध्वियों के निस्वार्थ, विनीत एवं समर्पणात्मक सहयोग से इस बृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूंगा।

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार, नई दिल्ली-१
२५००वां निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Preface

NĀYĀ DHAMMAKAHĀO

The title

The present Āgama is the sixth Anga of Dwādaśāngī. It has two Śrutaskandhas. The first is called as 'NĀYĀ' and the second as 'DHAMMAKAHĀO'. On combining both the Śrutaskandhas, the present Āgama has the title as 'NĀYĀDHAMMAKAHĀO'. 'NĀYĀ' (Jnāta) means examples and 'DHAMMAKAHĀO' means religious fables. The present Āgama has both of historical illustrations and imaginary fables.[1]

In the Jayadhawalā the title of this Āgama is found as 'Nāhadhāmmakahā' (Nāthadharma-kathā). 'Nātha' means the Lord. 'Nāthadhamma-kahā' i.e, the dharmakathā expounded by the Tīrthankara. In some Sanskrit works the title of this Āgama is given as 'Jnātṛidharmakathā'. Āchārya Akalanka too has given the title of this Āgama as 'Jnātadharmakathā'[2]. Ācharya Malayagiri and Abhayadeva Sūri give the title of 'Jnātadharmakathā. It is a treatise mainly containing illustrative religious stories. According to them, the first Śrutasakandha has illustrations and the second Śrutaskandha has religious stories. Both of them mention the lengthening of the word 'Jnāta'.[3]

The family name of lord Mahavīra has been given as 'Jnāta' and 'Nātha' in the Śwetamber and Digamber literature respectively. On this basis, some scholars have tried to relate this Āgama with lord Mahāvīra.[4] They hold that 'Jnātadharmakathā' or 'Nātha-dharmakathā' means the 'Dharmakathā by lord Mahāvīra'. Waber says that the work having fables pertaining to the religion of Jnātṛiwanśī Mahāvīra, is titled as NĀYĀDHAMMAKAHĀ'.[5] But, on the account found in the Samwāyānga and the Nandi, the meaning

1. Samawao, painnagasamawao, Sutra 94.
2. Tatwartha Vartika, 1/20.
3. (a) Nandivritti, pages 230-31.
   (b) Samawayanga Vritti, page 108.
4. Jain sahitya ka Pitihas, Purwa-Pithika, page 660.
5. Stories from the Dharma of NAYA, I.A., Vol. 19, page 66.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'Dharmakathā of Jnātṛiwansī Mahāvīra' does not seem to be appropriate. It has been told there that in the 'Jnātadharmakathā', the cities and gardens etc. of the 'Jnātas' (the persons cited) have been described.[1] The title of the first Adhyayana of this Āgama is 'Ukkhittanāye' (Utkshiptajnāta). On this basis also, the word 'Nātha' seems to go with the meaning as an 'illustration' only.

The content

The spiritual elements such as non-voilence, palate contral, faith, restraint of senses etc. have been expounded in an excellent style through the illustrations and fables in the present Āgama. Besides that of a plot, it has the elegance of description also. While going through the first Adhyayana, we have the reminiscense of the poetical prose-work such as the Kādambari. In the ninth Adhyayana, the description of the boat sinking in the sea, is very lively and horripilating. In the twelfth Adhyayana, the process of purifying water reminds us of the modern method. The changability of the Pudgala substance has been expounded by this illustration.

Along with the main illustrations and fables, some subsidiary fables are also found. In the eighth Adhyayana the fable of a well-frog has been recorded in an excellent style. Parivrājikā Chokha goes to Jitaśatru. Jitaśatru enquires of her—You wander a lot. Have you ever seen a harem like that of mine? With a smile Chokha said—You are like a Kūpa-Mandūka.

Who is that Kūpa Mandūka ?

Chokha said—There was a frog in a well. He was born and brought up there. He considered his well everything. One day an ocean-frog came down in that well. The well-frog said to him—Who are you ? He answered—I am a frog from the ocean. I have came from there. The well-frog asked him—How big is the ocean ? The ocean-frog said—It is very big. The well-frog, drawing a boundry with his foot, asked him—Is the ocean as big as this ? The ocean-frog answered—Far more greater than this. The well-frog had a jump, from the eastern to the western end of the well, and said—Is the ocean so big ? The ocean-frog answered—It is far more bigger than this too. The well-frog could not believe it as it had never seen any thing except the well[2].

1. (a) Samwao, painnagasamawao, Sutra 94.
   (b) Nandi, Sutra 85.
2. Nayadhammakahao, 8/154, pages 186-87.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

In this way, from the view point of various fables, insertions, illustrations, descriptions, anecdotes and word-usages, this Āgama has a great value. A comparative study of it with that of the different fable-works found the world over may well give some new facts.

UWĀSAGADASĀO

The title

The present Āgama is the seventh Anga of the Dwādaśāngī. It has the biographies of ten Upāsakas (lay devotees), therefore, it is called as 'Upāsagadasāo'. In the Śramaṇū order the laymen serving the Śramaṇas are called Śramaṇopāsakas or Upāsakas. Lord Mahāvira had large number of Upāsakas. It comprises of ten 'Adhyayanas' depicting the life of ten principal Upāsakas.

The Content

Lord Mahāvira has given twofold code of conduct, such as laws of conduct for Munis and laws of conduct for Upāsakas. Five Mahāvratas (great vows) were postulated for a Muni and twelve Vratas (vows) for a Upāsaka. Śramaṇopāsaka Anand was consecreted and initiated to his cult by him. The list of the Vratas is an excellent code of conduct pertaining to religious or ethical life. Even today, it has the same utility as it had 2500 years ago. As long as the weakness of human nature is there, its utility will always exist.

The code of conduct for Munis is found in many Āgamas but the code of conduct for laymen is found in this Āgama only. It has, therefore, its own place in the codes of conduct. The object of its composition is only to put forth the code of conduct for a layman. Incidently, Niyatiwāda has also been discussed nicely with its arguments for and against. Incidents, proving the religious touch-stone for the Upāsakas, are also found. It also throws light on the fact as to how lord Mahāvira took care of the accomplishment of the Upāsakas, and encouraged them to higher spiritual life from time to time.

According to the Jayadhawalā the present Āgama narrates eleven-fold practices of the 'Upāsakas'. They are—Darśan, Vrat, Sāmayika, Pauṣadhopawā, Saćitta-Virati, Ratri-Bhojan-Virati, Brahmaćarya, Ārambha-Virati, Parigraha-virati, Anumāti-Virati, and Uddiṣṭa Virati[1]. The Śrāwakas, beginning from

1. Kasyapahuda, part i, pages 129-30.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Ananda, had practised above said eleven Pratimās. The Vratas are practised indenpedently, and at the time of fulfilment of Pratimās also. These Vratās and Pratimās are the two religious codes for an Upāsaka. In the Samawāyānga and the Nandi Sūtra, Vratā and Pratimā both are mentioned. The Jayadhawalā gives an account of Pratimās only.

ANTAGADADASĀO

The title

The present Āgama is the eighth of the Dwādaśāngī. The illustrious ones who put an end to the cycle of death and birth, have been narrated in it, and it has ten Adhyayanas. Hence the title 'Antagadadasāo'. The Samwāyānga tells us that it contained ten Adhyayanas and seven Vargas[1]. The Nandi Sūtra says nothing about its Adhyayanas and only eight Vargas have been accounted for and in it[2]. Sri Abhayadeva Sūri has tried to find consistency in these both. He tells us that the first Varga has ten Adhyayanas, therefore the Samawāyānga Sūtra mentions ten Adhyayanas and seven Vargas only. The Nandi Sūtra gives eight Vargas only with no mention of Adhyayanas[3]. But this consistency cannot be maintained to the end, because the Samawāyānga gives us ten Śiksha-kālas (Uddeśan kālas) of this Āgama and the Nandi Sūtra gives only eight. Sri Abhayadeva Sūri admits that he does not understand the purpose behind the difference in the number of the Uddeśan-kālas[4]. The Chūrṇikār of the Nandisūtra, Sri Jinadas Mahattar and the Vrittikār, Śri Haribhadra Sūri also write that the present Āgama is given the title 'Antagaḍadasāo' as it has ten Adhyayanas in the first Varga[5]. The Chūrṇikār takes the meaning of 'Daśā' as 'Awasthā' (condition) also[6].

Three traditions are found to narrate the present Āgama : firstly, that of the samawāyānga; secondly, that of the Tatwārtha Vārtika, and thirdly, that of the Nandi Sūtra.

---

1. Samawao, painnagasamawao, Sutra 96.
2. Nandi Sutra, 88.
3. Samwayanga Vritti, page 112.
4. Samawayanga Vritti, page 112.
5. (a) Nandi with Churni, page 68.
   (b) Nandi with Vritti, page 83.
6. Nandi with the Churnipage 68. Dasatti Awastha.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

According to the first tradition, the present Āgama has ten Adhyayanas. The Sthānānga Sūtra supports it. The Sthānānga mentions the ten Adhyayanas and their headings, such as Nami, Mātanga, Somila, Ramagupta, Sudarśana, Jamāli, Bhagāli, Kimkaṣa, Ćilawaka, Pāla, and the Ambaṣṭhaputtra.[1] These headings are fou d in the Tatwārthavartika also with some variance, such as, Nami, Mātang, Somila,Ramaguptā, Sudarśana, Yamalīka, Kambala, Pāla and Ambaṣṭhaputtra. Samawayanga mentions ten adhayans without giving their names. The present Āgama gives an account of the Antakṛīta Kewalīs, in groups of ten contemporaries of each Tīrthankara.[2] The Jayadhawala, too, supports this statement of the Tatwārthavrātika. In the Nandisūtra mention is found neither of the ten Adhyayanas nor of their headings. On this basis, it can be inferred that the Samawāyānga and the Tatwārthavarṭika maintain the old tradition and the Nandi-Sūtra gives the Āgama in the form found at present. There are ten Adhyayanas of the first Varga out of the eight Vargas found at present, but their headings altogether differ from the above- said headings, i.e., Gautama, Samudra, Sāgara, Gambhīra, Stanita, Aćala Kāmpilya, Akśetra, Prasenjit and Viṣṇu. In the 'Sthānāngavritti' Sri Abhaya-deva Suri acknowledges it as a variant 'Vācnā'[3]. This shows that the 'Vāćnā' of the 'Nandi' is different from the 'Vāćnā ' found in the 'Samawāyānga'.

The word 'Antagaḍa' has two Sanskrit forms—Antakṛita and Antakrit. Both have the same sense but 'gāda' goes more with the Sanskrit version 'Kṛita' so far as morphology is concerned.

The Content

This Āgama gives an excellent account of Vāsudeva Kṛiṣṇa and his family. The Dīkśā (initiation) and accomplishment of Gajasukamāla, the younger brother of Vāsudeva Kṛiṣṇa has been horripiliatingly narrated.

In the sixth Varga, is found an account of the incident occured with Arjuna, the gardener. An accident turned him to be a murderer and the other association made him a saint. It may not be admitted that a man changes with the circumstances and atmosphere, but, even then, it may be accepted that they are the cause of the rise and fall of a man.

---

1. Tatwarthavartika 1/20
2. Tatwarthavartika 1/20.
3. Sihany Vritti.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

By the Adhyayana of Atimuktaka Muni, the value of spiritual accomplishment can be well understood. Fasting alone is seen in this Āgama through out. The narrations of meditations are scanty. Lord Mahavīra had laid stress upon both—the fast and the meditation. In the classification of penance, fast is the outer penance and meditation is the inner one. Lord Mahavira in his penance-period, had observed both, fast and meditation. It is worth investigating why this Āgama lays so much stress on fasting only. This Āgama, a remanent in the succession of oblivion and reproduction, is valuable and worthy of research work from many points of view.

ANUTTAROWAWĀIYA-DASĀO

The title

This Āgama is the ninth Anga of the Dwādaśangī. As it containsten Adhyayanas regarding the Munis born in the Anuttara Swarga class, its title is given as 'Aṇuttarowawāiya-Dasāo'. The Nandi Sūtra mentions only three Vargas[1]. The Sthānānga quotes only ten Adhyayanas.[2] According to the Rajavārttika groups of ten Anuttaropapātika Munis, contemporaries of each Tīrthanker, have been narrated in it.[3] The Samawāyānga mentions the ten Adhyayanās and the three Vargas too.[4] But the headings of the ten Adhyayanas have not been given in it. According to the Sthānānga and the Tattwārthavārttika they read as, Riṣidasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttika, Swasthan, Śālibhadra, Ānanda, Tetali, Daśārṇabhadra and Atimukta[5], and as Riṣidasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttika, Nandanandana, Śātībhadra, Abhaya, Wāriṣeṇa, and Cilattaputra respectively. The above said Munis were the contemporaries of Lord Mahāvira, such is the opinion of the author of the Tattawārthavārttika.[6] In the Dhawalā we find Kārtikeya instead of Kārttika and Ānand instead of Nanda[7].

The present form of the Āgama is different from the 'Vaćna' of the Sthānāga and the Samawāyānga. Abhayadeva Sūrī holds that it is a different 'Vaćna'. In the form of the Āgama, that is available, three Adhyayanas, such

1. Nandi, Sutra, 89.
2. Thanam, 10/114.
3. Tattawarth varttikas 1/20, Kasayapahuda I, page 130.
4. Samawao, painnagasamawao, Sutra 97.
5. Thanam 10/114.
6. Tattwarthvarttika 1/20.
7. Satkhundagama 1/1/2.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

as Dhanya, Sunakshtra and Riṣidasa, are found. In the first Varga, only two Adhyayanas, named as Wārisṛeṇa and Abhaya, are seen.

The contents

This Āgama beautifully narrates the luxury and ascetic lives of many princes. The narration of the ascetic life of Dhanya Aṇagāra and his body emaciated due to the penance is noteworthy both from the literary and spiritual viewpoints.

PANHĀWĀGARANĀIN

The title

The present Āgama is the tenth Anga of the Dwādaśāngī. Its title has been mentioned as 'Paṇhāwāgaraṇāin' in the Samawāyanga Sūtra and the Nandī.[1] Its name is found as 'Paṇhāwāgaradasāo'[2] in the Sthānānga and the same reads as 'Paṇhāwāgaraṇadasāsu' in the Samawāyānga. It is, therefore inferred that the title mentioned in the Sthānānga is also in concurrence with the Samawāyānga. The Jayadhawalā and the Tattwārthavarttika note it as Paṇhāwāyaraṇa or Praśna-Vyākaraṇā.[3]

The Contents

Opinions differ regarding the contents of the present Āgama. The Sthānānga cites its ten Adhyayanas, such as, Upamā, Samkhyā. Riṣibhāṣita, Āćāryabhāṣitā, Mahāvira-bhāṣitā, Kṣaumaka-Praśna, Komala-Praśna, Ādarśa-Praśna, Anguṣṭha-Praśna and Bāhu-Praśna.[4] The headings of the Adhyayanas indicate well the contents they have.

According to the Samawāyānga and the Nandī, the present Āgama has various types of queries, sciences (vidyās) and the dialogues of the Devas dealt with.[5]

The Nandi notes fortyfive Adhyayanas of it, which do not accord with the Sthānānga. The Samawāyānga makes no mention of its Adhyayanas.

---

1. (a) Samawao painnagasamawao, Sutra 98.
   (b) Nandi, Sutra 90.
2. Thanam, 10/110.
3. (a) Kasayapahuda pt. I, page 131.
   (b) Tatwarthavarttika 1/20.
4. Thanam 10/116.
5. (a) Samawao, painnagasamawao, Sutra 98.
   (b) Nandi, Sutra, 90.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

But, from its 'Paṇhāwāgaraṇadasāsu' paragraph, it may be inferred that the Samawāyānga accepts the traditional ten Adhyayanas of the present Āgama . The said paragraph tells us that Pratyeka Buddhabhāśita, Āćārya-bhāṣita, Vīramaharṣi-Bhāṣita, Ādarśa-Praśna, Anguṣṭha-Praṣna, Bāhu-Praśna, Asi-Praśna, Maṇi-Praśna, Kṣauma-Praśna, Āditya-Praśna etc. have been dealt with in the 'Praśna-Vyākaraṇa-Dasā'. These headings can well be compared with those of ten Adhyayanas mentioned in the Sthānānga. Though the Uddeśana-Kālas have been mentioned as fortyfive, the exact number of the Adhyayanas cannot be decided definitely. The teaching of the Adhyayana on a deep topic could he spread over for many days.

According to the Tattwārthavārttika many queries have been expounded in this Āgama , depending on cause and inference by 'Ākṣepa' and 'Vikṣepa'. Also the Laukika (secular) and Vedic Arthas have been ascertained in it.[1]

The Jayadhawalā notes that this Āgama narrates the Naṣṭa, Muṣṭi, Ćintā, Lābha, Alābha, Sukha, Dukkha, Jīwan and Maraṇa with the help of the four kinds of fables, i.e. Ākṣepaṇī, Prakṣepaṇī, Samvejanī, and Nirvedanī, as well as purporting a query.[2]

The contents of the Āgama, as mentioned in the said works, is not found today. What is found covers the five Āśrawas (Hinsā, Asatya, Ćaurya, Ābrahmaćarya and Parigraha) and the five Samwaras (Ahimsa, Satya, Aćaurya, Brhmaćarya, and Aparigraha) only. The Nandi does not make mention of it at all. The Samawāyānga mentions the Adhyayanas beginning from Āćārya-Bhāṣita, while the Jayadhawala gives an account of the four kinds of fables beginning from Ākṣepaṇī. It may be inferred that the known contents of the Āgama formerly were in the form of the queries and subsequently, the learning of query etc. being lost, the remanent part formed the present Āgama. It is also likely that the old form of the present Āgama being lost, some Āćarya composed it a fresh. The 'Vacna' of this Āgama given in the Nandi, does not narrate the Āśrawas and the Samwaras, but the Ćūrṇi of the Nandi does it.[3] Likely it is that the Ćūrṇikāra did it on the basis of the present form of the Āgama.

---

1. Tattwarthavarttika 1/20.
2. Kasayapahuda part I, page 131.
3. Nandi Sutra with the Curni on page 12.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

VIVĀGASUYAM

The title

The present Āgama is the 11th Anga of the Dwādaśāngī. The Vipāka (fruit) of the Sukṛita and Duṣkṛita deeds has been dealt with in it. therefore the title 'Vivāgasuyam.'[1] The Sthānānnga gives its title as 'Kāmma Vivāgadasā.'[2]

The Contents

This Āgama has two divisions, i.e. the Dukha Vipāka and the Sukha Vipāka. The first division contains the topics on the lives of the individuals doing bad deeds. On going through the said contents, it appears that, in every age, there are some individuals who commit horrible crimes on account of their cruel mentality. It is also gathered how the criminal deeds affect their physical and mental states. The second division has the life-contents of those individuals who perform good deeds. As the commitant of cruel deeds are found in every age, so are the persons having the tranquil mentality. Conjunction of goodness and badness is not without cause.

Conclusion

The Sthānānga Sūtra enamurates ten Adhyayanas of the Karma-Vipāka such as, Mṛigāputra, Gotrāsa, Aṇḍa, Sakata, Māhan, Nandiṣeṇa, Śaurika Udumbara, Sahasoddāha-Āmaraka, and Kumar Licćhavī. These headings have been taken from some other 'Vaćna'.

The account of the Anga-Sūtras and the peculiar form they are presently found in are not fully harmonic. On this basis, it may be inferred that the obtained form of the Āgama Sūtras in not ancient only, but is a mixture of the editions of old and new, both. This will form an important subject of investigation as to how much of the present form of the Anga-Sūtra is ancient and how much modern, as well as who of the Āćaryas composed it and when. The language, the subject-matter and the style of ascertainment will surely form the basis of investigation. This is of course, highly toilsome, but not impossible.

---

1. (a) Samawao, painnagasamawao, Sutra 99
   (b) Nandi Sutra 91.
   (c) Tattawarthavarttika 1/20
   (d) Kasayapahuda, Pt I, page 132.
2. Thanam 10/110.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Accomplishment of the work

In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many a Muni. I bless them that their devotedness to the performance be ever more developed.

For the editing of this Āgama major amount of credit goes to my learned disciple Muni Shri Nath Mali. Day in and day out he has devoted himself to this arduous task. It is because of his concentrated efforts that the work has got such a nice accomplishment. Otherwise, it would not have been an easy job. On account of his in-born Yogic temperament he was capable of attaining that concentration of mind which was essential for achieving the end. On account of his constant devotion to the work of research in the field of Āgamic literature his intellect has achieved sufficient sharpness in finding out immediately the hidden meaning and mysteries of Āgamic expositions. His keen sense of obedience, perseverance and absolute dedication have contributed much in developing his personality. The above qualities are seen in him since his early age. Right from the time when he joined the Sangha I have been an observor of these qualities of his, which have so developed. His capacity to undertake to a big task has given me ever increasing satisfaction.

I have undertaken this hard and tremendous task of editing the Āgamas relying on the strength of such learned disciples in the Sangha. I am now, quite confident that I shall be able to complete this hazardous work with the help and assistance of my obedient, selfless and devout disciples.

On the holy occasion of this 25th centinary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the teachings of the Lord.

Anuvrata Vihar

Delhi

Ācharya Tulasi

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमं अज्झयणं सू० १-४० पृ० ६३५-६५०

उक्खेव-पदं १, पाणवहस्स सरूव-पदं २, पाणवहस्स तीसनाम-पदं ३, पाणवहस्स पगार-पदं ४, पाणवहस्स कारण-पदं ११, पाणवहस्स कत्तार-पदं २०, पाणवहस्स फलविवाग-पदं २३, निगमण-पदं ४० ।

बीयं अज्झयणं सू० १-१९ पृ० ६५१-६५६

उक्खेव-पदं १, अलियवयणस्स तीसनाम-पदं २, अलियवयणस्स पगार-पदं ३, अलियवयणस्स फलविवाग-पदं १५, निगमण-पदं १९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइयं अज्झयणं **सू० १-२६** **पृ० ६५७-६६७**

उक्खेव-पदं १, अदिण्णादाणस्स तीसनाम-पदं २, चोरिय-चोरपगार-पदं ३, रण्णो परधण-हरण-पदं ४, धणत्थं जुद्ध-पदं ५, लूंटाक-पदं ६, सामुद्दियचोर-पदं ७, दारुणचोर-पदं ८, अदिण्णादाणस्स फलविवाग-पदं ९, निगमण-पदं २६ ।

चउत्थं अज्झयणं **सू०१-१५** **पृ० ६६८-६७७**

उक्खेव-पदं १, अबंभस्स तीसनाम-पदं २, सुरगणस्स अबंभ-पदं ३, चक्कवट्टिस्स अबंभ-पदं ४, बलदेव-वासुदेवस्स अबंभ-पदं ५, मंडलिय-नरवरेंदस्स अबंभ-पदं ६ जुगलियाणं लावण्णनिरूवगपुरस्सरं अबंभ-पदं ७, जुगलिणीणं लावण्णनिरूवणपुरस्सरं अबंभ-पदं ८, अबंभस्स फलविवाग-पदं ९, निगमण-पदं १५ ।

पंचमं अज्झयणं **सू० १-१०** **पृ० ६७८-६८२**

उक्खेव-पदं १, परिग्गहस्स तीसनाम-पदं २, देवाणं परिग्गह-पदं ३, मणुस्साणं परिग्गह-पदं ४, परिग्गहत्थं सिक्खा-पदं ५, परिग्गहीणं पवित्ति-पदं ६, परिग्गहस्स फलविवाग-पदं ८, निगमण-पदं १० ।

छट्ठं अज्झयणं **सू० १-२५** **पृ० ६८३-६८८**

उक्खेव-पदं १, अहिंसा-पज्जवनाम-पदं ३, अहिंसा-थुइ-पदं ४, अहिंसा-माहप्प-पदं ६, उंछगवेसणा-पदं ७, अहिंसाए पंचभावणा-पदं १६, निगमण-पदं २२ ।

सत्तमं अज्झयणं **सू० १-२५** **पृ० ६८९-६९३**

उक्खेव-पदं १, सच्चस्स माहप्प-पदं २, सच्चस्स थुइ-पदं १०, सावज्जसच्च-पदं १२, अणवज्जसच्च-पदं १४, सच्चस्स पंचभावणा-पदं १६, निगमण-पदं २२ ।

अट्ठमं अज्झयणं **सू० १-१७** **पृ० ६९४-६९७**

उक्खेव-पदं १, अदत्तस्स अग्गहण-पदं २, अदत्तादाणवेरमणस्स अजोग्गता-पदं ५, अदत्तादाणवेरमणस्स जोग्गता-पदं ६, अदत्तादाणवेरमणस्स पंचभावणा-पदं ८, निगमण-पदं १४ ।

नवमं अज्झयणं **सू० १-१५** **पृ० ६९८ ७०३**

उक्खेव-पदं १, बंभचेरमाहप्प-पदं २, बंभचेरधिरीकरण-पदं ४, बभचेरस्स पंचभावणा-पदं ६, निगमण-पदं १२ ।

दसमं अज्झयणं **सू० १-२३** **पृ० १००४-७१३**

अक्खेव-पदं १, अकप्पदव्वजाय-पदं ३, असण्णिहि-पदं ६, अकप्पभोयण-पदं ७, कप्पभोयण-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पदं ८, रोगायंके वि असणिहि-पदं ९, उवगरणधारणविहि-पदं १०, समणस्स सरूवनिरूवण-पदं ११, अपरिग्गहस्स पंचभावणा-पदं १३, निगमण-पदं १९, परिसेसो ।

संकेत निर्देशिका

•० ये दोनों बिन्दु पाठपूर्ति के द्योतक है। पाठपूर्त्ति के प्रारम्भ में भरा बिन्दु [•] और उसके समापन में रिक्त बिन्दु [०] रखा गया है। देखें–पृष्ठ २ सू ६।

[?] कोष्ठकवर्त्ती प्रश्नचिन्ह [?] अदर्शों में अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें—पृष्ठ ३. सूत्र ७।

' ' ये दो या इससे अधिक शब्दों के स्थान में पाठान्तर होने का सूचक है। देखें पृष्ठ २ सू० ४। 'वण्णओ' व 'जाव' शब्द के टिप्पण में उसके पूर्त्ति स्थल का निर्देश है। देखें—पृष्ठ १ टिप्पण ३ और पृष्ठ ३ सूत्र ८।

× क्राश [×] पाठ न होने का द्योतक है। देखें—पृष्ठ ३ टिप्पण ४।

० पाठ के पूर्व या अन्त में खाली बिन्दु [०] अपूर्ण पाठ का द्योतक है। देखें—पृ० ३ सूत्र ७ टिप्पण ५।

'जहा' 'तहेव' आदि पर टिप्पण में दिए गए सूत्रांक उसकी पूर्ति के सूचक हैं। देखें—पृष्ठ ३०१ सूत्र ७ तथा पृष्ठ ३७८ सूत्र ५०।

क, ख, ग, घ, च, छ, ब, देखें—सम्पादकीय में 'प्रति-परिचय' शीर्षक।

'व्या० वि' व्याकरण विमर्श। देखें—पृष्ठ ३९६ टिप्पण १।

'क्व' क्वचित् प्रयुक्तादर्श।

सं० पा० संक्षिप्त पाठ का सूचक है। देखें—पृष्ठ ५ टिप्पण १।

वृपा वृत्ति-सम्मत पाठान्तर। देखें—पृष्ठ १० टिप्पण ३।

वृ वृत्ति का सूचक है। देखें—पृष्ठ ६ टिप्पण १७।

पू० पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यम्। देखें–पृष्ठ ५२९ टिप्पण १।

अं० अंतगडदसाओ।

अ० अणुत्तरोववाइयदसाओ।

उवा० उवासगदसाओ।

ओ० ओवाइयं।

ना० नायाधम्मकहाओ।

भ०, भग०, भगवई।

राय० रायपसेणइयं।

पण्हा० पण्हावागरणाइं।

वि० विवागसूयं।

सूय० सूयगडो।

जंबू० जंबूदीवपण्णत्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्हावागरणाइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमं अज्झयणं

पढमं आसवदारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू[1] !

इणमो[2] अण्हय-संवर-विणिच्छयं[3] पवयणस्स निस्संदं ।
वोच्छामि णिच्छयत्थं, सुहासियत्थं महेसीहिं ॥१॥

---

१. वृत्तिकारेण पुस्तकान्तरवर्ती उपोद्घातग्रन्थः उल्लिखितः । तत्र 'जंबू' इति पदं युक्तमस्ति । किञ्च तस्मिन् प्रस्तुतसूत्रस्य प्रारम्भः सुधर्म-जम्बू-संवादपूर्वकः कृतोस्ति । किन्तु वृत्तिकृता स्वीकृते पाठे सुधर्मस्वामिनो नास्ति कोपि उल्लेखः । तं विना केवलं 'जंबू' इति पदं कथं युक्तं स्यात् ? इति सम्भाव्यते पुस्तकान्तरवर्त्युपोद्घातग्रन्थस्य सम्बन्धि 'जंबू' पदं प्रस्तुतवाचनायामपि प्रविष्टम् ।

२. पुस्तकान्तरेषु उपोद्घातग्रन्थ उपलभ्यते, यथा—
तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था । पुण्णभद्दे चेइए । वणसंडे । असोगवरपायवे । पुढविसिलापट्टए । तत्थण चंपाए नयरीए कोणिए नामं राया होत्था । धारिणी देवी । तेणं कालेणं तेण समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं थेरे—जाइसंपण्णे कुल-संपण्णे बलसंपण्णे रूवसंपण्णे विणयसंपण्णे नाणसंपण्णे दंसणसंपण्णे चरित्तसंपण्णे लज्जासंपण्णे लाघवसंपण्णे ओयसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोभे जियनिद्दे जिइंदिए जियपरीसहे जीवियास-मरण-भय-विप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निच्छयप्पहाणे अज्जवप्पहाणे मद्दवप्पहाणे लाघवप्पहाणे खंतिप्पहाणे गुत्तिप्पहाणे मुत्तिप्पहाणे मंतप्पहाणे बंभप्पहाणे वेयप्पहाणे नयप्पहाणे नियमप्पहाणे सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दंसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे चोद्दसपुव्वी चउनाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वा-णुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नगरी तेणेव उवागच्छइ जाव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचविहो पण्णत्तो, जिणेहिं इह अण्हओ अणादीओ।
हिंसा - मोसमदत्तं[1], अब्बंभ - परिग्गहं चेव ॥२॥
जारिसओ, जंनामा[2], जह य कओ जारिसं फलं देति।
जेवि य करेंति पावा, पाणवहं[3] तं निसामेह ॥३॥

पाणवहस्स सरूव-पदं

२. पाणवहो नाम एस निच्चं जिणेहिं भणिओ—पावो चंडो रुद्दो खुद्दो साहसिओ[4] अणारिओ निग्घिणो निस्संसो महब्भओ पइभओ अतिभओ बीहणओ तासणओ अणज्जो[5] उव्वेयणओ य निरवयक्खो निद्धम्मो निप्पिवासो निक्कलुणो निरय-

---

अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे कासव गोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव संखित्त-विपुलतेयलेस्से अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तए णं से अज्जजंबू जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले, उप्पण्णसड्ढे ३, संजायसड्ढे ३, समुप्पण्णसड्ढे ३, उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जसुहम्मं थेरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, नमंसित्ता नच्चासन्ने नाइदूरे विणएणं पंजलिपुडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी—जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं णवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइय-दसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णं अंगस्स पण्हावागरणाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठ पण्णत्ते?

जंबू! दसमस्स अंगस्स समणेणं जाव संपत्तेणं दो सुयक्खंधा पण्णत्ता अण्हयदारा य संवरदारा य। पढमस्स णं भंते! सुयक्खंधस्स समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता?

जंबू! पढमस्स णं सुयक्खंधस्स समणेणं जाव संपत्तेणं पंच अज्झयणा पण्णत्ता। दोच्चस्स णं भंते! एवं चेव। एएसि णं भंते! अण्हय-संवराणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

ततेणं अज्जसुहम्मे थेरे जंबूनामेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे जंबूअणगारं एवं वयासी—जंबू! इणमो इत्यादि॥ (वृ)।

३. विणिच्छियं (घ)।

१. मोसादत्तं (क)।

२. जण्णामा (क)।

३. पाणिवहं (ग)।

४. साहस्सिओ (ग)।

५. व्याकरणदृष्ट्या 'अण्णज्जो' इति पदं युक्तं स्यात्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वास-गमण-निधणो मोह-महब्भय-पवड्ढओ[1] 'मरण वेमणंसो'[2] पढमं अधम्म-दारं ॥

पाणवहस्स तीसनाम-पदं

३. तस्स य नामाणि इमाणि[3] गोण्णाणि होंति[4] तीसं, तं जहा—१, २. पाणवहम्मू-लणा[5] सरीराओ ३. अवीसंभो ४. हिंसविहिंसा तहा ५. अकिच्चं च ६. घायणा ७. मारणा य ८. वहणा ९. उद्दवणा[6] १०. तिवायणा[7] य ११. आरंभ-समा-रंभो १२. 'आउयकम्मस्स उवद्दवो'[8] [भेय-णिट्ठवण-गालणा य संवट्टग-संखेवो[9]] १३. मच्चू १४. असंजमो १५. कडग-मद्दणं १६. वोरमणं १७. परभव-संकाम-कारओ १८. दुग्गतिप्पवाओ १९. पावकोवो य २०. पावलोभो[10] २१. छविच्छेओ[11] २२. जीवियंतकरणो २३. भयंकरो २४. अणकरो[12] २५. वज्जो[13] २६. परिता-वण-अण्हओ २७. विणासो २८. निज्जवणा[14] २९. लुंपणा[15] ३०. गुणाणं विराहणत्ति ।

अवि य तस्स एवमादीणि[16] नामधेज्जाणि होंति तीसं पाणवहस्स कलुसस्स कडुयफल-देसगाइं ॥

पाणवहस्स पगार-पदं

४. तं च पुण करेंति केई पावा असंजया अविरया अणिहुय-परिणाम-दुप्पयोगी[17]

---

१. पयद्दओ (क, ग); पयट्टओ (ख); प्रकर्षक: (वृ); वृत्तिकारेण 'प्रकर्षक: प्रवर्त्तक:' इत्युल्लेख: कृत: । उत्तरवर्त्यादर्शेषु 'प्रवर्त्तक' पदस्याधारेण 'पयट्टओ' इति पाठ: प्रचलितोभूत् । पवड्ढओ (वृपा) ।

२. मरण वेमणसो (ख, ग); मरणावेमणस्सो (वृ); वृत्तिकारेण असौ पाठ एकपदत्वेन व्याख्यात:, किन्तु अस्माभि: 'एस मारे' (१।२४) इति आचाराङ्गसूत्रसन्दर्भेण पृथक्पदत्वेन गृहीत: ।

३. × (क) ।

४. × (क) ।

५. पाणवहं उम्मूलणा (घ) ।

६. उद्दवण (क) ।

७. णिवायणा (क) ।

८. °कम्मस्सुवद्दवो (क, ख) ।

९. अत्र कोष्ठकवर्त्तीनि भेदादिपदानि 'उवद्दव' पदस्य पर्यायवाचित्वेन निर्दिष्टानि सन्ति, यथा—आउयकम्मस्स भेओ
,, णिट्ठवणं
,, गालणा
,, संवट्टगो
,, संखेवो ।
वृत्तिकारेणापि लिखितमिदम् - एतेषां च उपद्रवादीनामेकतरस्यैव गणनया नाम्नां त्रिंशत् पूरणीया: ।

१०. पावलो (वृ) ।

११. छविच्छेयकरो (वृ) ।

१२. अणकरो य (ग) ।

१३. सावज्जो (वृपा) ।

१४. निज्जवणो (ग) ।

१५. लुंपणो (घ) ।

१६. एवमातीणि (ग) ।

१७. दुप्पओया (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाणवहं भयंकरं[1] बहुविहं[2] परदुक्खुप्पायणप्पसत्ता इमेहिं तसथावरेहिं जीवेहिं पडिणिविट्ठा, 'किं ते'[3] ?—

५. पाठीण[4]-तिमि[5]-तिमिंगिल-अणेगझस-विविहजातिमंदुक्क-दुविहकच्छभ-णक्क-मगर-दुविहगाह-दिलिवेढय-मंदुय[6]-सीमागार[7]-पुलुय-सुंसुमार-बहुप्पगारा[8] जलयरविहाणाकते[9] य एवमादी ।।

६. कुरंग-रुरु-सरभ-चमर-संबर-हुरब्भ[10]-ससय-पसय-गोण-रोहिय[11]-हय-गय-खर-करभ-खग्ग-वानर-गवय-विग-सियाल-कोल[12]-मज्जार-कोलसुणक[13]-'सिरियंदलय-आवत्त'[14]-कोकंतिय-गोकण्ण-मिय-महिस-वियग्घ-छगल-दीविय-साण-तरच्छ-अच्छ-भल्ल-सद्दूल-सीह-चिल्लला[15] चउप्पयविहाणाकए य एवमादी ।।

७. अयगर[16]-गोणस-वराहि-मउलि[17]-काओदर-दब्भपुप्फ-आसालिय[18]-'महोरगा उरगविहाणाकए'[19] य एवमादी ।।

८. छीरल-सरंब[20]-सेह-सल्लग[21]-'गोधा-उंदुर'[22]-णउल-सरड-जाहग-मुगुंस-खाडहिल-वाउप्पइय[23]-घरोलिया[24] सिरीसिवगणे य एवमादी ।।

९. कादंबक[25]-बक-बलाका-सारस-आडासेतीय-कुलल-बंजुल-पारिप्पव-कीव[26]-सउण-दीविय[27]-हंस-धत्तरट्ठ[28]-भास-कुलीकोस[29]-कोंच[30]-दगतुंड-ढेणियालगसूईमुह-कविल

---

१. बहुविहभयंकरं (वृ); भयंकरं (वृपा)।
२. वहुविहबहुप्पयारं (क, ख,); बहुविहं बहुप्पगारं (ग, घ)।
३. कथं तं प्राणवधं कुर्वन्तीत्यर्थः (वृ); तद्यथेति वा (वृपा)।
४. पाढीण (क)।
५. तिमि (क)।
६. मदुय (क);मदुक (ख); मंडुय (ग, घ)।
७. सीमागर (क)।
८. बहुप्रकारश्चेति कर्मधारयोऽतस्तान् घ्नतीति वक्ष्यमाणेन योगः। इह च द्वितीयाबहुवचनेप्येकाराभावः छान्दसत्वात् (वृ)।
९. जलचरविधानकृतांश्च, इह च कशब्दलोपेन विधानशब्दस्यान्तदीर्घत्वम् (वृ)।
१०. उरब्भ (ख)।
११. रोहिस (वृपा)।
१२. कोक (वृपा)।
१३. °सुणका (क, ख, ग, घ)।
१४. सिरिकंदलगावत्त (ख); श्रीकन्दलका आवर्त्ताश्च (वृ)।
१५. चिल्लल (क, ख, ग, घ,); चित्तला (वृपा)।
१६. अयकर (क, ख, ग, घ)।
१७ माउलि (ख, ग, च)।
१८. यासालिय (ख, घ, च);
१९. महोरगारगविहाणगकए (ख, ग, घ, च)।
२०. सरंग (ख, च)।
२१. सेल्लग (ख, ग, घ, च)।
२२. गोधुंदर (क, ख, ग)।
२३. वाउप्पिय (ख, घ)।
२४. घरोलिय (क, ख, ग); घोरोलिय (घ)।
२५. कादंबकीबक (क)।
२६. कीर (ग)।
२७. पिप्पिय (क); दीपिय (ग); पीपिय (वृ)।
२८. धात्तरिट्ठ (ख)।
२९. कुडीकोस (ग)।
३०. कुंच (ख, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिंगलक्खग[1] - कारंडग[2] - चक्कवाग-उक्कोस- गरुल-पिंगुल[3]-सुय-बरहिण[4]- मयण-साल-नंदीमुह-नंदमाणग-कोरंग-भिंगारग-कोणालग - जीवंजीवक[5]-तित्तिर-वट्टक-लावक- कपिंजलक[6] - कवोतग - पारेवग[7] - चिडिग- ढिंक - कुक्कुड-वेसर[8]-मयूरग-चउरग-हरपोंडरीय[9]-सालग[10] - वीरल्ल-सेण- वायस- विहंगभेणासि-चास-वगुलि-चम्मट्ठिल-विततपक्खी खहयरविहाणाकते य एवमादी ॥

१०. जल-थल-खग-चारिणो उ[11] पंचिंदिए पसुगणे विय-तिय-चउरिंदिए य[12] विविहे जीवे, पियजीविए, मरणदुक्खपडिकूले वराए हणंति बहुसंकिलिट्ठकम्मा[13] ॥

पाणवहस्स कारण-पदं

११. इमेहिं विविहेहिं कारणेहिं, 'किं ते'[14] ?—
चम्म-वसा-मंस - मेय-सोणिय- जग- फिप्फिस - मत्थुलिंग[15] - हियय[16]-अंत - पित्त-पोप्फस-दंतट्ठा, अट्ठि-मिंज-नह-नयण-कण्ण-ण्हारुणि-नक्क-धमणि-सिंग-दाढि - पिच्छ-विस-विसाण-वालहेउं[17] ॥

१२. हिंसंति य भमर-मधुकरिगणे रसेसु गिद्धा, तहेव तेइंदिए सरीरोवकरणट्ठयाए, किवणे बेइंदिए[18] बहवे वत्थोहरपरिमंडणट्ठा, अण्णेहि य एवमाइएहिं बहूहिं कारणसतेहिं अबुहा इह हिंसंति तसे पाणे ॥

१३. इमे य एगिंदिए[19] वराए तसे य अण्णे तदस्सिए चेव तणुसरीरे समारभंति—अत्ताणे असरणे अणाहे अबंधवे कम्मनिगल[20]-बद्धे अकुसलपरिणाम-मंदबुद्धिजण-दुव्विजाणए, पुढविमए पुढविसंसिए, जलमए जलगए, अणलाणिल-तणवणस्सतिगण-निस्सिए य 'तम्मय-तज्जिए'[21] चेव तदाहारे तप्परिणत-वण्ण-गंध-रस-फास-बोंदिरूवे अचक्खुसे चक्खुसे य तसकाइए असंखे ॥

---

१. पिंगलक्ख (क) ।
२. कारड (घ, च) ।
३. पंगुल (ख, ग, घ, च) ।
४. वरिहिण (ख, ग, घ, च) ।
५. जीवक (क); जीवजीवक (क्व) ।
६. कापिंजलक (क) ।
७. परिवयग (ख, घ, च) ।
८. मसर (क); विसर (च); मेसर (ग, घ) ।
९. हयपोंडरीय (ख, ग, घ, च) ,
१०. करकरल्लग (क); करकरग(ख, ग, घ, च); करग (वृपा) ।
११. य (ग, च) ।
१२. × (क, ख, घ) ।
१३. सत्त्वा इति गम्यते (वृ) ।
१४. किं तत् प्रयोजनम् ? तच्चेति वा (वृ) ।
१५. मत्थुलुंग (क, घ) ।
१६. हितय (क, घ, च) ।
१७. °हेउ (क, च) । 'हणंति बहुसंकिलिट्ठकम्मा' इति अध्याहर्तव्यमत्र ।
१८. बिंदिए (ख) ।
१९. एगिंदिए बहवे (घ, च) ।
२०. °नियल (क) ।
२१. तन्मयजीवाश्चेति (वृपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. थावरकाए य सुहुम-बायर-पत्तेयसरीर-नाम-साधारणे अणंते हणंति अविजाणओ य परिजाणओ य जीवे इमेहिं विविहेहिं कारणेहिं, 'किं ते'[1] ?—
करिसण-पोक्खरणी[2]-वावि-वप्पिण-कूव-सर-तलाग-चिति-वेदि[3]-खातिय-आराम-विहार-थूभ-पागार-दार-गोउर[4]-अट्टालग-चरिय-सेतु-संकम[5]-पासायविकप्प-भवण-घर-सरण-लेण-आवण-चेतिय-देवकुल-चित्तसभ-पव-आयतण-आवसह-भूमिघर-मंडवाण य कए, भायण-भंडोवगरणस्स विविहस्स य अट्ठाए पुढवि हिंसंति मंदबुद्धिया ।।

१५. जलं च मज्जणय-पाण-भोयण-वत्थधोवण-सोयमादिएहिं[6] ।।

१६. पयण-पयावण-जलावण[7]-विदंसणेहिं अगणिं ।।

१७. सुप्प-वियण-तालयंट[8]-पेहुण-मुह-करयल-सागपत्त वत्थमादिएहिं अणिलं ।।

१८. अगार-परियार-भक्ख-भोयण-सयण-आसण-फलग-मुसल-उक्खल-तत-वितत-आतोज्ज-वहण-वाहण-मंडव-विविहभवण-तोरण-विडंग[9]-देवकुल-जालय-अद्ध-चंद-निज्जूह[10]-चंदसालिय-वेतिय[11]-णिस्सेणि-दोणि-चंगेरि-खील-मेढक-सभ-प्पव-आवसह-गंध-मल्ल-अणुलेवण-अंबर-जुय-नंगल-मइय[12]-कुलिय-संदण-सीया-रह-सगड-जाण-जोग्ग-अट्टालग-चरिअ[13]-दार-गोपुर-फलिह-जंत-सूलिय[14]-लउड-मुसुंढि[15]-सतग्घि-वहुपहरण-आवरण-उवक्खराण कते[16] । अण्णेहि य एवमादिएहिं बहूहिं कारणसतेहिं हिंसंति ते[17] तरुगणे, भणियाभणिए य एवमादी सत्ते सत्तपरिवज्जिया उवहणंति दढमूढा दारुणमती ।।

१९. कोहा माणा माया लोभा 'हस्स रती अरती सोय[18] वेदत्थ-'जीव-धम्म-अत्थ-कामहेउं',[19]
सवसा अवसा अट्ठा अणट्ठाए य तसपाणे थावरे य हिंसंति मंदबुद्धी ।
सवसा हणंति, अवसा हणंति, सवसा अवसा दुहओ हणंति ।

---

१. किं तत् तद्यथेति वा (वृ) ।
२. पोक्खरिणी (क, ग) ।
३. वेति (क, ख) ।
४. गोपुर (क, ग) ।
५. संकमण (ख) ।
६. एतदादिभिः कारणैरिति प्रक्रमः (वृ) ।
७. जलण जलावण (ख, च) ।
८. तालएंट (क, घ); तालवंट (ख); तालविंट (च) ।
९. विटंग (ख) ।
१०. निज्जूहग (घ) ।
११. वेदिय (क्व) ।
१२. मलिय (क) ।
१३. चरित (क, ग) ।
१४. सूलय (क, ख, घ, वृपा); मूसलय (ग) ।
१५. मुसढि (क, घ) ।
१६. कए (क, ग, घ) ।
१७. × (क, ग) ।
१८. इह पंचमीलोपो दृश्यः ।
१९. जीयकामत्थधम्महेउं (क, ख, घ, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठा हणंति, अणट्ठा हणंति, अट्ठा अणट्ठा दुहओ हणंति ।
हस्सा हणंति, वेरा हणंति, रतीए[1] हणंति 'हस्सा वेरा रतीए'[2] हणंति ।
कुद्धा हणंति, लुद्धा हणंति, मुद्धा हणंति, कुद्धा लुद्धा मुद्धा हणंति ।
अत्था हणंति, धम्मा हणंति, कामा हणंति, अत्था धम्मा कामा हणंति ।।

पाणवहस्स कत्तार-पदं

२०. कयरे[3] ? जे ते सोयरिया मच्छबंधा साउणिया वाहा कूरकम्मा[4] 'दीवित[5]-बंधप्पओग - तप्प- गल - जाल - वीरल्लग - आयसीदब्भवग्गुरा - कूडछेलिहत्था'[6] हरिएसा ऊणिया[7] य वीदंसग-पासहत्था वणचरगा लुद्धगा य महुघात-पोतघाया एणीयारा पएणीयारा सर-दह - दीहिअ - तलाग - पल्लल- परिगालण - मलण-सोत्तबंधण-सलिलासयसोसगा 'विस-गरलस्स य दायगा'[8] उत्तण-वल्लर-दवग्गि-णिद्दय-पलीवका ।।

२१. कूरकम्मकारी इमे य बहवे मिलक्खुया[9], के[10] ते ? —
सक जवण सवर बब्बर काय[11] 'मुरुंड उड्ड'[12] भडग निण्णग[13] पक्काणिय कुलक्ख गोड[14] सीहल पारस कोंच अंध दविल चिल्लल[15] पुलिंद आरोस डोंब पोक्कण[16] गंधहारग बहलीय जल्ल रोम[17] मास[18] बउस मलया य चुंचुया य चूलिय कोंकणगा[19] मेद[20] पल्हव[21] मालव मग्गर[22] आभासिया अणक्क चीण ल्हासिय खस

---

१. रती य (क, ख, ग, घ, च) ।
२. हस्सवेरा रती य (क, ख, ग, घ, च); अत्र एकारपरिवर्तनेन यकारो जातः । अस्याला-पकस्यानुसारेण 'हस्सा वेरा रतीए' एष पाठ उपयुक्तोस्ति, किन्तु लिपिकरणे परिवर्तनं जातम्, तेन 'हस्सा' स्थाने 'हस्स' तथा 'रतीए' स्थाने 'रतीय' इति जातम् ।
३. कयरे ते (क); घ्नन्तीति प्रश्नः (वृ) ।
४. कूरकम्मा वाउरिया (ग, च, वृपा) ।
५. दीविय (क); देविय (वृपा) ।
६. अग्रमालापकः क्वचित् कथंचिद् दृश्यते (वृ); °छेलियाहत्था (ग) ।
७. कुणिका (क्व); साउणिया (वृपा) ।
८. विसगरदायगा (क); विसगरलदायगा (ख); विसगरस्स° (घ) ।
९. मिलक्खुजाती (क, ख, ग, घ, च) ।
१०. किं (क, ख, ग, घ, च) ।
११. गाय (ख) ।
१२. मुरंडोद (ख, ग, घ, च); मुरुंड-उद (वृ) ।
१३. भित्तिय (ख, ग); तित्तिय (वृ) ।
१४. गोंड (ख, ग, घ, च) ।
१५. °बिल्लल (ख, ग, घ, च, वृ) ।
१६. पोक्काण (क, ख, ग, घ) ।
१७. राम (क, ख) ।
१८. मोस (क्व) ।
१९. कोंकणग (क) ।
२०. मेत (क, ख, ग, घ, च) ।
२१. पल्लव (क, घ); पण्हव (ख, वृ) ।
२२. महुर (च, वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खासिय नेद्दर[1] मरहट्ठ[2] मुट्ठिय आरब डोंबिलग कुहण केकय हूण रोमग रुरु मरुगा[3] चिलायविसयवासी य पावमतिणो,
जलयर-थलयर-'सणहप्पय-उरग'[4]-खहचर-संडासतोंड-जीवोवघायजीवी, सण्णी य असण्णिणो य पज्जत्ता असुभलेस्सपरिणामा[5] ॥

२२. एते अण्णे य एवमादी करेंति पाणातिवाय-करणं, पावा पावाभिगमा पावरुई[6] पाणवहकयरती पाणवहरूवाणुट्ठाणा पाणवहकहासु अभिरमंता तुट्ठा पावं करेत्तु होंति य बहुप्पगारं ॥

पाणवहस्स फलविवाग-पदं

२३. 'तस्स य पावस्स फलविवागं अयाणमाणा वड्ढेंति---महब्भयं अविस्साम-वेयणं दीहकालबहुदुक्खसंकडं[7] नरय-तिरिक्ख-जोणिं । इओ आउक्खए चुया[8] असुभकम्मबहुला उववज्जंति नरएसु हुलितं—महालएसु, वयरामय-कुड्ड-रुंद-निस्संधि - दारविरहिय[9] - निम्मद्दव[10] - भूमितल-खरामस्स[11]-विसम-णिरयघर-चारएसु[12], महोसिण-सयावतत्त[13]-दुग्गंध-विस्स-उव्वेयणगेसु[14] बीभच्छ[15]-दरिसणिज्जेसु, निच्चं हिमपडलसीयलेसु[16], कालोभासेसु[17] य, भीम-गंभीर-लोमहरिसणेसु, णिरभिरामेसु, निप्पडियार-वाहि-रोग-जरा-पीलिएसु[18], अतीवनिच्चंधकार-तिमिसेसु,[19] पतिभएसु, ववगय-गह-चंद-सूर-णक्खत्त-जोइसेसु, मेयवसामंसपडल-पुच्चड-पूयरुहिरुक्किण्ण-विलीण-चिक्कण-रसियावावण्ण-कुहियचिक्खल्लकद्दमेसु, कुकूलानल[20]-पलित्त- जाल - मुम्मुर- असिक्खुरकरवत्तधार-सुनिसितविच्छुयडंक-

---

१. मेद्दर (ख, ग, च)।
२. मढा (वृपा)।
३. एतानि च प्रायोलुप्तप्रथमाबहुवचनानि।
४. सणहप्फतोरग (क, ख, ग); सणफतोरग (घ, च)।
५. °परिणामे (क, ख, घ)।
६. पावरुती (ख, घ, च)।
७. °दुक्खवेयणं (क)।
८. 'तस्स' इति पदादारभ्य 'चुया' इति पदान्तः पाठः वृत्तिकारेण सर्वेषु आदर्शेषु नोपलब्धः, यथा—तस्सेत्यादि सूत्रं च क्वचिदेव दृश्यते (वृ)।
९. पार° (क, घ); यार° (ग); वार° (च)।
१०. निमद्दव (ख, ग, घ, च)।
११. खरामंस (क, घ); खरामस (ग, च); खरामरिस (क्व)।
१२. °नारएसु (ख)।
१३. सइयतत्त (क)।
१४. उव्वेयजणगेसु (क्व)।
१५. विभत्थ (ख, ग)।
१६. °सीयलेसु य (क, ग, घ, च)।
१७. काला° (क)।
१८. जलपीलिएसु (क); जरपोलिएसु (ग, घ)।
१९. तिमिएसु (क)।
२०. कुक्कुला° (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निवातोवम्म[1]-फरिस-अतिदुस्सहेसु, अत्ताणसरण-कडुयदुक्खपरितावणेसु, अणुबद्ध-निरंतरवेयणेसु, जमपुरिससंकुलेसु ।।

२४. तत्थ य अंतोमुहुत्तलद्धि-भवपच्चएणं निव्वत्तेंति य[2] ते सरीरं, हुंडं वीभच्छ-दरिसणिज्जं[3] बीहणगं अट्ठि-पहारु-णह-रोमवज्जियं 'असुभगंध-दुक्खविसहं'[4] ।।

२५. ततो य पज्जत्तिमुवगया इंदिएहिं पंचहिं वेदेंति असुभाए वेयणाए उज्जल-बल-विउल[5]-उक्कड-खर-फरुस-पयंड-घोर-बीहणग-दारुणाए, किं ते ?—
कंदुमहाकुंभियपयणपउलण-तवगतलणभट्ठभज्जणाणि य, लोहकडाहकढणाणि य, कोट्ट[6]-बलिकरण-कोट्टणाणि य, सामलितिक्खग्ग-लोहकंटक-अभिसरणापसरणाणि[7] फालण-विदालणाणि[8] य, अवकोडकबंधणाणि[9] य[10], लट्ठिसय-तालणाणि य, गलगबलुल्लंबणाणि य, सूलग्गभेयणाणि य, आएसपवंचणाणि, खिसणविमाणणाणि य, विधुट्ठपणिज्जणाणि, वज्झसयमातिकाणि य ।।

२६. एवं ते पुव्वकम्मकयसंचयोवतत्ता निरयग्गि-महग्गिसंपलित्ता गाढदुक्खं महब्भयं कक्कसं असायं सारीरं माणसं च तिव्वं दुविहं वेदेंति वेयणं, पावकम्मकारी बहूणि पलिओवम-सागरोवमाणि कलुणं पालेंति ते अहाउं[11] जमकाइय[12] तासिता य सद्दं करेंति भीया, किं ते ?—
अविभाव[13]-सामि-भाय-वप्प-ताय 'जियवं[14] मुय मे[15] मरामि दुब्बलो वाहि-पीलिओहं, किं दाणिऽसि ?
एवं दारुणे णिद्दओ य मा देहि मे पहारे, उस्सासेतं[16] मुहुत्तयं मे देहि, पसायं करेहि[17], मा रूस, वीसमामि, गेविज्जं मंच[18] मे मरामि, गाढं तण्हाइओ[19] अहं देहि पाणीयं,

---

१. °डंडक° (क, ख, ग, घ, च) ।
२. उ (ग, घ) ।
३. दुद्दरिसणिज्जं (ख, वृ) ।
४. असुभदुक्खविसहं (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।
५. तिउल (वृपा) ।
६. कोट्टकिरिया (वृपा) ।
७. अहिसरणोसारणाणि (क); °सारणाणि (ख, ग, घ, च) ।
८. विदारणाणि (क, ग) ।
९. अवकोडग° (ग) ।
१०. × (ख, घ, च) ।
११. अहाउयं (वृ) ।
१२. जमकातिय (क, ख, ग, घ, च) ।
१३. अविहाव (वृ) ।
१४. जितवं (ग) ।
१५. जियवम्मुय (ख, च) ।
१६. °नं (ख) ।
१७. करेह (ख, ग, घ, च, वृ) ।
१८. मुयह (क, ख, ग, घ, च) ।
१९. तण्हातिओ (ख, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता हंत[1] ! पिय इमं जलं विमलं सीयलं ति घेत्तूण य नरयपाला[2] तविय तउयं से देंति कलसेण अंजलीसु, दट्ठूण य तं पवेवियंगमंगा असुपगलंतपप्पुयच्छा छिण्णा तण्हा[3] इयम्ह कलुणाणि[4] जंपमाणा, विप्पेक्खंता दिसोदिसं[5], अत्ताणा असरणा अणाहा अबंधवा बंधुविप्पहूणा विपलायंति य मिगा व वेगेण भयुव्विग्गा[6], घेत्तूण बला पलायमाणाणं निरणुकंपा मुहं विहाडेत्तु लोहडंडेहिं कलकलं[7] ण्हं वयणंसि छुभंति केइ जमकाइया हसंता ॥

२७. तेण य दड्ढा संता रसंति य भीमाइं विस्सराइं, रुदंति[8] य कलुणगाइं पारेवतगा[9] व, एवं पलवित-विलाव-कलुणो कंदिय-बहुरुन्न-रुदियसद्दो परिदेविय[10]-रुद्ध-बद्धकारव-संकुलो णीसट्ठो "रसिय-भणिय-कुविय-उक्कूइय-निरयपालतज्जिय-मेण्ह, वकम, पहर, छिंद, भिंद, उप्पाडेहि, उक्खणाहि[11], कत्ताहि, विकत्ताहि य, भंज[12], हण, विहण, विच्छुभोच्छुभ[13], 'आकड्ढ, विकड्ढ'[14], किं ण जंपसि[15]? सराहि पावकम्माइं दुक्कयाइं"—एवं वयणमहप्पगब्भो पडिसुयासद्द-संकुलो तासओ[16] सया निरयगोयराण महाणगर-डज्झमाण-सरिसो निग्घोसो सुच्चए[17] अणिट्ठो तहियं नेरइयाणं जाइज्जंताणं जायणाहिं, किं ते ?—

असिवणदब्भवणजंतपत्थरसूइतलखारवाविकलकलेंतवेयरणिकलंबवालुयाजलिय-गुहनिरुंभण-उसिणोसिणकंटइल्लदुग्गमरहजोयणतत्तलोहपहगमणवाहणाणि ॥

२८. इमेहिं विविहेहिं आयुहेहिं[18], किं ते ?—

मोग्गर मुसुंढि[19] करकच सत्ति हल गय मुसल चक्क कोंत तोमर सूल लउल भिंडिमाल सव्वल[20] पट्टिस चम्मेट्ठ[21] दुहण मुट्ठिय असिखेडग खग्ग चाव नाराय

---

१. हंता (क्व)।
२. निरयवाला (क्व)।
३. तण्ह (क, ख, घ, च)।
४. वचनानीति गम्यते (वृ)।
५. °दिसि (क, घ)।
६. भउव्विग्गा (क) -
७. कलकल (ग, घ, च); त्रपुकमिति गम्यते।
८. रुयंति (क, ग); रुवंति (घ); रोवंति (च)।
९. °वयगा (क, ग)।
१०. परिवेदिय (क, ख, घ); परिवेविय (वृपा)।
११. उग्घाडेहुक्खणाहि (क); उप्पाडेहुक्खणाहि (ख, ग, घ, च)।
१२. भुज्जो; भुज्जो (क); भुज्जो (ख, ग, घ, च, वृ); अत्र वृत्तेः पाठान्तरं मूलपाठत्वेन स्वीकृतम्। 'भुज्जो' इति पदापेक्षया 'भंज' इति पदं क्रियापदप्रयोगे प्रासङ्गिकमस्ति।
१३. विच्छुब्भोच्छुब्भ (क); विछुभउछुभ (वृ); निछुभ° (वृपा)।
१४. आकट्ठ विकट्ठ (ख, ग, घ, च)।
१५. जानासि (वृपा)।
१६. विहणओ तासणओ पइब्भओ अइब्भओ(वृपा)।
१७. सुव्वए (ख, ग, घ)।
१८. आउहेहिं° (क, ग)।
१९. मुसंढि (क)।
२०. सद्दल (वृ)।
२१. चम्मेढ (क, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कणक कप्पणि वासि परसु टंकतिक्ख निम्मल[1], अण्णेहि य एवमादिएहिं असुभेहिं वेउव्विएहिं पहरणसतेहिं अणुबद्धतिव्ववेरा परोप्परं वेयणं उदीरेंति अभिहणंता ॥

२९. तत्थ य मोग्गरपहारचुण्णिय-मुसुंढिसंभग्गमहितदेहा जंतोपीलण[2]-फुरंत-कप्पिया केइत्थ सचम्मका विगत्ता णिम्मूलुल्लूण[3]-कण्णोट्ठणासिका छिण्णहत्थपादा असि-करकय-तिक्खकोंत-परसु-प्पहारफालिया[4] वासीसंतच्छितंगमंगा कलकलखार-परिसित्त-गाढडज्झंतगत्ता कुतग्गभिण्ण-जज्जरिय-सव्वदेहा विलोलंति महीतले विसूणियंगमंगा[5] ।

तत्थ य विग-सुणग-सियाल-काक-मज्जार - सरभ-दीविय-वियग्घ-सद्दूल-सीह-दप्पिय-खुहाभिभूतेहिं णिच्चकालमणसिएहिं घोरारसमाणभीमरूवेहिं अक्कमित्ता दढदाढागाढडक्ककड्ढिय[6] - सुतिक्खनहफालियउद्धदेहा विच्छिप्पंते समंतओ विमुक्कसंधिबंधणा वियंगिमंगा ।

कंक-कुरर-गिद्ध-घोरकट्ठवायसगणेहि य पुणो खरथिरदढणक्ख-लोहतुंडेहिं ओवतित्ता पक्खाहय-'तिक्खणक्खविक्खित्तजिब्भ-अंछियनयण'[7]-निद्दयोलुग्ग-विगतवयणा[8], उक्कोसंता य, उप्पयंता निपतंता भमंता पुव्वकम्मोदयोवगता पच्छाणुसएण[9] डज्झमाणा, णिदंता पुरेकडाइं कम्माइं पावगाइं, तहिं-तहिं तारिसाणि[10] ओसण्णचिक्कणाइं दुक्खाइं अणुभवित्ता, ततो य आउक्खएणं उव्वट्टिया समाणा बहवे गच्छंति तिरियवसहिं—दुक्खुत्तारं[11] सुदारुणं जम्मण-मरण-जरा-वाहि-परियट्टणारहट्टं जलथलखहचर-परोप्पर-विहिंसणपवंचं ॥

३०. इमं च जगपागडं[12] वराका दुक्खं पावेंति[13] दीहकालं, किं ते ?—

सीउण्हतण्हखुहवेयण-अप्पडीकारअडविजम्मण-णिच्चभउव्विग्गवास- जग्गणवध-बंधण-तालणंकण[14]-निवायण-अट्ठिभंजण-नासाभेय[15]-प्पहार -दूमण-छविच्छेयण-अभिओगपावण - कसंकुसार[16]-निवाय - दमणाणि वाहणाणि य, मायापिति-

---

१. ततस्तैरिति व्याख्येयम्, तृतीया बहुवचन-लोपदर्शनात् (वृ) ।
२. °पिलुण (ख, च) ।
३. °ल्लूय (क) ।
४. °फालिय (वृ); वृत्तिकारेण विभक्तिरहितं पदं लब्धम् । तेन अग्रिमपदेन सह समासः सूचितः ।
५. निग्गयग्गजीहा (वृपा) ।
६. दिढ (क) ।
७. °जिब्भंछिय° (क, ख, ग, घ, च) ।
८. ओलुत्तविगयगत्ता (वृपा) ।
९. पच्छणुसएण (ख, ग, घ) ।
१०. तारिसाहिं (क) ।
११. दुक्खुत्तरं (ख) ।
१२. °पगडं (ख, ग, च) ।
१३. पावंति (क, ख, घ, च) ।
१४. ताडणंकण (च) ।
१५. नासाभेद (ख, घ, च) ।
१६. कस-|-अंकुश+आर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विप्पयोग - सोयपरिपीलणाणि य, सत्थग्गिविसाभिघाय[1] - गलगवलाबलण-मारणाणि य, गलजालुच्छिप्पणाणि[2] पउलण-विकप्पणाणि य, जावज्जीविग-बंधणाणि पंजर-निरोहणाणि य, सज्जूह[3]-निद्धाडणाणि धमणाणि दोहणाणि य, कुडंड[4]-गलबंधणाणि वाड[5]-परिवारणाणि[6] य, पंकजलनिमज्जणाणि वारिप्प-वेसणाणि य, ओवायणिभंग-विसमणिवडण[7]-दवग्गिजाल-दहणाइयाइं ॥

३१. एवं ते दुक्खसय-संपलित्ता नरगाओ आगया इहं सावसेसकम्मा तिरिक्ख-पचेंदिएसु पावंति पावकारी कम्माणि पमाद-राग-दोस-बहुसंचियाइं अतीव-अस्साय[8]-कक्कसाइं ॥

३२. भमर-मसग-मच्छियाइएसु[9] य जाई[10]-कुलकोडिसयसहस्सेहिं नवहिं चउरिंदियाण तहिं-तहिं चेव जम्मण[11]-मरणाणि अणुभवंता कालं संखेज्जकं भमंति नेरइय-समाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण-घाण-चक्खुसहिया ॥

३३. तहेव तेइंदिएसु -- कुंथु[12]-पिपीलिका-अवधिकादिकेसु[13] य जाती-कुलकोडिसय-सहस्सेहिं अट्ठहिं अणूणएहिं तेइंदियाण तहिं-तहिं चेव जम्मण-मरणाणि अणुहवंता कालं संखेज्जकं भमंति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण[14]-घाण-संपउत्ता ॥

३४. 'तहेव बेइंदिएसु[15]'-गंडूलय[16]-जलुय[17]-किमिय-चंदणगमादिएसु य जाती-कुलकोडि-सयसहस्सेहिं सत्तहिं अणूणएहिं बेइंदियाण तहिं-तहिं चेव जम्मण-मरणाणि अणुहवंता कालं संखेज्जकं भमंति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण-संपउत्ता ॥

३५. पत्ता एगिंदियत्तणं पि य---पुढवि-जल-जलण-मारुय-वणप्फति-सुहुम-बायरं च पज्जत्तमपज्जत्तं पत्तेयसरीरणामसाहारणं च । पत्तेयसरीरजीविएसु य, तत्थवि कालमसंखेज्जगं भमंति, अणंतकालं च अणंतकाए फासिंदियभाव-संपउत्ता दुक्खसमुदयं इमं अणिट्ठं पावेंति[18] पुणो-पुणो तहिं-तहिं चेव परभव-तरुगणगहणे[19]

---

१. °विसघाय (क) ।
२. °लुछिप्पणाणि (क); °छुंपणाणि (ग); °छिप्पणाणि (च) ।
३. सयूह (ग) ।
४. कुदंड (ख, ग, च) ।
५. वाडग (ग, घ, च) ।
६. परिवालणाणि (क) ।
७. विसमपडण (क) ।
८. असाय (ग, च) ।
९. मच्छिमाइएसु (ख, घ); मच्छिगाइ° (ग,च)।
१०. जाइ (ग, च) ।
११. जणण (क) ।
१२. जंतु (क) ।
१३. अवहिकाइकेसु (ख, घ, च) ।
१४. रस (क) ।
१५. × (क, ख, घ) ।
१६. गंदूयल (क, ग, घ, च) ।
१७. जलूय (ग) ।
१८. पाविंति (ग); पावंति (च) ।
१९. तरुगणगणे (वृ); तरुगणगहणे (वृपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोट्टालकुलियदालण-सलिलमलण-खुंभण-रुंभण-अणलाणिल-विविहसत्थघट्टण-परोप्पराभिहणण-मारणविराहणाणि य अकामकाइं परप्पओगोदीरणाहिं[1] य कज्जप्पओयणेहिं[2] य पेस्सपसु-निमित्तं ओसहाहारमाइएहिं उक्खणण-उक्कत्थण-पयण-कोट्टण-पीसण-पिट्टण-भज्जण-गालण-आमोडण-सडण-फुडण-भंजण-छेयण-तच्छण-विलुंचण-पत्तज्झोडण-अग्गिदहणाइयाहिं ।।

३६. एवं ते भवपरंपरादुक्खसमणुबद्धा अडंति संसार-बीहणकरे जीवा पाणाइवाय-निरया अणंतकालं ।।

३७. जेवि य इह माणुसत्तणं आगया कहंचि नरगाओ[3] उव्वट्टिया अधण्णा, ते वि य दीसंति पायसो विकय-विगल-रूवा खुज्जा वडभा य वामणा य बहिरा काणा कुंटा य पंगुला 'विअला य मूका य[4] मम्मणा य अंधिल्लग[5]-एगचक्खुविणिहय-सचिल्लया[6] वाहिरोगपीलिय-अप्पाउय-सत्थवज्झ-वाला कुलक्खणुक्किण्णदेह-दुब्बल-कुसंघयण-कुप्पमाण-कुसंठिया कुरूवा किविणा य हीणा हीणसत्ता[7] निच्चं सोक्खपरिवज्जिया असुह-दुक्खभागी णरगाओ उव्वट्टिया इहं सावसेस-कम्मा ।।

३८. एवं णरग-तिरिक्खजोणिं कुमाणुसत्तं च हिंडमाणा पावंति अणंतकाइं दुक्खाइं पावकारी ।।

३९. एसो सो पाणवहस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चती[8], न य अवेदयित्ता[9] अत्थि हु मोक्खोत्ति[10]—एवमाहंसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो, कहेसी य पाणवहस्स फलविवागं ।।

निगमण-पदं

४०. एसो सो पाणवहो[11] चंडो रुद्दो खुद्दो अणारिओ निग्घिणो निस्संसो महब्भओ बीहणओ[12] तासणओ[13] अणज्जो[14] उव्वेयणओ[15] य निरवयक्खो[16] निद्धम्मो

---

१. °पयोगो° (ख, ग, च)।
२. °यणाहि (क)।
३. नरगा (ख, ग, घ, च)।
४. अवि य जलमूया (वृपा)।
५. अंधेल्लग (क)।
६. सपिसल्लया (वृपा)।
७. दीणा निस्सत्ता (क)।
८. ततः प्राणीति शेषः (वृ)।
९. तमिति शेषः (वृ)।
१०. अस्मादिति शेषः (वृ)।
११. पाणिवधो (ख, ग, घ, च)।
१२. बीभणओ (क, ग); बीभाणओ (ख, घ)।
१३. तासओ (क, ख, ग, घ)।
१४. द्रष्टव्यम्—प० १।२ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
१५. उव्वेवणओ (क, ख, ग, घ, च)।
१६. णिरावकंखो (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निप्पिवासो निक्कलुणो निरयवास-गमण-निधणो[1] मोह-महब्भय-पवड्ढओ[2] मरण वेमणंसो[3]। पढमं अहम्मदारं समत्तं।

—त्ति बेमि॥

———

१. निबंधणो (क)।
२. पयट्टओ (क, ख); पयट्ठओ (ग, घ)।
३. वेमणस्सो (ख, ग, घ, च); द्वितीयसूत्रवर्तीनि एतानि विशेषणानि अत्र न सन्ति, वृत्तिकारेणापि न व्याख्यातानि—साहसिओ पइभओ अतिभओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीअं अज्झयणं

बीअं आसवदारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू ! बितियं च[1] अलियवयणं—लहुसगलहु-चवल-भणियं भयंकर-दुहकर-अयसकर-वेरकरगं अरतिरति-रागदोस-मणसंकिलेस-वियरणं अलिय-नियडि-साति-जोयबहुलं नीयजण-निसेवियं निसंसं[2] अप्पच्चयकारकं परमसाहु-गरह-णिज्जं परपीलाकारकं परमकण्हलेस्ससहियं[3] दुग्गइविणिवायवड्ढणं[4] भव-पुणब्भवकरं चिरपरिचियमणुगतं दुरंतं[5]। बितियं अधम्मदारं ॥

अलियवयणस्स तीसनाम-पदं

२. तस्स य नामाणि गोण्णाणि होंति तीसं, तं जहा—१. अलियं २. सढं ३. अणज्जं ४. मायामोसो[6] ५. असंतकं ६. कूडकवडमवत्थु ७. निरत्थयमवत्थगं च ८. विद्देसगरहणिज्जं ९. अणुज्जगं[7] १०. कक्कणा य ११. वंचणा य १२. मिच्छापच्छाकडं च १३. साती १४. ओच्छन्नं[8] १५. उक्कूलं[9] च १६. अट्टं[10] १७. अब्भक्खाणं च १८. किब्बिसं १९. वलयं २०. गहणं च २१. मम्मणं च २२. नूमं २३. नियती[11] २४. अप्पच्चओ २५. असमओ २६. असच्चसंधत्तणं २७. विवक्खो २८. अवहीयं[12] २९. उवहि-असुद्धं ३०. अवलोवो त्ति ।

---

१. × (ख, ग)।
२. निस्संसं (ग)।
३. °लेससहियं (क)।
४. °पवड्ढणं (क)।
५. दुरंतं कोत्तितं (ख, ग, घ, च)।
६. मायामोहं (क)।
७. अणज्जुगं (च)।
८. ओत्थत्तं (क, वृपा)।
९. उक्कलं (वृपा)।
१०. आट्टं (ख)।
११. नियडी (ग, च)।
१२. आणाइयं (वृपा)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवि य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं सावज्जस्स अलियस्स वइजोगस्स अणेगाइं ।।

अलियवयणस्स पगार-पदं

३. तं च पुण वदंति केई अलियं पावा असंजया अविरया कवडकुडिल-कडुय-चडुलभावा[1] कुद्धा लुद्धा 'भया य'[2] हस्सट्ठिया[3] य सक्खी चोरा चारभडा खंडरक्खा जियजूईकरा[4] य गहिय-गहणा कक्कगुरुग[5]-कारगा कुलिंगी उवहिया वाणियगा य कूडतुला[6] कूडमाणी कूडकाहावणोवजीवी पडकार-कलाय-कारुइज्जा वंचणपरा चारिय-चडुयार[7]- नगरगुत्तिय[8]-परिचारग-दुट्ठवायि-सूयक-अणवलभणिया य पुव्वकालियवयण-दच्छा साहसिका लहुस्सगा असच्चा गारविया असच्चट्ठावणाहिचित्ता उच्चच्छंदा अणिग्गहा अणियता छंदेण मुक्क-वायी भवंति अलियाहि जे अविरया ।।

४. अवरे नत्थिकवादिणो वामलोकवादी भणंति—सुण्णं[9] । नत्थि जीवो । न जाइ इह 'परे वा'[10] लोए । न य किंचिवि फुसति पुण्णपावं । नत्थि फलं सुकय-दुक्क-याणं । पंचमहाभूतियं सरीरं भासंति ह[11] वातजोगजुत्तं । पंच य खंधे भणंति केई । मणं च मणजीविका वदंति । वाउजीवोत्ति एवमाहंसु । सरीरं सादियं सनिधणं इह भवे 'एगे भवे'[12], तस्स विप्पणासम्मि[13] सव्वनासोत्ति—एवं जंपंति मुसावादी ।।

५. तम्हा दाणव्वय[14]-पोसहाणं तव-संजम-बंभचेर-कल्लाणमाइयाणं नत्थि फलं, नवि[15] य पाणवह-अलियवयणं, न चेव चोरिक्ककरण-परदारसेवणं[16] वा सपरिग्गह-पावकम्मकरणं पि नत्थि किंचि[17], न नेरइय-तिरिय-मणुयाण जोणी, न देवलोगो वत्थि, न य अत्थि सिद्धिगमणं, अम्मापियरो वि नत्थि, नवि अत्थि पुरिसकारो,

---

१. चटुल० (ख, ग, घ, च) ।
२. अस्मिन् कर्तृपदप्रकरणे वृत्तिकृता चतुर्थ्यन्त पञ्चम्यन्तं वा व्याख्यातं 'भया य' इति पदं नैव संगच्छते । सम्भवतः 'भयट्ठा' अथवा 'भयट्ठा य' इति पदं आसीत्, किन्तु लिपि-करणक्रमे परिवर्तितमिवाभाति ।
३. हस्सट्ठि (क); हस्सट्ठाय (वृपा) ।
४. °जुयकरा (ख) ।
५. °कुरुग (क); °कुरग (ख, ग, च); °कुरूग (घ) ।
६. कूडतुल (ग) ।
७. चाटुयार (ख); चटुयार (ग, च) ।
८. नगरगोत्तिय (ग) ।
९. जगदिति गम्यते (वृ) ।
१०. परेच्च (क, च); परिच्च (घ) ।
११. हे (वृ) ।
१२. × (ख, ग, च) ।
१३. विप्पणासे (क); विप्पणासंसि (च) ।
१४. दाणवत (क, च) ।
१५. नेवि (ख, च) ।
१६. परदारा° (क) ।
१७. किंपि (क, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चक्खाणमवि नत्थि, नवि अत्थि कालमच्चू, अरहंता चक्कवट्टी बलदेव-वासुदेवा नत्थि, नेवत्थि केइ रिसओ, धम्माधम्मफलं च नवि अत्थि किंचि बहुयं च थोवं[1] वा।

तम्हा एवं विजाणिऊण[2] जहा सुबहु-इंदियाणुकूलेसु सव्वविसएसु वट्टह। नत्थि काइ किरिया वा अकिरिया वा - एवं भणंति नत्थिकवादिणो वामलोगवादी ॥

६. इमं पि बिइयं कुदंसणं असब्भाववाइणो पण्णवेंति मूढा—संभूतो अंडकाओ लोको। सयंभुणा सयं च निम्मिओ। एवं एतं अलियं, पयावइणा इस्सरेण य कयं ति केई[3]। एवं विण्हुमयं कसिणमेव य जगं ति केई ॥

७. एवमेके वदंति मोसं—एको आया अकारको वेदको य सुकयस्स दुक्कयस्स य करणाणि कारणाणि सव्वहा सव्वहिं च निच्चो य निक्किओ निग्गुणो य अणु-वलेवओत्ति[4] वि य ॥

८. एवमाहंसु असब्भावं—जंपि इहं किंचि जीवलोके दीसइ सुकयं वा दुक्कयं वा एयं जदिच्छाए वा, सहावेण वावि दइवतप्पभावओ वावि भवति, 'नत्थेत्थ किंचि कयकं तत्तं[5]'।

लक्खण-विहाण नियती य कारिया—एवं केइ जंपंति इड्ढिरससातगारवपरा, बहवे करणालसा परूवेंति धम्मवीमंसएणं मोसं ॥

९. अवरे अहम्माओ रायदुट्ठं अब्भक्खाणं भणंति अलियं- चोरोत्ति[6] अचोरियं करेंतं, डामरिओत्ति वि य एमेव उदासीणं, दुस्सीलोत्ति य परदारं गच्छतित्ति मइलिति सीलकलियं, अयंपि गुरुतप्पओत्ति, अण्णे एवमेव भणंति उवहणंता[7], मित्तकलत्ताइं सेवंति अयंपि लुत्तधम्मो, इमो वि वीसंभघायओ पावकम्मकारी अकम्मकारी अगम्मगामी, अयं दुरप्पा बहुएसु य पातगेसु[8] जुत्तोत्ति—एवं जपंति[9] मच्छरी[10] भद्दके व[11] गुण-कित्ति-नेह-परलोग-निप्पिवासा ॥

१०. एवं ते अलियवयणदच्छा परदोसुप्पायणप्पसत्ता वेढेंति अक्खइय-बीएण अप्पाणं कम्मबंधणेण मुहरी असमिक्खियप्पलावी, निक्खेवे अवहरंति परस्स अत्थंमि गढियगिद्धा, अभिजुंजंति य परं असंतएहिं[12], लुद्धा य करेंति कूडसक्खित्तणं, असच्चा अत्थालियं च कन्नालियं च भोमालियं च तहा गवालियं च गरुयं भणंति अहरगतिगमणं ॥

---

१. थोवकं (क)।
२. जाणिऊण (ख, ग, घ, च)।
३. केयि (ख, घ, च); केति (ग)।
४. अण्णो अलेवओत्ति (वृपा)।
५. नत्थि किंचि कयं तत्तं (वृपा)।
६. चोरित्ति (क)।
७. तद्धृतिकीर्त्यादिकमिति गम्यते (वृ)।
८. पावगेसु (ग, च)।
९. भणंति (क)।
१०. मच्छरीया (ग)।
११. वा (ग, च)।
१२. दूषणैः इति गम्यम् (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. अण्णंपि य जाति-रूव-कुल-सील-पच्चय-मायाणिगुणं चवला पिसुणं परमट्ठभेदकं असंतकं विद्देसमणत्थकारकं पावकम्ममूलं दुद्दिट्ठं दुस्सुयं अमुणियं निल्लज्जं लोकगरहणिज्जं वह-बंध-परिकिलेस-बहुलं जरा-मरण-दुक्खसोयनेम्मं असुद्ध-परिणाम-संकिलिट्ठं भणंति अलियाहिसंधि-निविट्ठा[1], असंतगुणुदीरका य संतगुण-नासका य हिंसाभूतोवघातितं अलियसंपउत्ता वयणं सावज्जमकुसलं साहुगरह-णिज्जं अधम्मजणणं भणंति अणभिगत-पुन्नपावा ॥

१२. पुणो य अधिकरण-किरिया-पवत्तगा बहुविहं अणत्थं अवमद्दं अप्पणो परस्स य करेंति, एमेव[2] जंपमाणा महिससूकरे य साहेंति घायगाणं, ससय-पसय-रोहिए य साहेंति वागुरीणं[3], तित्तिर-वट्टक-लावके य कविंजल-कवोयके य साहेंति साउणीणं, झस-मगर-कच्छभे य साहेंति मच्छियाणं, संखंके खुल्लए य साहेंति मगराणं[4], अयगर-गोणस-मंडलि-दव्वीकर-मउली य साहेंति[5] वालवीणं[6], गोहा-सेहा य सल्लग-सरडगे य साहेंति लुद्धगाणं, गयकुल-वानरकुले य साहेंति पासियाणं, सुक-बरहिण-मयणसाल-कोइल-हंसकुले सारसे य साहेंति पोसगाणं, वध-बंध-जायणं च साहेंति गोम्मियाणं, धण-धन्न-गवेलए य साहेंति तक्कराणं, गाम-नगर-पट्टणे य साहेंति[7] चारियाणं पारघाइय[8]-पंथघातियाओ साहेंति य गंठिभेयाणं, कयं च चोरियं नगरगोत्तियाणं, लंछण-निल्लंछण[9]-धमण-दुहण-पोसण-वणण-दुमण-वाहणादिधाइं 'साहेंति बहूणि'[10] गोमियाणं, धातु-मणि-सिल-प्पवाल-रयणागरे य साहेंति आगरीणं, पुप्फविहिं फलविहिं च साहेंति मालियाणं, अग्घमहुकोसए य साहेंति वणचराणं, जंताइं विसाइं मूलकम्म-आहेवण[11]-आभि-ओगमंतोसहिप्पओगे चोरिय-परदारगमण-बहुपावकम्मकरणं ओखंदे[12] गामघाति याओ वणदहण-तलागभेयणाणि बुद्धि-विसय[13]-विणासणाणि वसीकरणमादियाइं भयमरण-किलेस-दोसजणणाणि[14] भाव-बहुसंकिलिट्ठ-मलिणाणि भूतघातोवघा-तियाइंसच्चाणि वि ताइं हिंसकाइं वयणाइं उदाहरंति ॥

१३. पुट्ठा व अपुट्ठा वा परतत्तिवावडा य असमिक्खियभासिणो उवदिसंति सहसा — उट्ठा गोणा गवया दमंतु, परिणयवया अस्सा हत्थी गवेलग-कुक्कुडा य किज्जंतु,

---

१. संकिलिट्ठा (ख, ग); संनिविट्ठा (च)।
२. एवमेव (ख)।
३. वगुरीणं (क); वग्गुरीणं (ख)।
४. मगिणा (वृपा)।
५. साहंति (क); साहिति (ख)।
६. बालियाण (वृपा)।
७. साहिंति (क)।
८. तृतीयाध्ययनस्य तृतीये सूत्रे 'पुरघाय- पंथघायग'[10] इति पाठो दृश्यते। अत्रापि तथाविधः पाठः परिकल्प्यते।
९. निलंछण (क)।
१०. बहूणि साहेंति (क)।
११. आहिच्चणं, आविधणं च (वृपा)।
१२. ओखंधे (क, ख, ग, घ, च)।
१३. विस (क, ग, घ, च)।
१४. कर्तुरिति गम्यते (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किणावेध[1] य, विक्केह, पयह, सयणस्स देह[2], पिय, धय[3], दासि-दास-भयक-भाइल्लका य सिस्सा य पेसकजणो कम्मकरा किंकरा य एए, सयण-परिजणो य कीस अच्छंति ? भारिया मे करेत्तु[4] कम्मं, गहणाइं वणाइं खेत्त[5]-खिलभूमि-वल्लराइं उत्तण-घण-संकडाइ डज्झंतु[6] सूडिज्जंतु य, रुक्खा भिज्जंतु जंतभंडाइयस्स उवहिस्स कारणाए[7] बहुविहस्स[8] य अट्ठाए, उच्छू दुज्जंतु, पीलियंतु य तिला, पयावेह य इट्टकाओ[9] घरट्ठयाए[10], च्छेत्ताइं कसह, कसावेह य लहुं गाम-नगर-खेड-कब्बडे निवेसेह अडवीदेसेसु विपुलसीमे, पुप्फाणि य फलाणि य कंदमूलाइं कालपत्ताइं गेण्हह[11], करेह संचयं परिजणट्ठयाए[12], साली वीही जवा य लुच्चंतु मलिज्जंतु उप्पणिज्जंतु[13] य, लहुं च पविसंतु य कोट्ठागारं, अप्पमहुक्कोसगा य हम्मंतु पोयसत्था, सेणा निज्जाउ[14] जाउ[15] डमरं, घोरा वट्टंतु य संगामा, पवहंतु य सगड-वहणाइं, उवणयणं चोलगं विवाहो जन्नो अमुगम्मि होउ दिवसेसु करणेसु मुहुत्तेसु नक्खत्तेसु तिहिम्मि य, अज्ज होउ ण्हवणं मुदितं बहुखज्जपेज्ज-कलियं, कोउकं विण्हावणकं संतिकम्माणि कुणह, ससि-रवि-गहोवराग-विसमेसु सज्जण-परियणस्स य नियकस्स य जीवियस्स परिरक्खणट्ठयाए पडिसीसकाइं च देह, देह य सीसोवहारे[16] विविहोसहि-मज्ज-मंस-भक्खण्णपाण-मल्लाणुलेवण-पईवजलिउज्जलसुगंधधूवावकार-पुप्फफल[17]-समिद्धे, पायच्छित्ते करेह, पाणाइ-वायकरणेण बहुविहेणं, विवरीयुप्पाय[18]-दुस्सिमिण-पावसउण-असोमग्गहचरिय-अमंगलनिमित्त-पडिघायहेउं वित्तिच्छेयं करेह, मा देह किंचि दाणं, 'सुट्ठुहओ-सुट्ठुहओ'[19] सुट्ठुछिण्णो भिण्णोत्ति उवदिसंता ।।

१४. 'एवं विविहं'[20] करेंति अलियं मणेण वायाए कम्मुणा य अकुसला अणज्जा अलियाणा अलियधम्मणिरया अलियासु कहासु अभिरमंता तुट्ठा अलियं करेत्तु होंति य बहुप्पयारं ।।

---

१. किणावेव (क) ।
२. देध (ख) ।
३. वाचनान्तरेण खादत पिबत दत्त च (वृ) ।
४. करेंतु (क, वृपा) ।
५. च्छेत्त (क) ।
६. पाठांतरेण गहनानि वनानि छिद्यन्ताम् (वृ) ।
७. वाचनान्तरे तु यत्र भांडस्य उक्तरूपस्य कारणात् (वृ) ।
८. बहुविधस्य च कार्यसमूहस्येति गम्यम् (वृ) ।
९. इट्ठगाओ (क) ।
१०. मम घरट्ठयाए (ख, ग, घ, च) ।
११. गेण्हेह (क) ।
१२. परिजणस्स अट्ठाए (ख, ग, च) ।
१३. अप्पुणिज्जंतु (क) ।
१४. निज्जाओ (क) ।
१५. जाओ (क) ।
१६. देवतानामिति गम्यते (वृ) ।
१७. पुप्फरडल (क) ।
१८. विपरीतउप्पाय (ख); विवरीउप्पाय (ग, घ, च) ।
१९. सुट्ठुहओ (क, ग, घ, च) ।
२०. एवंविहं (क, ख); एवं तिविहं (ग, वृपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अलियवयणस्स फलविवागपदं

१५. तस्स य अलियस्स फलविवागं अयाणमाणा वड्ढेंति महब्भयं अविस्सामवेयणं दीहकालं बहुदुक्खसंकडं नरय-तिरिय-जोणिं। तेण य अलिएण समणुबद्धा आइद्धा पुणब्भवंधकारे भमंति भीमे दुग्गतिवसहिमुवगया ॥

१६. तेय दीसंतिह दुग्गगा दुरंता परव्वसा अत्थभोगपरिवज्जिया असुहिता 'फुडियच्छवी बीभच्छा विवन्ना'[1] खरफरुस-विरत्त-ज्झाम-ज्झुसिरा निच्छाया लल्ल-विफल-वाया असक्कतमसक्कया अगंधा अचेयणा दुभगा अकंता काकस्सरा हीणभिण्णघोसा विहिंसा जडबहिरंधया[2] य मम्मणा अकंत-विकय[3]-करणा णीया णीयजण-निसेविणो लोग-गरहणिज्जा भिच्चा असरिसजणस्स पेस्सा दुम्मेहा लोक-वेद-अज्झप्प-समयसुतिवज्जिया नरा धम्मबुद्धि-वियला ॥

१७. अलिएण य 'ते डज्झमाणा'[4] असंतएणं अवमाणण-पट्टिमंस-अहिक्खेव-पिसुणभेयण-गुरु-बंधव-सयण-मित्तवक्खारणादियाइं अब्भक्खाणाइं बहुविहाइं पावेंति अमणोरमाइं[5] हियय-मण-दूमकाइं जावज्जीवं दुरुद्धराइं[6] अणिट्ठखरफरुसवयण-तज्जण-निब्भच्छण-दीणवदणविमणा कुभोयणा कुवाससा कुवसहीसु किलिस्संता नेव सुहं नेव निव्वुइं उवलभंति अच्चंत-विपुल-दुक्खसय-संपलित्ता[7] ॥

१८. एसो सो अलियवयणस्स फलविवाओ इहलोइओ पारलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चइ, न य अवेदयित्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति—एवमाहंसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो, कहेसी य अलिय-वयणस्स फलविवागं ॥

निगमण-पदं

१९. एयं तं बितियंपि अलियवयणं लहुसगलहु-चवल-भणियं भयंकर-दुहकर-अयसकर-वेरकरगं अरतिरति-रागदोस-मणसंकिलेस-वियरणं अलिय-नियडि-साति-जोगबहुलं नीयजण-निसेवियं निस्संसं अप्पच्चयकारकं परमसाहु-गरहणिज्जं परपीलाकारकं परमकण्हलेससहियं दुग्गतिविनिवायवड्ढणं भव-पुणब्भवकरं चिरपरिचियमणुगयं दुरंतं। बितियं अधम्मदारं समत्तं।

—त्ति बेमि ॥

---

१. फुडियच्छविवीभच्छविवन्ना (ख,ग,घ,च,वृ)।
२. जडबहिरमूका (क, ख, ग, घ, च, वृपा)।
३. °विकंत (ख, ग, च); अकृतानि विकृतानि च विरूपतयाकृतानि (वृपा)।
४. तेण य डज्झमाणा (ग)।
५. अणुवमाणि (वृ); अमणोरमाइं (वृपा)।
६. दुद्धराइं (क)।
७. संपउत्ता (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइयं अज्झयणं

तइयं आसवदारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू ! तइयं च अदिण्णादाणं[1]—हर-दह-मरण-भय-कलुस-तासण-परसंतिगऽभेज्जलोभमूलं काल-विसम-संसियं अहोऽच्छिण्णतण्ह-पत्थाण-पत्थोइमइयं अकित्तिकरणं अणज्जं छिद्दमंतर[2]-विधुर-वसण-मग्गण-उस्सव-मत्त-प्पमत्त-पसुत्त-वंचणाखिवण[3]-घायणपर-अणिहुयपरिणामतक्करजणबहुमयं अकलुणं रायपुरिसरक्खियं सया साहुगरहणिज्जं पियजण-मित्तजण-भेदविप्पीतिकारकं रागदोसबहुलं पुणो य उप्पूर-समर-संगाम-डमर-कलि-कलह-वेहकरणं दुग्गति-विणिवायवड्ढणं भव-पुणब्भवकरं चिरपरिचितमणुगयं दुरंतं । तइयं अधम्मदारं ।।

अदिण्णादाणस्स तीसनाम-पदं

२. तस्स य णामाणि गोण्णाणि होंति तीसं, तंजहा—१. चोरिक्कं २. परहडं ३. अदत्तं ४. कूरिकडं[4] ५. परलाभो[5] ६. असंजमो ७. परधणम्मि गेही ८. लोलिक्का[6] ९. तक्करत्तणं ति य १०. अवहारो ११. हत्थलहुत्तणं[7] १२. पावकम्मकरणं १३. तेणिक्का[8] १४. हरण-विप्पणासो १५. आदियणा १६. लुंपणा धणाणं १७. अप्पच्चओ १८. ओवीलो १९. अक्खेवो २०. खेवो

---

१. अदिन्नदाणं (क, ख, घ) ।
२. वाचनान्तरे त्विदमेव पठ्यते—छिद्रविषम-पापकं च (वृ) ।
३. वंचणक्खिवण (ग, च) ।
४. कूरिकरं (क) कूरिकयं (ख); क्वचित्तु 'कुरु-टुककृतं' दृश्यते (वृ) ।
५. परलोभो (क, ख, ग, घ, च) ।
६. लोलिक्कं (ग) ।
७. हत्थलत्तणं (वृ); हत्थलहुत्तणं (वृपा) ।
८. तेणक्कं (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. विक्खेवो २२. कूडया २३. कुलमसी य २४. कंखा २५. लालप्पण-पत्थणा य २६. 'आससणाय वसणं'[1] २७. इच्छा मुच्छा य २८. तण्हा गेही २९. नियडिकम्मं ३०. अपरच्छ त्ति ।
अवि य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं अदिण्णादाणस्स[2] पाव-कलिकलुस-कम्मबहुलस्स अणेगाइं ।।

चोरिय-चोरपगार-पदं

३. तं च पुण करेंति चोरियं तक्करा परदव्वहरा छेया कयकरण-लद्धलक्खा साहसिया लहुस्सगा अतिमहिच्छ-लोभगत्था[3], दद्दर-ओवीलका य गेहिया अहिमरा अणभंजका[4] भग्गसंधिया रायदुट्ठकारी य विसयनिच्छूढा[5] लोकवज्झा, उद्दहक[6]-गामघाय-पुरघाय-पंथघायग-आलीवग[7]-तित्थभेया लहुहत्थ-संपउत्ता जूईकरा[8] खंडरक्ख-त्थीचोर-पुरिसचोर-संधिच्छेया य गंथिभेदग-'परधणहरण-लोभावहार-अक्खेवी हडकारक[9]-निम्मद्दग-गूढचोर-गोचोर-अस्सचोरग-दासिचोरा य एकचोरा ओकड्डक-संपदायक-उच्छिपक-सत्थघायक-बिलकोली-कारका य निग्गाह-विप्पलुंपगा[10] बहुविहतेणिक्कहरणबुद्धी,[11] एते अण्णे य एवमादी परस्स दव्वाहि जे अविरया ।।

रण्णो परधणहरण-पदं

४. विपुलबल-परिग्गहा य बहवे रायाणो परधणम्मि गिद्धा[12] चउरंग-समत्त[13] बलसमग्गा निच्छिय-वरजोह-जुद्धसद्धिय-'अहमहमिति' दप्पिएहिं सेन्नेहिं[14] संपरिवुडा पउम-सगड-सूइ-चक्क-सागर-गरुलवूहाइएहिं[15] अणिएहिं उत्थरंता अभिभूय हरंति परधणाइं ।।

धणत्थं जुद्ध-पदं

५. अवरे रणसीसलद्धलक्खा संगाममम्मि अतिवयंति सण्णद्धबद्धपरियर-उप्पीलिय-

---

१. आसासणाय वसणं (क, च); वसण (वृ); आससणाय वसणं (वृपा) ।
२. अदिण्णदाणस्स (क, ग) ।
३. °घत्था (क) ।
४. अणभंजक (ख, ग, घ, वृ) ।
५. °निच्छूढ (क, ग, घ) ।
६. उद्दोहक (वृ); उद्दहक (वृपा) ।
७. आदीवक (ख) ।
८. जूइकरा (क, घ); जूयिकरा (ख, च) ।
९. परधणलोभावहारअक्खेवहडकारगा (वृपा) ।
१०. विलुंपका (ख, घ, च) ।
११. बहुविहतहवहरणबुद्धी (वृपा) ।
१२. गिद्धा सए दव्वे असंतुट्ठा परविसए अभिहणंति लुद्धा परधणस्स कज्जे (क,ख,ग,घ,च, वृपा) ।
१३. विभत्त (वृ); समत्त (वृपा) ।
१४. भिच्चेहिं (वृ); सेन्नेहिं (वृपा) ।
१५. °वूहत्तिएहि (क, ग, घ, च); °वूहाहिएहि (ख); वूहाचितेहिं (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिंधपट्ट-गहियाउहपहरणा माढि-गुड-वम्मगुडिया[1] आविद्धजालिका कवय[2]-कंकडइया[3] उरसिरमुह-बद्धकंठतोण-भाइयवरफलगरचित-पहकर-सरभस-खरचावकर-करंछिय-सुनिसितसरवरिसचडकरक-मुयंतघणचंडवेग-धारानिवाय-मग्गे,[4] अणेगधणुमंडलग्ग-संधित-उच्छलियसत्तिकणग-वामकरगहियखेडग-निम्मलनिक्किट्ठखग्ग - पहरंतकोंत - तोमर - चक्क-गया-परसु-मुसल-लंगल-सूल-लउल[5] - भिंडिमाल - सब्बल -पट्टिस - चम्मेट्ठ - दुघण-मोट्ठिय[6]-मोग्गर-वरफलिह-जंतपत्थर - दुहण-तोण - कुवेणी- पीढकलिए, ईली - पहरण-मिलिमिलिमिलंत-खिप्पंत-विज्जुज्जलविरचितसमप्पहणतले, फुडपहरणे, महारण-संख-भेरि-वरतूर-पउरपडुपडहाहय-णिणाय-गंभीरणंदित-पक्खुभियविपुलघोसे, हय-गय-रह-जोह-तुरिय-पसरित-रउद्धत-तमंधकारबहुले, कातरनर-णयणहियय-वाउलकरे, विलुलिय - उक्कडवर - मउड - तिरीड - कुंडलोडुदामाडोविय-पागडपडाग-उसियज्झय[7]-वेजयंति-चामरचलंत-छत्तंधकारगंभीरे, हयहेसिय-हत्थिगुलुगुलाइय-रहघणघणाइय - पाइक्कहरहराइय-अप्फोडियसीहनाय-छेलिय-विघुट्ठुक्कुट्ठ-कंठकयसद्द-भीमगज्जिए, सयराहहसंत-रुसंत-कलकलरवे, आसूणियवयण-रुद्दभीम-दसणाधरोट्ठ-गाढदट्ठ-सप्पहारणुज्जयकरे, अमरिसवस-तिव्वरत्त-निद्दारितच्छे, वेरदिट्ठि-कुद्धचेट्ठिय-तिवलीकुडिलभिउडि-कयनिलाडे, वधपरिणय-नरसहस्स-विक्कम-वियंभियबले, वग्गंततुरंग-रहपहाविय-समरभडा-वडिय-छेय-लाघव-पहारसाधित - समूसवियबाहुजुयल-मुक्कट्टहास-पुक्कंत[8]-बोल-बहुले, फुरफलगावरणगहिय[9]-गयवरपत्थंत-दरियभडखल-परोप्परवलग्ग-जुद्धगव्विय - विउसितवरासिरोसतुरियअभिमुहपहरंत - छिन्नकरिकर-वियंगित-करे[10], अवइद्ध-निसुद्धभिन्न-फालिय-पगलिय-रुहिरकय-भूमिकद्दम-चिलिच्चिल-पहे, कुच्छिदालिय - गलंत-निभेलितंत-फुरुफुरंत[11]-विगल-मम्माहय-विकय[12]-गाढदिन्नपहारमुच्छित - रुलंत - विब्भल[13] - विलावकलुणे हयजोह - भमंततुरग-उद्दाममत्तकुंजर-परिसंकितजण - निवुक्कच्छिन्नधय - भग्गरहवर - नट्ठसिरकरि-

---

१. माढिवरवम्मगुडिया(वृ); माढिगुडवम्मगुडिया (वृपा)।
२. कवया (ख, च)।
३. कंककडइया (क)।
४. °निवायमंते (वृपा)।
५. लउड° (ख)।
६. मुट्ठि (क); मोट्ठि (ख)।
७. °धय (ख, च)।
८. फुक्कंत (ख, घ, च)।
९. फलफलगा° (क, ग, घ); फडफलगा° (च)।
१०. विभंगितकरे (क, ख, ग, घ, च)।
११. फुरफरेंत (क, घ)।
१२. विहिय (ख, च)।
१३. बेब्भल (ख, ग, घ, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलेवराकिण्ण - पडिय - पहरणविकिण्णाभरणभूमिभागे[1], नच्चंतकबंधपउर-भयंकरवायस-परिलेंतगिद्धमंडल-भमंतच्छायंधकारगंभीरे ।
वसु-वसुह-विकंपितव्व पच्चक्खपिउवणं परमरुद्द-बीहणगं दुप्पवेसतरगं अभिवडंति[2] संगामसंकडं परधणं महंता ।।

लूंटाक-पदं

६. अवरे पाइक्कचोरसंघा सेणावई चोरवंदपागड्डिका[3] य अडवीदेसदुग्गवासी काल-हरित-रत्त-पीत-सुक्किल-अणेगसयबिंधपट्ट-बद्धा परविसए अभिहणंति लुद्धा धणस्स कज्जे ।।

सामुद्दियचोर-पदं

७. रयणागरसागरं उम्मीसहस्समालाकुलाकुलविओयपोतकलकरेंतकलियं, पायालसहस्स-वायवसवेगसलिलउद्धम्ममाण-दगरयरयंधकारं, वरफेणपउरधवल-पुलंपुलसमुट्ठियट्टहासं, मारुयविच्छुब्भमाणपाणिय-जलमालुप्पील-'हुलियं, अवि य'[4] समंतओ खुभिय-लुलिय-खोखुब्भमाण-पक्खलिय-चलियविपुलजलचक्कवाल-महानईवेगतुरियआपूरमाण - गंभीरविपुलआवत्तचवल-भममाणगुप्पमाणुच्छलंत-पच्चोणियत्तपाणिय - पधावियखरफरुसपयंडवाउलियसलिलफुट्टंतवीचिकल्लोल-संकुलं, महामगर-मच्छ-कच्छभ-ओहार गाह-तिमि-सुंसुमार-सावय-समाहय-समुद्दायमाणक-पूरघोरपउरं, कायरजण-हिययकंपणं, घोरमारसंतं महब्भयं भयंकरं पतिभयं उत्तासणगं अणोरपारं आगासं चेव निरवलंबं, उप्पाइयपवण-धणियनोल्लिय-उवरुवरितरंगदरिय-अतिवेगवेग[5] चक्खुपहमुत्थरंतं, कत्थइ गंभीरविपुलगज्जिय-गुंजिय-निग्घाय-गरुयनिवतित-सुदीहनीहारि-दूरसुव्वंतगंभीर-धुगुधुगेंतसद्दं, पडिपहरुंभंत-जक्खरक्खसकुहंडपिसायरुसियतज्जायउवसग्ग-सहस्ससंकुलं[6], बहुप्पाइयभूयं[7], विरचितबलिहोमधूवउवचार-दिन्नरुधिरच्चणा-करणपयत - जोगपयय-चरियं, परियंतजुगंतकालकप्पोवमं, दुरंतं, महानई-नईवइ - महाभीमदरिसणिज्जं, दुरणुचरं[8] विसमप्पवेसं दुक्खुत्तारं दुरासयं लवणसलिलपुण्णं असिय-सिय-समूसियगेहिं दच्छतरेहिं[9] वाहणेहिं अइवइत्ता समुद्दमज्झे हणंति गंतूण जणस्स पोते ।।

---

१. °विणिकिण्णा° (क)।
२. अभिवदंति (क); अभिवयंति (ग); अति-पतंति (वृ)।
३. °पागट्टिका (ख, च)।
४. हुलियकं पि य (क,ग); हुलिकं तं पि य (ख, घ); हुलियं तं पि य (च)।
५. लुप्ततृतीयैकवचनदर्शनात् (वृ)।
६. °पिसायपडिगज्जिय° (वृ); °पिसायरुसि-यतज्जाय° (वृपा)।
७. उवद्दवाभिभूयं (वृपा)।
८. दुरणुच्चरं (ग)।
९. हत्थतरेहिं (क, ख, ग, घ, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दारुणचोर-पदं

८. परदव्वहरणनिरणुकंपा[1] निरवयक्खा गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-णिगम-जणवते य धणसमिद्धे हणंति, थिरहियय-छिण्णलज्जा वंदिग्गह-गोग्गहे य गेण्हंति, दारुणमती णिक्किवा णियं हणंति, छिंदंति गेहसंधि, निक्खित्ताणि य हरंति धणधन्नदव्वजायाणि जगवयकुलाणं णिग्घिणमती परस्स दव्वाहिं जे अविरया ।।

अदिण्णादाणस्स फलविवाग-पदं

९. तहेव केई अदिण्णादाणं[2] गवेसमाणा कालाकालेसु संचरंता चियका-पज्जलिय-सरस-दरदड्ढ-कड्ढिय-कलेवरे, रुहिरलित्तवयण-अक्खत[3]-खातियपीत[4]-डाइणि-भमंतभयकर-जंबुयखिखियंते[5], घूयकय-घोरसद्दे, वेयालुट्ठिय-निसुद्ध-कहकहंत-पहसित-व्वीहणक-निरभिरामे, अतिदुब्भिगंध[6]-बीभच्छदरिसणिज्जे, सुसाणे वण-सुन्नघर - लेण - अंतरावण - गिरिकंदर - विसमसावय - समाकुलासु वसहीसु किलिस्संता, सीतातव-सोसिय-सरीरा दड्ढच्छवी निरय-तिरिय-भवसंकड-दुक्खसंभार-वेयणिज्जाणि पावकम्माणि संचिणंता, दुल्लहभक्खन्नपाणभोयणा पिवासिया भुक्खिया किलंता मस-कुणिम-कंद-मूल-जंकिंचिकयाहारा उव्विग्गा उप्पुया[7] असरणा अडवीवासं उवेंति वालसत-संकणिज्जं ।

अयसकरा तक्करा भयंकरा 'कास हरामो' त्ति अज्ज दव्वं इति सामत्थं करेंति गुज्झं । बहुयस्स जणस्स कज्जकरणेसु विग्घकरा मत्त-पमत्त-पसुत्त[8]-वीसत्थ-छिद्दघाती वसणब्भुदएसु हरणबुद्धी विगव्व[9] रुहिरमहिया परिति नरवतिमज्जाय-मतिक्कंता[10] सज्जणजणदुगुंछिया[11] सकम्मेहिं पावकम्मकारी असुभपरिणया य दुक्खभागी निच्चाविल[12]-दुहमनिव्वुइमणा इहलोके चेव किलिस्संता परदव्वहरा नरा वसणसयसमावण्णा ।।

१०. तहेव केइ[13] परस्स दव्वं गवेसमाणा गहिता य हया य बद्धरुद्धा य तरितं[14] अति-

---

१. परदव्वहरा नरा निरणुकंपा (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।
२. अदिण्णदाणं (क, ग, घ, च) ।
३. अदर (वृपा) ।
४. खतिय° (क, ख, घ) ।
५. °खिक्खियंते (क, ख, ग, घ, च) ।
६. दुरभिगंध (वृ) ।
७. अफुया (ख) ।
८. पासुत्त (क, च) ।
९. वगव्व (क) ।
१०. °मतिक्कमंता (क) ।
११. °दुग्गंछिया (ख, घ); °दुगंछिया (ग) ।
१२. निच्चाइल (क, ग, घ); निच्चाउल (ख, वृपा) ।
१३. केयि (क, ख, घ) ।
१४. तुरियं (ग); तुरितं (च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धाडिया पुरवरं समप्पिया चोरग्गाह-चारभड-चाडुकराण तेहिं[1] य कप्पडप्पहार-निद्दय-आरक्खिय-खर-फरुस-वयण-तज्जण-गलत्थल्ल-उत्थल्लणाहिं विमणा चारगवसहिं पवेसिया निरयवसहिसरिसं ॥

११. तत्थवि गोम्मिकप्पहार-दूमण-निब्भच्छण-कडुयवयण-'भेसणग-भयाभिभूया'[2] अक्खित्त-नियंसणा मलिणदंडिखंडवसणा उक्कोडा-लंच-पास-मग्गण-परायणेहिं गोम्मिकभडेहिं विविहेहिं बंधणेहिं, किं ते ? हडि-नियड[3]-बालरज्जुय-कुदंडग-वरत्त[4]-लोहसंकल-हत्थंदुय-वज्झपट्ट-दामक-णिक्कोडणेहिं, अण्णेहि य एवमादिएहिं गोम्मिक[5]-भंडोवकरणेहिं दुक्खसमुदीरणेहिं संकोडण-मोडणाहिं[6] वज्झंति मंदपुण्णा ॥

१२. संपुड-कवाड-लोहपंजर-भूमिघर-निरोह-कूव-चारग-खीलग[7]-जुय[8]-चक्क-वितत-बंधण-खंभालण-उद्धचलणबंधण-विहम्मणाहि य विहेडयंता, अवकोडकगाढ-उरसिरबद्ध-उद्धपूरित[9]-फुरंतउरकडग[10] मोडणामेडणाहिं[11] बद्धा य नीससंता, सीसावेढ - ऊरुयाल[12]-चप्पडगसंधिबंधण[13] - तत्तसलागसूइयाकोडणाणि तच्छण-विमाणणाणि य खार-कडुय-तित्त-नावण-जायण-कारणसयाणि बहुयाणि पावि-यंता, उरखोडीदिन्नगाढपल्लण-अट्ठिकसंभग्ग-सपंसुलिगा[14], गल-कालकलोहदंड-उर-उदर-वत्थि-पट्ठि-परिपीलिता, मच्छंत[15]-हियय-संचुण्णियंगमंगा ॥

१३. आणत्तीकिंकरेहिं केति अविराहिय-वेरिएहिं जमपुरिस-सन्निहेहिं पहया ते तत्थ मंदपुण्णा, चडवेला-वज्झपट्ट-पाराइ-छिव-कस-लत-वरत्त-वेत्त-प्पहारसयताडि-यंगमगा, किविणा[16] लंबंतचम्म-वण-वेयण-विमुहियमणा, घणकोट्टिम-नियल[17]-जुयलसंकोडिय-मोडिया य कीरंति निरुच्चारा, एया अण्णा य एवमादीओ वेयणाओ पावा 'पावेंति अदंतिदिया'[18] वसट्टा बहुमोहमोहिया परधणम्मि लुद्धा

---

१. तेहिं (क) ।
२. भेसणगाभिभूया (वृ); भेसणगभयाभिभूता (वृपा) ।
३. नियल (ख, घ, च) ।
४. वरत्ता (ख) ।
५. गोभिक (क) ।
६. भोडणेहिं (ख, घ, च) ।
७. कीलग (च) ।
८. जूय (ग) ।
९. उद्धपुरीय (क, वृपा) ।
१०. इह प्रथमाबहुवचनलोपो दृश्यस्ततश्च मोटनास्फोडनाभ्यामित्येतदुत्तरत्र योज्यते (वृ) ।
११. मोडणाहिं (ख, ग, घ, च) ।
१२. गुरुयाल (क); ऊरुयावल (वृपा) ।
१३. चप्पडसंधि° (ख, घ, च) ।
१४. सपंसुलिग्गा (क) ।
१५. इह थकारस्य छकारादेशो छान्दसत्वाद् (वृ) ।
१६. किविणा (क) ।
१७. नियड (ख) ।
१८. पावंतदंतिंदिया (ख, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फासिंदियविसय-तिव्वगिद्धा, इत्थिगय-रूव-सद्द-रस-गंध-इट्ठ-रति-महितभोग-तण्हाइया य धणतोसगा गहिया य जे नरगणा ।।

१४. पुणरवि ते कम्मदुव्वियड्ढा उवणीया रायकिंकराणं तेसिं वधसत्थगपाढयाणं विलउलीकारकाणं लंचसयगेण्हगाणं कूड-कवड-माया-नियडि-आयरण-पणिहि-वंचण-विसारयाणं बहुविहअलियसयजंपकाणं परलोकपरम्मुहाणं निरयगति-गामियाणं ।।

१५. तेहिं य आणत्त-जीयदंडा तुरिय[1] उग्घाडिया पुरवरे सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु वेत्त-दंड-लउड-कट्ठ-लेट्ठु-पत्थर-पणालि-पणोल्लि-मुट्ठि-लया-पाद-पण्हि-जाणु-कोप्पर-पहारसंभग्ग-महियगत्ता[2] अट्ठारस-कम्मकारणा[3] जाइयंगमंगा कलुणा सुक्कोट्ठकंठगलकतालुजिब्भा जायंता पाणीयं विगयजीवियासा तण्हादिता[4] वरागा तंपि य ण लभंति वज्झपुरिसेहिं घाडियंता ।।

१६. तत्थ य खरफरुसपडहघट्टित-कूडग्गह-गाढरुट्ठनिसट्ठपरामट्ठा वज्झकरकुडिजुय-नियत्था, सुरत्तकणवीर-गहिय-विमुकुल[5]-कंठेगुणवज्झदूत-आविद्ध-मल्लदामा मरणभयुप्पण्णसेयमायतणेहुत्तुपियकिलिन्नगत्ता चुण्णगुंडियसरीरा रयरेणुभरिय-केसा कुसुंभगोक्खिण्णमुद्धया[6] छिण्णजीवियासा घुण्णंता वज्झपाणपीता[7] तिलं-तिलं चेव छिज्जमाणा सरीरविक्किर्त्त[8]-लोहिओलित्त-कागणिमंसाणि खावियंता पावा खरकरसएहिं तालिज्जमाणदेहा वातिकनरनारिसंपरिवुडा पेच्छिज्जंता य नागरजणेण, वज्झनेवत्थिया पणेज्जंति नयरमज्झेण, किवणकलुणा अत्ताणा असरणा अणाहा अबंधवा बंधुविप्पहीणा विपेक्खंता दिसोदिसिं, मरणभयुव्विग्गा आघायण-पडिदुवार-संपाविया अधण्णा सूलग्ग-विलग्ग-भिण्णदेहा ।।

---

१. तरियं (क, ग, घ) ।

२. मथित ° (क, ख) ।

३. चोरः चोरापको मन्त्री,
भेदज्ञः काणकक्रयी ।
अन्नदः स्थानदश्चैव,
चोरः सप्तविधः स्मृतः ।।१।।
भलनं कुशलं तर्जा,
राजभागोऽवलोकनम् ।
अमार्गदर्शनं शय्या,
पदभङ्गस्तथैव च ।।२।।
विश्रामः पादपतनं,
आसनं गोपनं तथा ।
खण्डस्य खादनं चैव,
तथाऽन्यन्माहराजिकम् ।।३।।
पथाऽन्युदकरज्जूनां,
प्रदानं ज्ञानपूर्वकम् ।
एताः प्रसूतयो ज्ञेया,
अष्टादश मनीषिभिः ।।४।। (वृ)

४. तण्हातिता (क, च) ।

५. विमुक्कल (ख, च) ।

६. कुसुंभगोखिन्न ° (क); कुसुमगोखण्ण-मुद्धया (क्व); कुसुंभगोक्किन्न ° (क्व) ।

७. वज्झयाणभीया (क, वृपा) ।

८. सरीरविक्किंत (ख, ग); सरीरविक्कत (घ, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. ते य तत्थ कीरंति परिकप्पियंगमंगा, उल्लंबिज्जंति रुक्खसालेहिं केई कलुणाइं विलवमाणा, अवरे चउरंग-धणियबद्धा पव्वयकडगा पमुच्चंते[1] दूरपात-बहुविसम-पत्थरसहा, अण्णे य गयचलण-मलण-निमद्दिया कीरंति पावकारी, अट्ठारस-खंडिया य कीरंति मुंडपरसूहिं, केई उक्कत्तकण्णोट्ठनासा[2] उप्पाडियनयणदसण-वसणा जिब्भंछिय-छिण्णकण्णसिरा पणिज्जंते[3], छिज्जंते य असिणा, निव्विसया छिण्णहत्थपाया य पमुच्चंते, जावज्जीवबंधणा[4] य कीरंति केइ परदव्वहरणलुद्धा कारग्गलनियलजुयलरुद्धा चारगाए—हतसारा सयणविप्पमुक्का मित्तजण-निरक्कया[5] निरासा बहुजणधिक्कारसद्दलज्जाविता अलज्जा[6] अणुबद्धखुहा-परद्धा[7] सीउण्हतण्हवेयणदुहट्टघट्टिय[8]-विवण्णमुह-विच्छवीया विहलमइलदुब्बला किलंता कासंता वाहिया य आमाभिभूयगत्ता परूढनहकेसमंसुरोमा छग-मुत्तम्मि-णियगम्मि खुत्ता तत्थेव मया अकामका बंधिऊण पादेसु कड्ढिया खाइयाए छूढा ॥

१८. तत्थ य वग-सुणग-सियाल-कोल-मज्जारवंद-संदंसगतुंड[9]-पक्खिगणविविहमुहसय-विलुत्तगत्ता कय-विहंगा ॥

१९. केइ किमिणा य कुथितदेहा अणिट्ठवयणेहिं सप्पमाणा—सुट्ठुकयं जं मउति पावो, तुट्ठेण जणेण हम्ममाणा[10] लज्जावणका य होंति सयणस्सवि दीहकालं मया संता ॥

२०. पुणो परलोगसमावण्णा नरगे गच्छंति निरभिरामे अंगारपलित्तककप्प-अच्चत्थ-सीतवेदण-अस्साओदिण्ण-सततदुक्खसयसमभिद्दुते ॥

२१. ततोवि उव्वट्टिया समाणा पुणोवि पवज्जंति तिरियजोणिं । तहिंपि निरयोवमं[11] अणुभवंति[12] वेयणं ते ॥

२२. अणंतकालेण जति नाम कहिंचि मणुयभावं लभंति[13] णेगेहिं णिरयगतिगमण-तिरियभव-सयसहस्स-परियट्टएहिं[14]। तत्थवि य भवंतऽणारिया नीचकुलसमुप्पण्णा आरियजणेवि लोगवज्झा तिरिक्खभूता य अकुसला कामभोगतिसिया जहिं

---

१. पमुच्चति (ख, घ)।
२. उक्खित्त° (ख); उक्कित्त° (घ, च)।
३. प्रणीयन्ते आघातस्थानमिति गम्यते (वृ)।
४. जावज्जीय° (क)।
५. °निरिक्कया (क, ग)।
६. अणज्जा (क)।
७. °पारद्ध (ख, ग, वृ); °परद्ध (घ, वृपा)।
८. °तण्हा° (क)।
९. संडाससतुंड (क, घ, च)।
१०. भण्णमाणा (क)।
११. निरओवमं (ख)।
१२. अणुहवंति (क, घ)।
१३. लहंति (ख, घ, च)।
१४. परियट्टेहिं (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निबंधंति निरयवत्तिणि[1], भवप्पवंचकरण-पणोल्लि[2], पुणोवि 'संसार-णेमे'[3] धम्मसुति-विवज्जिया अणज्जा कूरा मिच्छत्तसुति-पवण्णा य होंति एगंतदंडरुइणो, वेढेंता कोसिकारकीडो व्व अप्पगं अट्ठकम्मतंतु-घणबंधणेणं ।।

२३. एवं नरग-तिरिय-नर-अमर-गमणपेरंतचक्कवालं जम्मणजरमरणकरण[4]-गंभीरदुक्ख-पखुभियपउरसलिलं संजोगवियोगवीची[5]-चिंतापसंगपसरिय-वहबंध-महल्लविपुलकल्लोल-कलुणविलवित-लोभकलकलिंतबोलबहुलं अवमाणणफेण-तिव्वखिसण-पुलंपुलप्पभूयरोगवेयण-पराभवविणिवात--फरुसधरिसणसमावडिय-कढिणकम्मपत्थर - तरंगरंगंत - निच्चमच्चुभय - तोयपट्ठं कसायपायाल-संकुलं भवसयसहस्सजलसंचयं अणंतं उव्वेयणयं अणोरपारं महब्भयं भयंकरं पइभयं अपरिमियमहिच्छ-कलुसमतिवाउवेगउद्धम्ममाण--आसापिवासपायाल-कामरति-रागदोसवंधण-वहुविहसंकप्पविपुलदगरयरयंधकारं, मोहमहावत्तभोगभममाण-गुप्पमाणुव्वलंतवहुगब्भवास - पच्चोणियत्तपाणिय - पधावितवसणसमावण्ण[6]-रुण्णचंडमारुयसमाहयाऽमणुण्णवीचीवाकुलित - भंगफुट्टंतजनिट्ठकल्लोलसंकुलजलं, पमायबहुचंडदुट्ठसावयसमाहय[7]-उट्ठायमाणगपूरघोरविद्धंसणत्थबहुलं, अण्णाण-भमंतमच्छपरिहत्थ - अनिहुतिंदियमहामगरतुरियचरियखोखुब्भमाण - संताव-निच्चय - चलंतचवलचंचल-अत्ताणाऽसरणपुव्वकयकम्मसंचयोदिण्णवज्जवेइज्ज-माण[8]-दुहसयविपाकघुण्णंतजलसमूहं, इट्ठिरससायगारवोहारगहियकम्मपडिबद्ध-सत्त[9] - कड्ढिज्जमाणनिरयतलहुत्तसण्णविसण्णबहुलं, अरइरइभयविसायसोग-मिच्छत्तसेलसंकडं, अणातिसंताणकम्मबंधणकिलेसचिक्खल्लसुदुत्तारं, अमरनर-तिरियनिरयगतिगमणकुडिलपरियत्तविपुलवेलं, हिंसालय - अदत्तादाण[10]- मेहुण-परिग्गहारंभ-करणकारावणाणुमोदण-अट्ठाविहअणिट्ठकम्मपिंडित-गुरुभारोक्कंत-दुग्गजलोघदूरणिवोलिज्जमाण[11]-उम्मग्गनिमग्गदुल्लभतलं, सारीरमणोमयाणि

---

१. °वत्तणि (ख, ग, घ, च) ।
२. पणोल्लि—प्रणोदीनि, अत्र द्वितीयाबहुवचन-लोपो दृश्यः (वृ) ।
३. संसारणेममूले (क, ख, घ); संसारावत्त-णेममूले (ग, च): वृत्तिकृता 'नेम त्ति मूलं' इति व्याख्यातम् । अनेन ज्ञायते मूलमिति पदं व्याख्याङ्गमस्ति, न तु मूलपाठाङ्गम् । उत्तरकालीनादर्शेषु अस्य पदस्य मूलपाठे समावेशो जातः । 'इह च मूलाइति वाच्ये मूल इत्युक्तं प्राकृतत्वेन लिङ्गव्य-त्ययादिति'—वृत्तिकृता विवरणमिदं व्याख्या-गतमूलपदमाश्रित्य कृतम् ।
४. जम्मजरा° (ग, च) ।
५. वीई (क); वीति (ख, घ) ।
६. पबाहिय° (वृपा) ।
७. पव्वात° (क); पम्मात° (ख, ग, घ) ।
८. °वेज्जमाण (ख, वृ) ।
९. °गारवापहार° (ख) ।
१०. अदत्तदाण (क, ख, ग, घ) ।
११. °पोलिज्जमाण (क, ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुक्खाणि उप्पियंता, सातस्सायपरितावणमयं उव्वुडुनिवुडुयं करेंता, चउरंत-महंतमणवयग्गं रुद्दं संसारसागरं अट्ठियअणालंबणपतिठाणमप्पमेयं, चुलसीति-जोणिसयसहस्सगुविलं, अणालोकमंधकारं, अणंतकालं निच्चं उत्तत्थ-सुण्ण-भय-सण्णसंपउत्ता वसंति उव्विग्गवासवसहिं ।।

२४. जहिं-जहिं आउयं[1] निबंधंति पावकारी बंधवजण-सयण-मित्तपरिवज्जिया अणिट्ठा भवंतऽणादेज्ज - दुव्विणीया कुट्ठाणासण - कुसेज्ज-कुभोयणा असुइणो कुसंघयण-कुप्पमाण-कुसंठिया कुरूवा बहुकोह-माण-माया-लोभा बहुमोहा धम्मसण्ण - सम्मत्त - परिब्भट्ठा[2] दारिद्दोवद्दवाभिभूया, निच्चं परकम्मकारिणो जीवणत्थरहिया किविणा[3] परपिंडतक्कका दुक्खलद्धाहारा अरस-विरस-तुच्छ-कयकुच्छिपूरा, परस्स पेच्छंता रिद्धिसक्कार-भोयणविसेस-समुदयविहिं निंदंता अप्पकं कयंत च, परिवयंता इह यं[4] पुरेकडाइं कम्माइं पावगाइं[5], विमणा सोएण डज्झमाणा परिभूया होंति सत्तपरिवज्जिया य, छोभा सिप्प-कला-समयसत्थ-परिवज्जिया जहाजायपसुभूया अचियत्ता णिच्चनीयकम्मोवजीविणो लोयकुच्छणिज्जा मोहमणोरह-निरासबहुला आसापासपडिबद्धपाणा अत्थो-पायाण-कामसोक्खे य लोयसारे होंति अपच्चंतगा य सुट्ठुवि य उज्जमंता, तद्दिवसुज्जुत्त-कम्मकयदुक्ख-संठविय-सित्थपिंड-संचयपरा खोणदव्वसारा, निच्चं अधुवधण-धण्ण-कोस-परिभोग-विवज्जिया, रहिय-काम-भोग-परिभोग-सव्व-सोक्खा परसिरिभोगोवभोगनिस्साण[6]-मग्गणपरायणा वरागा अकामिकाए विणेंति दुक्खं, णेव सुहं णेव निव्वुतिं उवलभंति, अच्चंतविपुलदुक्खसय-संपलित्ता परस्स दव्वेहिं जे अविरया ।।

२५. एसो सो अदिण्णादाणस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ[7] बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चति न य अवेयइत्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति --एवमाहंसु णायकुलणंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो[8], कहेसी य अदिण्णादाणस्स[9] फलविवागं ।।

निगमण-पदं

२६. एयं तं ततियंपि अदिण्णादाणं[10] हर-दह-मरण-भय-कलुस-तासण-परसंतिकऽभेज्ज-

---

१. आउगं (क, ख, ग) ।
२. पमट्ठा (ख, ग, घ) ।
३. किवणा (ख, ग, घ) ।
४. × (ख, घ, च) ।
५. पावकारिणः (वृपा)
६. °निसण्ण (ख, ग) ।
७. महब्भयो (ख, च) ।
८. वरवीर° (ख, घ, च) ।
९. अदिण्णदाणस्स (क, ख, ग, घ) ।
१०. अदिण्णदाणं (क, ख, ग, घ, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोभमूलं[1] •[2]काल - विसम - संसियं अहोऽच्छिण्णतण्ह - पत्थाण-पत्थोइमइयं अकित्तिकरणं अणज्जं छिद्दमंतर-विधुर-वसण-मग्गण-उस्सव-मत्त-प्पमत्त-पसुत्त-वंचणाखिवण - धायणपर - अणिहुयपरिणाम - तक्करजणबहुमयं अकलुणं रायपुरिसरक्खियं सया साहुगरहणिज्जं पियजण-मित्तजण-भेदविप्पीतिकारकं रागदोसबहुलं पुणो य उप्पूर-समर-संगाम-डमर-कलि-कलह-वेहकरणं दुग्गति-विणिवायवड्ढणं भव-पुणब्भवकरं ० चिरपरिगतमणुगतं दुरंतं । ततियं अहम्मदारं समत्तं ।

—त्ति बेमि ॥

---

१. ०भिज्जणा० (क, ग); ०ऽभिज्ज० (ख, घ, च)। २. सं० पा०—एवं जाव चिरपरिगत० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थं अज्झयणं

चउत्थं आसवदारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू ! अबंभं च चउत्थं—सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पत्थणिज्जं, पंक-पणग[1]-पासजालभूयं, थी-पुरिस-नपुंसगवेदचिंधं तव-संजम-बंभचेर-विग्घं भेदाययण[2]-बहुपमादमूलं कायरकापुरिससेवियं सुयणजणवज्जणिज्जं उड्ढं नरग-तिरिय-तिलोक्कपइट्ठाणं, जरा-मरण-रोग-सोगबहुलं वध-बंध-विघाय-दुव्विघायं दंसण-चरित्तमोहस्स हेउभूयं चिरपरिचियमणुगय[3] दुरंतं । चउत्थं अधम्मदारं ॥

अबंभस्स तीसनाम-पदं

२. तस्स य णामाणि गोण्णाणि इमाणि होंति तीसं, तं जहा—१. अबंभं २. मेहुणं ३. चरंत[4] ४. संसग्गि ५. सेवणाधिकारो ६. संकप्पो ७. वाहणा[5] पदाणं ८. दप्पो ९. मोहो १०. मणसंखोभो ११. अणिग्गहो १२. वुग्गहो[6] १३. विघाओ १४. विभंगो १५. विब्भमो १६. अधम्मो १७. असीलया १८. गामधम्मतत्ती १९. रती २०. रागो[7] २१ कामभोग-मारो २२. वेरं २३ रहस्सं २४. गुज्झं २५. बहुमाणो २६. बंभचेर-विग्घो २७. वावत्ति २८. विराहणा २९. पसंगो ३०. कामगुणो त्ति ।

अवि य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं ॥

---

१. पणय (ग) ।
२. भेदायण (ख, ग, घ, च) ।
३. चिरपरिगय° (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।
४. चउत्थं (वृ); चरंतं (वृपा) ।
५. पाहणा (क) ।
६. विग्गहो (ख, च) ।
७. रागचिंता (क, ख, ग, घ, च वृपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरगणस्स अबंभ-पदं

३. तं च पुण निसेवंति सुरगणा सअच्छरा मोह-मोहिय-मती, असुर-भुयग[1]-गरुल-विज्जु-जलण-दीव-उदहि-दिस[2]-पवण-थणिया । अणवण्णिय-पणवण्णिय-इसि-वादिय-भूयवादियकंदिय-महाकंदिय-कूहंड-पतगदेवा[3], पिसाय-भूय-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस - महोरग - गंधव्व - तिरिय- जोइस-विमाणवासि-मणुयगणा, जलयर-थलयर-खहयरा य मोहपडिबद्धचित्ता अवितण्हा कामभोगतिसिया, तण्हाए बलवईए महईए समभिभूया गढिया य अतिमुच्छिया य, अबंभे ओसण्णा, तामसेण भावेण अणुम्मुक्का[4], दंसण-चरित्तमोहस्स पंजरं पिव करेंति 'अण्णोण्णं सेवमाणा'[5] ॥

चक्कवट्टिस्स अबंभ-पदं

४. भुज्जो असुर-सुर-तिरिय-मणुय-भोगरति-विहार-संपउत्ता य चक्कवट्टी सुरनरवतिसक्कया सुरवरव्व देवलोए भरह[6]-णग-णगर-णियम-जणवय-पुरवर-दोणमुह-खेड-कव्वड-मडंब-संबाह-पट्टण-सहस्समंडियं थिमिय-मेयणियं एगच्छत्तं ससागरं भुंजिऊण वसुहं नरसीहा नरवई नरिंदा नरवसभा मरुय-वसभकप्पा, अब्भहियं रायतेय-लच्छीए दिप्पमाणा सोमा रायवंस-तिलगा ।

रवि-ससि-संख-वरचक्क - सोत्थिय - पडाग-जव-मच्छ-कुम्म-रहवर-भग-भवण-विमाण-तुरय[7]-तोरण-गोपुर-मणि-रयण-नंदियावत्त-मुसल-णंगल-सुरइयवरकप्प-रुक्ख-मिगवति-भद्दासण-सुरुचि[8] - थूभ-वरमउड-सरिय - कुंडल-कुंजर-वरवसभ-दीव-मंदिर-गरुल-द्धय-इंदकेउ - दप्पण - अट्ठावय - चाव-बाण-नक्खत्त-मेह-मेहल-वीणा-जुग-छत्त-दाम-दामिणि-कमंडलु-कमल-घंटा-वरपोत-सुइ-सागर-कुमुदगार-मगर-हार-गागर-नेउर-णग-णगर-वइर- किन्नर - मयूर - वररायहंस - सारस-चकोर-चक्कवागमिहुण-चामर - खेडग -पव्वीसग-विपंचि-वरतालियंट-सिरिया-भिसेय-मेइणि-'खग्ग-अंकुस'[9]-विमलकलस - भिंगार-वद्धमाणग-पसत्थ-उत्तमविभ-त्तवर-पुरिसलक्खणधरा ।

बत्तीसं रायवरसहस्साणुजायमग्गा[10] चउसट्ठिसहस्सपवरजुवतीण णयणकंता

---

१. भुयंग (क) ।
२. दिसि (ख, च) ।
३. पतंग० (क, ग, ग, घ, च) ।
४. अणुमुक्का (क, ख, ग, घ, च); आदर्शेषु एतत् पदं लभ्यते. किन्तु नैतत् शुद्धमस्ति । उन्मुक्तपदस्य प्राकृतरूपं 'उम्मुक्क' इति जायते । न उम्मुक्का=अणुम्मुक्का ।
५. अण्णमण्णं० (च); अण्णोण्णस्स सेवणया (वृ); अण्णोण्णं सेवमाणा (वृपा) ।
६. भरध (क, ग) ।
७. तुरत (क); तुरग (ख, घ, च) ।
८. सुरुवि (क, घ, च)
९. खग्गंकुस (क, ख, ग, घ, च) ।
१०. वरराय० (क, ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रत्ताभा पउमपम्ह - कोरंटगदाम - चंपक-सुतवितवरकणकनिहसवण्णा सुजाय-सव्वंगसुंदरंगा महग्घ-वरपट्टणुग्गय - विचित्तराग-एणि - पेणि[1]-णिम्मिय[2]-दुगुल्ल-वरचीणपट्ट - कोसेज्ज-सोणीसुत्तक - विभूसियंगा वरसुरभिगंध - वरचुण्णवास-वरकुसुमभरिय-सिरया[3] कप्पिय-छेयायरियसुकय-रइतमाल-कडगंगय[4]-तुडिय-पवरभूसण-पिणद्धदेहा एकावलिकंठसुरइयवच्छा पालंबपलंबमाणसुकयपड-उत्तरिज्जमुद्दियापिंगलंगुलिया उज्जल-नेवत्थ-रइय-चिल्लग-विरायमाणा तेएण दिवाकरोव्व दित्ता सारय[5]-नवथणिय-महुर-गंभीर-निद्धघोसा उप्पण्णसमत्तरयण-चक्करयणप्पहाणा नवनिहिवइणो समिद्धकोसा चाउरंता चाउराहिं सेणाहिं समणुजाइज्जमाणमग्गा तुरगवती गयवती रहवती नरवती विपुलकुलविस्सु-यजसा सारयससिसकल-सोमवयणा सूरा तेलोक्क-निग्गय-पभावलद्धसद्दा समत्तभरहाहिवा नरिंदा, ससेलवण-काणणं च हिमवंत-सागरंतं धीरा भुत्तूण भरहवासं, जियसत्तू पवररायसीहा पुव्वकडतवप्पभावा निविट्ठ-संचियसुहा[6] अणेगवाससयमायुवंतो भज्जाहि य जणवयप्पहाणाहिं लालियंता अतुल-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे य अणुभवित्ता तेवि उवणमंति मरणधम्मं, 'अवितित्ता कामाणं'[7] ॥

बलदेव-वासुदेवस्स अबंभ-पदं

५. भुज्जो[8] बलदेव-वासुदेवा य पवरपुरिसा महाबलपरक्कमा महाधणुवियट्टगा महासत्तसागरा दुद्धरा धणुद्धरा नरवसभा रामकेसवा भायरो सपरिसा वसुदेव-समुद्दविजयमादियदसाराणं, पज्जुण्ण - पयिव[9] - संब-अनिरुद्ध - निसढ - उम्मुय-सारण-गय-सुमुह-दुम्मुहादीण जायवाणं अद्धट्ठणावि कुमारकोडीणं हिययदयिया, देवीए रोहिणीए देवीए देवकीए य आणंदहिययभावनंदणकरा सोलस रायवरसहस्साणुजातमग्गा सोलसदेवीसहस्स-वरणयण-हिययदयिया णाणामणि-कणग-रयण-मोत्तिय-पवाल-धण-धन्नसंचय - रिद्धि - समिद्धकोसा, हय-गय-रह-सहस्ससामी गामागर - णगर-खेड - कव्वड - मडंब - दोणमुह-पट्टणासम-संबाह-सहस्सथिमियनिव्वुयपमुदितजण - विविहसस्सनिप्फज्जमाणमेइणि[10] - सर-सरिय-तलाग-सेल-काणण-आरामुज्जाण-मणाभिरामपरिमंडियस्स दाहिणड्ढवेयड्ढगिरि-विभत्तस्स लवणजलहिपरिगयस्स छव्विहकालगुणकमजुत्तस्स[11] अद्धभरहस्स

---

१. पएणि (क, ख, घ, च)।
२. खोमिय (वृपा)
३. सिरिया (क); सिरसा (च)।
४. कुंडलकडगंगय (क); कुंडलंगय (वृपा)।
५. सागर (वृपा)।
६. संचय° (क, ख, घ)।
७. अतित्ता कामभोगाणं (क)।
८. भुज्जो भुज्जो (ग)।
९. पयंब (ख, घ); पइंव (ग)।
१०. °सास° (क, ग, घ)।
११. °कामजुत्तस्स (ख, ग, घ, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामिका, धीरकित्तिपुरिसा ओहबला अइबला अनिहया अपराजियसत्तुमद्दणा रिपुसहस्स-माणमहणा साणुक्कोसा अमच्छरी अचवला अचंडा मितमंजुलपलावा 'हसिय-गंभीर-महुरभणिया'[1] अब्भुवगयवच्छला सरण्णा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माण-पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगा ससि-सोमागार-कंतपियदंसणा अमरिसणा[2] पयंडदंडप्पयार-गंभीर-दरिसणिज्जा तालद्धय-उव्विद्धगरुलकेऊ बलवग-गज्जंत-दरित - दप्पित - मुट्ठियचाणूरमूरगा रिट्ठवसभघाती-केसरिमुह-विप्फाडगा[3] दरितनागदप्पमहणा जमलज्जुणभंजगा महासउणि-पूतणरिऊ कंसमउडमोडगा जरासंध-माणमहणा।

तेहि य 'अविरल-सम-सहिय-चंदमंडलसमप्पभेहिं सूरमिरीयिकवयं[4] विणिम्मुयंतेहिं[5] सपतिदंडेहिं आयवत्तेहिं धरिज्जंतेहिं विरायंता।

ताहि य पवरगिरिगुहरविहरणसमुद्धियाहिं[6] निरुवहयचमर-पच्छिमसरीर-संजाताहिं अमइल[7] - सियकमल - विमुकुलुज्जलित-रयतगिरिसिहर-विमलससि-किरणसरिस-कलहोय-निम्मलाहिं पवणाहयचवलचलिय-'सललिय-पणच्चिय'[8]-वीइपसरिय[9]-खीरोदगपवरसागरुप्पूरचंचलाहिं माणससरपसर-परिचियावास-विसदवेसाहिं कणगगिरिसिहर-संसिताहिं ओवायुप्पाय चवलजयिणसिग्घवेगाहिं हंसवधूयाहिं चेव कलिया[10], णाणामणिकणग-महरिहतवणिज्जुज्जलविचित्त-डंडाहिं सललियाहिं नरवतिसिरिसमुदयप्पकासणकरीहिं[11] वरपट्टणुग्गयाहिं समिद्धरायकुल-सेवियाहिं कालागुरुपवर - कुंदुरुक्क - तुरुक्क - धूववसवास-

---

१. महुरपरिपुण्णसच्चवयणा (वृपा)।
२. अमसणा (क, ग, च)।
३. केसिमुह° (वृपा)।
४. °मरीयि° (ख); सुचिमरीयि (वृपा)।
५. वाचनान्तरे पुनरातपत्रवर्णकं एवं दृश्यते— अब्भपडलपिंगलुज्जलेहिं अविरल-सम-सहिय-चंदमंडलसमप्पभेहिं मंगलसयभत्ति-च्छेय-चित्तियखिखिणि - मणि - हेमजाल - विरइय-परिगय-पेरंत-कणय-घंटिय-पयलिय-खिणिखि-णित-सुमहुर-सुइसुह-सद्दालसोहिएहिं सपयरग-मुत्तदाम-लंबंतभूसणेहिं नरिंद-वामप्पमाण-रूवपरिमंडलेहिं सीयायव-वायवरिस-विस-दोसणासएहिं तमरय-मलबहुल-पडल-धाडण-पहाकरेहिं मुद्धसुहसिवच्छायसमणुबद्धेहिं वेरु-लियदंडसज्जिएहिं वयरामय-वत्थि-णिउण-जोइय - अट्ठसहस्सवरकंचणसलागनिम्मिएहिं सुविमलरयय-सुट्ठुच्छइएहिं णिउणोवियमिसिमिसिंत-मणि-रयण-सूर-मंडल-वितिमिर-कर-निग्गय-पडिहय-पुणरवि पच्चोवयंतचंचल-मरीइकवयं विणिम्मुयतेहिं (वृ)।
६. °कुहर° (ख, ग, घ, च); विहरणं विचरणं गवामिति गम्यते (वृ)।
७. आमलित (वृपा)।
८. सललिय-पवत्त (वृ)।
९. वीयि° (क)।
१०. वासुदेव-बलदेवा इति प्रक्रमः (वृ)।
११. °प्पगासण° (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसद[1]-गंधुद्धुयाभिरामाहिं चिल्लिकाहिं[2] उभयोपासंपि चामराहिं उक्खिप्प-माणाहिं सुहसीतलवातवीतियंगा।

अजिता अजितरहा हल-मुसल-कणगपाणी[3] संख-चक्क-गय-सत्ति-णंदगधरा पवरुज्जलसुकय-विमलकोत्थुभ[4]-तिरीडधारी कुंडलउज्जोवियाणणा पुंडरीय-णयणा एगावलीकंठरइयवच्छा सिरिवच्छसुलंछणा वरजसा सव्वोउय-सुरभि-कुसुम-सुरइयपलंब-सोहंत-वियसंत-चित्तवणमालरइयवच्छा, अट्ठसयविभत्त-लक्खण-पसत्थसुंदरविराइयंगमंगा मत्तगयवरिंद-ललियविक्कम-विलसियगती कडिसुत्तगनील-पीत-कोसेज्जवाससा पवरदित्ततेया सारयनवथणिय-महुरगंभीर-निद्धघोसा नरसीहा सीहविक्कमगई अत्थमिय[5]-पवररायसीहा सोमा वारवइ-पुण्णचंदा[6] पुव्वकडतवप्पभावा[7] निविट्ठसंचियसुहा[8] अणेगवाससयमाउवंतो भज्जाहि य जणवयप्पहाणाहिं लालियंता अतुलसद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे अणुभवेत्ता ते वि उवणमंति मरणधम्मं, अवितित्ता कामाणं ॥

मंडलिय-नरवरेंदस्स अबंभ-पदं

६. भुज्जो मंडलिय-नरवरेंदा सबला सअंतेउरा सपरिसा सपुरोहिय-अमच्च-दंडनायक-सेणावति-मंतनीतिकुसला नाणामणिरयण-विपुलधण-धन्न-संचयनिही समिद्धकोसा रज्जसिरिं विपुलमणुभवित्ता विक्कोसंता बलेण मत्ता ते वि उवणमंति मरणधम्मं, अवितित्ता कामाणं ॥

जुगलियाणं लावण्णनिरूवणपुरस्सरं अबंभ-पदं

७. भुज्जो उत्तरकुरु-देवकुरु-वणविवर-पायचारिणो नरगणा भोगुत्तमा भोगलक्खण-धरा भोगसस्सिरीया पसत्थसोम्मपडिपुण्णरूवदरिसणिज्जा[9] सुजात-सव्वंग-सुंदरंगा रत्तुप्पलपत्तकंत-कर-चरण-कोमलतला सुपइट्ठिय-कुम्मचारुचलणा अणुपुव्वसुसंहयंगुलीया[10] उन्नततणुतंबनिद्धनक्खा संठियसुसिलिट्ठगूढगोंफा एणी-कुरुविंद-वत्त-वट्टाणुपुव्वजंघा समुग्ग-निसग्गगूढजाणू[11] वरवारण-मत्त-तुल्लविक्कम-विलासितगती वरतुरग-सुजायगुज्झदेसा आइण्णहयव्व

---

१. विसय (क, घ, च)।
२. चिल्लकाहिं (क, ग)।
३. चक्क० (ख, ग)।
४. गोथूभ (क, घ, च)।
५. अत्थमिया (क, ख, ग, घ, च, वृ); अत्थमिय (वृपा)।
६. °पुण्णयंदा (क, ख, घ)।
७. पुव्वकय° (ग, च)।
८. निविड° (ग)।
९. °सोम° (ख, ग, घ, च)।
१०. °सुमाहयं° (क); आणुपुव्वीसुजायपीवरंगु-लीया (वृपा)।
११. निमुग्ग° (वृपा)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निरुवलेवा पमुइयवरतुरग-सीह-अतिरेगवट्टियकडी[1] साहतसोणंद-मुसल-दप्पण-निगरियवरकणग-च्छरुसरिस-वरवइरवलियमज्झा उज्जुग-सम-सहिय-जच्च-तणु-कसिण-णिद्ध-आदेज्ज-लडह-सुमाल-मउयरोमराई झस-विहग-सुजातपीण-कुच्छी झसोदरा पम्हविगडनाभा सन्नतपासा संगयपासा सुंदरपासा सुजातपासा मितमाइय-पीणरइयपासा अकरंडुय-कणगरुयगनिम्मल-सुजाय-निरुवहयदेहधारी कणगसिलातल-पसत्थ-समतल-उवइय-विच्छिण्णपिहुलवच्छा जुयसन्निभपीणरइय-पीवरपउट्ठ-संठियसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसुनिचितघणथिरसुबद्धसंधी पुरवरफलिह[2]-वट्टियभुया भुयईसरविपुलभोग-आयाणफलिह-उच्छूढदीहबाहू रत्ततलोवइय-मउय-मंसल-सुजायलक्खण-पसत्थ-अच्छिद्दजालपाणी पीवरसुजायकोमलवरंगुली तंबतलिणसुइरुइलनिद्धनक्खा निद्धपाणिलेहा चंदपाणिलेहा सूरपाणिलेहा संख-पाणिलेहा चक्कपाणिलेहा दिसासोवत्थियपाणिलेहा[3] 'रवि-ससि-संख-वरचक्क-दिसासोवत्थिय-विभत्त-सुविरइय-पाणिलेहा'[4] वरमहिस-वराह-सीह-सद्दूल-रिसह-नागवर-पडिपुण्णविउलखंधा चउरंगुलसुप्पमाण-कंबुवरसरिसगीवा अवट्ठिय-सुविभत्त-चित्तमंसू उवचिय-मंसल-पसत्थ-सद्दूलविपुलहणुया ओयविय-सिल-प्पवाल-बिंबफलसन्निभाधरोट्ठा पंडुरससिसकल[5]-विमलसंख-गोखीर-फेण-कुंद-दगरय-मुणालिया-धवलदंतसेढी अखंडदंता अप्फुडियदंता अविरलदंता सुणिद्धदंता सुजायदंता एगदंतसेढिव्व अणेगदंता हुयवहनिद्धंतधोयतत्ततवणिज्ज-रत्ततलतालुजीहा गरुलायत-उज्जुतुंगनासा अवदालियपोंडरीयनयणा कोकासिय-धवलपत्तलच्छा आणामियचावरुइल-किण्हब्भराजिसंठिय-संगयायय[6]-सुजाय-भुमगा अल्लीणपमाणजुत्तसवणा सुसवणा पीणमंसलकवोलदेसभागा अचिरुग्गय-बालचंदसंठियमहानिडाला उडुवतिरिव पडिपुण्णसोमवयणा छत्तागारुत्तमंगदेसा[7] घणनिचियसुबद्धलक्खणुण्णयकूडागारनिभपिंडियग्गसिरा[8] हुयवहनिद्धंतधोयतत्त-तवणिज्ज-रत्तकेसंतकेसभूमी सामलीपोंडघणनिचियछोडिय-मिउ-विसद-पसत्थ-सुहुम-लक्खण-सुगंध-सुंदर-भुयमोयग-भिंग-नील[9]-कज्जल-पहट्ठभमरगण-निद्ध-

---

१. °कडी गंगावत्त-दाहिणावत्त-तरंगभंगुर-रवि-किरण-बोहियविकोसायंतपम्ह-गंभीरविगड-नाभा (क,ख,ग,घ,च); वृत्तिकृता किञ्चित्-पुरोवर्तिनः 'पम्हविगडनाभा' इति पाठस्य व्याख्यायां विवृतमिदम् —इदं च विशेषणं न पुनरुक्तम् । पूर्वोक्तस्य नाभिविशेषणस्य बाहुल्येनापाठादिति (वृ)। एतेन प्रतीयते केषु चिदादर्शेषु नाभिवर्णकं पाठद्वयमुपलभ्यते, किन्तु बहुलेषु आदर्शेषु असौ टिप्पणगतः पाठो नास्ति ।

२. °वरफलिह (ग)।

३. दिसासुट्ठिय० (क)।

४. × (क)।

५. पंडर° (क, ग, घ)।

६. × (क, ख, ग)।

७. °रुत्तिमंग° (क, ग)।

८. °सन्निभ° (क)।

९. नेलग (क); नेल (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निगुरुंब-निचिय-कुंचिय-पयाहिणावत्त-मुद्धसिरया सुजात-सुविभत्त-संगयंगा लक्खणवंजणगुणोववेया पसत्थबत्तीसलक्खणधरा हंसस्सरा कुंचस्सरा दुंदुभिस्सरा सीहस्सरा 'ओघस्सरा[2] मेघस्सरा'[3] सुस्सरा सुस्सरनिग्घोसा[4] वज्जरिसहनाराय-संघयणा समचउरंससंठाणसंठिया छायाउज्जोवियंगमंगा छवी[5] निरातंका कंकग्गहणी कवोतपरिणामा सउणिपोस[6]-पिट्ठंतरोरुपरिणया पउमुप्पलसरिस-गंधसास-सुरभिवयणा अणुलोमवाउवेगा अवदाय-निद्ध-काला 'विग्गहिय-उण्णय-कुच्छी[7] अमयरसफलाहारा तिगाउय-समूसिया तिपलिओवमट्ठितीका तिण्णि य पलिओवमाइं परमाउं पालयित्ता ते वि उवणमंति मरणधम्मं, अवितित्ता कामाणं ॥

जुगलिणीणं लावण्णनिरूवणपुरस्सरं अबंभ-पदं

८. पमया वि य तेसिं होंति—सोम्मा सुजाय-सव्वंग-सुंदरीओ पहाणमहिलागुणेहिं जुत्ता[8] अतिकंत-विसप्पमाण-मउय-सुकुमाल-कुम्मसंठिय-सिलिट्ठचरणा उज्जु-मउय-पीवरसुसंहतंगुलीओ[9] अब्भुण्णत-रतिद-तलिण-तंब-सुइ-णिद्धनक्खा रोम-रहिय-वट्टसंठिअ-अजहण्ण-पसत्थ-लक्खण-अकोप्प-जंघजुयला सुणिम्मित-सुनिगूढ-जण्णू मंसल-पसत्थ-सुबद्ध-संधी कयलीखंभातिरेकसंठिय-निव्वणसुकुमाल-मउय-कोमल-अविरल-सम-सहित-वट्ट-पीवर-निरंतरोरू अट्ठावयवीचिपट्टसंठिय[10]-पसत्थविच्छिण्णपिहुलसोणी वयणायामप्पमाणदुगुणिय-विसालमंसलसुबद्धजहण-वरधारिणीओ[10] वज्जविराइय-पसत्थलक्खणनिरोदरीओ तिवलिवलिय-तणु-नमियमज्झियाओ उज्जुय-सम-सहिय-जच्च-तणु-कसिण-निद्ध-आदेज्ज-लडह-सुकुमाल-मउय सुविभत्तरोमराईं[11] गंगावत्तग-पदाहिणावत्त-तरंगभंग-रविकिरण-तरुण-बोधितअकोसायंतपउम-गंभीरविगडनाभी अणुब्भडपसत्थजातपीणकुच्छी सन्नतपासा संगतपासा सुंदरपासा[12] सुजातपासा मियमाइय-पीणरइतपासा अकरंडुय[13]-कणगरुयगनिम्मल[14]-सुजाय-निरुवहयगायलट्ठी कंचणकलसपमाण-सम-

---

१. उज्जस्सरा (ग)।
२. मेघस्सरा ओघस्सरा (घ)।
३. वाचनान्तरे सिंहघोसादिकानि विशेषणानि पठ्यन्ते (वृ)।
४. मुद्रितवृत्तौ —पसत्थच्छवि, हस्तलिखितवृत्तौ—छविति प्रशस्तत्वचः।
५. सगुणि° (क)।
६. विग्गहितुण्णय° (ख, ग)।
७. संजुत्ता (क)।
८. सुसाहतंगुलीओ (क, ग, घ, च)।
९. °पट्ठिसंठिय (क); °पडिसंठिय (ख, घ)।
१०. °वरजहण° (क)।
११. रोमराती (क); °रोमरातीओ (ग)।
१२. × (क, ख, ग, घ, च); सन्नतपार्श्वादि-विशेषणानि पूर्ववत् (वृ); वृत्तिसङ्केतानुसारेणासौ पाठः स्वीकृतः।
१३. अकरंदुय (क, ख)।
१४. °रुयि° (ख). °रुय° (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहिय-लट्ठचूचुयआमेलग-जमल-जुयल-वट्टियपओहराओ भुयंगअणुपुव्वतणुय-गोपुच्छवट्ट-सम-संहिय-नमिय-आदेज्ज-लडहबाहा तंबनहा मंसलग्गहत्था कोमल-पीवरवरंगुलीया निद्धपाणिलेहा ससि-सूर-संख-चक्क-वरसोत्थिय-विभत्त-सुविरइय-पाणिलेहा पीणुण्णयकक्खवत्थिप्पदेस-पडिपुण्णगलकवोला चउरंगुल-सुप्पमाण-कंबुवरसरिसगीवा मंसलसंठियपसत्थहणुया दालिमपुप्फप्पगास-पीवर-पलंबकुंचितवराधरा सुंदरोत्तरोट्ठा दधि-दगरय-'कुंद-चंद'[1]-वासंतिमउल-अच्छिद्दविमलदसणा रत्तुप्पल-रत्तपउमपत्त-सुकुमालतालुजीहा कणवीरमउलऽकुडिलऽभुण्णय-उज्जुतुंगनासा सारदनवकमल-कुमुत-कुवलयदलनिगरसरिसलक्खण-पसत्थ-अजिम्हकंतनयणा[2] आनामियचावरुइल-किण्हब्भराइसंगय-सुजाय-तणुकसिण-निद्धभुमगा अल्लीणपमाणजुत्तसवणा सुस्सवणा पीणमट्ठ[3]-गंडलेहा चउरंगुलविसाल - समनिडाला कोमुदिरयणिकरविमलपडिपुण्णसोमवदणा[4] छत्तुन्नय-उत्तिमंगा[5] अकविल-सुसिणिद्ध-दीहसिरया छत्त-ज्झय-जूव-थूभ-दामिणि-कमंडलु-कलस-वावि-सोत्थिय-पडाग-जव-मच्छ- कुम्म-रहवर - मकरज्झय-अंकथाल-अंकुस-अट्ठावय-सुपइट्ठ-अमर-सिरियाभिसेय-तोरण- मेइणि-उदधिवर-पवर-भवण-गिरिवर-वरायंस-सुललियगय[6]-उसभ-सीह-चामर- पसत्थवत्तीसलक्खणधरीओ हंससरिच्छगतीओ[7] कोइल-महुयरि-गिराओ कंता सव्वस्स अणुमयाओ[8] ववगयवलिपलितवंग-दुव्वन्न-वाधि[9]-दोहग्ग[10]-सोयमुक्काओ[11], उच्चत्तेण य नराण थोवूणमूसियाओ, सिंगारागारचारुवेसा सुंदर-थण-जहण-वयण-कर-चरण[12]-णयणा लावण्णरूवजोव्वणगुणोववेया नंदणवणविवरचारिणीओ व्व अच्छराओ उत्तरकुरुमाणुसच्छराओ अच्छेरगपेच्छणिज्जियाओ तिण्णि य पलिओवमाइं परमाउं पालयित्ता ताऽवि[13] उवणमंति मरणधम्मं, अवितित्ता कामाणं ।।

अबंभस्स फलविवाग-पदं

९. मेहुणसण्णासंपगिद्धा य मोहभरिया सत्थेहिं हणंति एक्कमेक्कं विसयविसउदीरएसु । अवरे परदारेहिं[14] हम्मंति विसुणिया धणनासं सयणविप्पणासं च पाउ-

---

१. चंद-कुंद (च) ।
२. अजिम्म° (क, घ, च) ।
३. पीणमट्ठसुद्ध (ख) ।
४. °वयणा (ख, घ, च) ।
५. °उत्तमंगा (ग, च) ।
६. सललिय० (क, ग, वृ) ।
७. सरिसगतीओ (च) ।
८. अणुगयाओ (ख) ।
९. वाहि (घ) ।
१०. दोभग्ग (घ, च) ।
११. °मुक्का (क, ख, घ) ।
१२. चलण (ख, च) ।
१३. ताओ (च) ।
१४. प्रवृत्ता इति गम्यते (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णंति[1]। परस्स दाराओ जे अविरया मेहुणसण्णसंपगिद्धा य मोहभरिया अस्सा हत्थी गवा य महिसा मिगा य मारेंति एक्कमेक्कं, मणुयगणा वानरा य पक्खी य विरुज्झंति, मित्ताणि[2] खिप्पं भवंति सत्तू, समये धम्मे गणे य भिंदंति पारदारी। धम्मगुणरया य बंभयारी खणेण उल्लोट्टए[3] चरित्तओ[4], जसमंतो सुव्वया य पावंति अयसकित्तिं[5], रोगत्ता वाहिया य वड्ढेंति रोयवाही, दुवे य लोया दुआराहगा भवंति—इहलोए चेव परलोए—परस्स दाराओ जे अविरया ॥

१०. तहेव केइ परस्स दारं गवेसमाणा गहिया हया य बद्धरुद्धा य एवं जाव[6] नरगे गच्छंति निरभिरामे विपुलमोहाभिभूयसण्णा ॥

११. मेहुणमूलं च सुव्वए तत्थ-तत्थ वत्तपुव्वा[7] संगामा बहुजणक्खयकरा[8] सीयाए दोवतीए कए, रुप्पिणीए, पउमावईए, ताराए, कंचणाए, रत्तसुभद्दाए, अहिल्लियाए[9], सुवण्णगुलियाए, किण्णरीए, सुरूवविज्जुमतीए, रोहणीए य ॥

१२. अण्णेसु य एवमादिएसु बहवो[10] महिलाकएसु सुव्वंति अइक्कंता संगामा गामधम्ममूला ॥

१३. 'इहलोए ताव नट्ठा'[11] 'परलोए वि'[12] य नट्ठा महयामोहतिमिसंधकारे घोरे, तसथावर-सुहुमबादरेसु पज्जत्तमपज्जत्तक-साहारणसरीर-पत्तेयसरीरेसु य, अंडज-पोतज-जराउय-रसज-संसेइम-संमुच्छिम-उब्भिय-उववाइएसु य, नरग-तिरिय-देव-माणुसेसु, जरा-मरण-रोग-सोग[13]-बहुले, पलिओवम-सागरोवमाइं अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टंति जीवा मोहवससण्णिविट्ठा ॥

१४. एसो सो अबंभस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ य अप्पसुहो बहुदुक्खो-महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चती, न य अवेदयित्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति—एवमाहंसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो, कहेसी य अबंभस्स फलविवागं ॥

निगमण-पदं

१५. एयं तं अबंभंति चउत्थं सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स पत्थणिज्जं,[14] •पंक-पणग-

---

१. राज्ञः सकाशादिति गम्यते (वृ)।
२. मित्ता (क, ग, घ)।
३. उल्लट्टए (क); उल्लोट्ठए (ग)।
४. चरित्ताओ (ग, च)।
५. अकित्तिं (वृ); अयसकित्तिं (वृपा)।
६. पण्हा० ३।१०-२०।
७. वुत्तपुव्वा (ख)।
८. जणक्खयकरा (क, ख, ग, घ, च)।
९. अहित्तियाए (क, ख, ग, घ); अहित्रिका अप्रतीता (वृ)।
१०. वहुओ (क, ख)।
११. × (क, ग, घ)।
१२. परलोयम्मि (ख, घ)।
१३. × (क, ख, घ)।
१४. सं० पा०—पत्थणिज्जं एवं चिरपरि०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासजालभूयं थी-पुरिस-नपुंसगवेदचिधं तव-संजम-बंभचेरविग्घं भेदाययण-बहुपमादमूलं कायरकापुरिससेवियं सुयणजणवज्जणिज्जं उड्ढं नरग-तिरिय-तिलोक्कपइट्ठाणं जरा-मरण-रोग-सोगबहुलं वध-बंध-विघाय-दुव्विधायं दंसण-चरित्तमोहस्स हेउभूयं० चिरपरिचियमणुगयं[1] दुरंतं। चउत्थं अधम्मदारं समत्तं।

—त्ति बेमि ॥

---

१. चिरपरिजिय० (ग, घ); चिरपरिगय० (वृपा)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमं अज्झयणं

पंचमं आसवदारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू ! एत्तो[1] परिग्गहो पंचमो उ नियमा—णाणामणि-कणग-रयण-महरिह-परिमल-सपुत्तदार-परिजण - दासी-दास - भयग-पेस-हय-गय-गो-महिस-उट्ट-खर-अय-गवेलग-सीया-सगड-रह-जाण-जुग्ग - संदण - सयणासण-वाहण-कुविय-धण-धण्ण-पाण-भोयण - अच्छायण - गंध-मल्ल-भायण-भवणविहि चेव बहुविहीयं, भरहं णग-णगर-णियम[2] -जणवय-पुरवर-दोणमुह-खेड-कब्बड-मडंब-संबाह-पट्टण-सहस्समंडियं थिमियमेइणीयं, एगच्छत्तं ससागरं भुंजिऊण वसुहं अपरिमिय-मणंततण्हमणुगय-महिच्छसार-निरयमूलो, लोभकलिकसाय-महक्खंधो[3], चिंता-सयनिचिय[4]-विपुलसालो, 'गारव-पविरल्लियग्गविडवो'[5], नियडि-तयापत्तपल्लव-धरो, पुप्फफलं जस्स कामभोगा, आयासविसूरणाकलह-पकंपियग्गसिहरो, नरवतिसंपूजितो, बहुजणस्स हिययदइओ इमस्स मोक्खवर-मोत्तिमग्गस्स पलिहभूओ[6] । चरिमं अहम्मदारं ।।

परिग्गहस्स तीसनाम-पदं

२. तस्स य नामाणि[7] गोण्णाणि होंति तीसं, तं जहा—१. परिग्गहो २. संचयो ३. 'चयो ४.उवचयो'[8] ५. निहाणं ६. संभारो ७. संकरो ८. आयरो[9] ९. पिंडो

---

१. इत्तो (ग) ।
२. निगम (च) ।
३. महाखंधो (ख, च) ।
४. चिंतायास° (वृ); चिंतासय° (वृपा) ।
५. गोरव-पविरेल्लि° (घ, वृपा) ।
६. फलिह° (ग, च) ।
७. नामाणि इमाणि (ख, च) ।
८. चओ उवचओ (क, ग) ।
९. आयारो (क, ख, घ, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. दव्वसारो ११. तहा[1] महिच्छा १२. पडिबंधो १३. लोहप्पा १४. महद्दी[2] १५. उवकरणं १६. संरक्खणा य १७. भारो १८. संपायुप्पायको १९. कलिकरंडो २० पवित्थरो २१. अणत्थो २२. संथवो २३. अगुत्ती २४. आयासो २५. अविओगो २६. अमुत्ती २७. तण्हा २८. अणत्थको २९. आसत्ती ३०. असंतोसो त्ति ।

अवि य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं ॥

देवाणं परिग्गह-पदं

३. तं च पुण परिग्गहं ममायंति लोभघत्था भवनवरविमाणवासिणो परिग्गहरुयी[3] परिग्गहे विविहकरणबुद्धी,

देवनिकाया य—असुर-भुयग-गरुल-विज्जु-जलण-दीव-उदहि-दिसि[4]-पवण-थणिय-अणवण्णिय-पणवण्णिय-इसिवाइय-भूतवाइय-कंदिय-महाकंदिय-कुहंड-पतगदेवा[5], पिसाय-भूय-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस-महोरग-गंधव्वा य तिरियवासी ।

पंचविहा जोइसिया य देवा,—बहस्सती-चंद-सूर-सुक्क-सनिच्छरा, राहु-धूमकेउ-बुधा य अंगारका य तत्ततवणिज्जकणगवण्णा, जे य गहा जोइसम्मि[6] चारं चरंति, केऊ य गतिरतीया, अट्ठावीसतिविहा य नक्खत्तदेवगणा,[7] नाणासंठाण-संठियाओ य तारगाओ, ठियलेस्सा चारिणो य अविस्साम-मंडलगती उवरिचरा ।

उड्ढलोगवासी दुविहा वेमाणिया य देवा—सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभलोग-लंतक-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरणच्चुय-कप्पवरविमाण-वासिणो सुरगणा गेवेज्जा अणुत्तरा य दुविहा कप्पातीया विमाणवासी महिड्ढिका उत्तमा सुरवरा ।

एवं च ते चउव्विहा सपरिसा वि देवा ममायंति भवण-वाहण-जाण-विमाण-सयणासणाणि य नाणाविहवत्थभूसणाणि य पवरपहरणाणि य नाणामणिपंचवण्णदिव्वं च भायणविहिं नाणाविह-कामरूव-वेउव्विय-अच्छरगणसंघाते दीवसमुद्दे दिसाओ[8] चेतियाणि वणसंडे पव्वते गामनगराणि य आरामुज्जाण-काणणाणि य कूव-सर-तलाग-वावि-दीहिय-देवकुल-सभ-प्पव-वसहिमाइयाइं

---

१. तह (क, च) ।
२. महंती (वृ०); महद्दी (वृपा) ।
३. °रुती (क, ग) ।
४. दिस (क, ग, घ) ।
५. पतत° (क); पतंग° (च) ।
६. जोइसियम्मि (ख, घ) ।
७. देवतगणा (ख, घ, च) ।
८. दिसाओ विदिसाओ (ग, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुकाइं कित्तणाणि य परिगेण्हित्ता परिग्गहं विपुलदव्वसारं देवावि सइंदगा न तित्तिं न तुट्ठिं उवलभंति अच्चंत-विपुल-लोभाभिभूतसन्ना[1] ।
वासहर-इसुगार[2]-वट्टपव्वय-कुंडल-रुयगवर-माणुसुत्तर-कालोदधि-'लवण-सलिल'[3] दहपति-रतिकर-अंजणकसेल-दहिमुहओवातुप्पाय[4]-कंचणक-चित्त[5]-विचित्त-जमक-वरसिहरि-कूडवासी ।।

मणुस्साणं परिग्गह-पदं

४. वक्खार-अकम्मयभूमीसु, सुविभत्तभागदेसासु कम्मभूमिसु जेऽवि य नरा चाउरंतचक्कवट्टी वासुदेवा बलदेवा मंडलीया इस्सरा तलवरा सेणावती इब्भा सेट्ठी रट्ठिया पुरोहिया कुमारा दंडणायगा माडंबिया सत्थवाहा कोडुंबिया अमच्चा एए अण्णे य एवमादी परिग्गहं संचिणंति अणंतं असरणं दुरंतं अधुव-मणिच्चं असासयं पावकम्मनेम्मं अवकिरियव्वं[6] विणासमूलं वहबंधपरिकिलेस-बहुलं[7] अणंतसंकिलेसकरणं[8] ते तं धण-कणग-रयण-निचयं पिंडिता[9] चेव लोभ-घत्था संसारं अतिवयंति[10] सव्वदुक्ख-संनिलयणं ।।

परिग्गहत्थं सिक्खा-पदं

५. परिग्गहस्सेव य अट्ठाए सिप्पसयं सिक्खए बहुजणो कलाओ य बावत्तरिं सुनि-पुणाओ लेहाइयाओ सउणरुयावसाणाओ गणियप्पहाणाओ, चउसट्ठिं च महिला-गुणे रतिजणणे, सिप्पसेवं, असि-मसि-किसी-वाणिज्जं, ववहारं, अत्थसत्थ-ईसत्थ-च्छरुप्पगयं, विविहाओ य जोगजुंजणाओ[11] य, अण्णेसु एवमादिएसु बहूसु कारणसएसु जावज्जीवं नडिज्जए[12], संचिणंति मंदबुद्धी ।।

परिग्गहीणं पवित्ति-पदं

६. परिग्गहस्सेव य अट्ठाए करंति पाणाण वहकरणं अलिय-नियडि-साइ-संपओगे परदव्व-अभिज्जा सपरदारगमणसेवणाए[13] आयास-विसूरणं कलह-भंडण-वेराणि य अवमाण-विमाणणाओ इच्छ-महिच्छ-प्पिवास-सततितिसिया तण्ह-गेहि-लोभ-घत्था अत्ताण-अणिग्गहिया करेंति कोहमाणमायालोभे अकित्तणिज्जे ।।

---

१. °भूतसत्ता (च) ।
२. इक्खुगार (ख, घ, च) ।
३. लवणसमुद्द (क) ।
४. दहिमुहवातुप्पाय (क); °उवातुप्पाय (च) ।
५. × (क, ख, ग, घ) ।
६. अकिरियव्वं (क); अविकिरियव्वं (घ) ।
७. मनंतं परि° (क) ।
८. मनसंकिलेस ° (क) ।
९. पिडंता (ख) ।
१०. अविचयंति (ख, घ) ।
११. परिग्रहाय शिक्षत इति प्रतीतम् (वृ) ।
१२. बहुवचनार्थत्वादेकवचनस्य (वृ) ।
१३. × (ख, घ); °अभिगमण° (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. परिग्गहे चेव होंति नियमा सल्ला दंडा य गारवा य कसाय-सण्णा य कामगुण-अण्हगा य इंदियलेसाओ ।
सयण-संपओगा सचित्ताचित्तमीसगाइं दव्वाइं अणंतकाइं इच्छंति परिघेत्तुं ।
सदेवमणुयासुरम्मि लोए लोभपरिग्गहो जिणवरेहिं भणिओ, नत्थि एरिसो पासो पडिबंधो[1] सव्वजीवाणं सव्वलोए ।।

परिग्गहस्स फलविवाग-पदं

८. परलोगम्मि य नट्ठा[2] तमं पविट्ठा, महया मोहमोहियमती, तिमिसंधकारे, तसथावर-सुहुमबादरेसु, पज्जत्तमपज्जत्तग-[3]•साहारणसरीर-पत्तेयसरीरेसु य, अंडज-पोतज - जराउय-रसज-ससेइम-संमुच्छिम-उब्भिय-उववाइएसु य, नरग-तिरिय-देव-माणुसेसु, जरा - मरण-रोग-सोग-बहुले, पलिओवम-सागरोवमाइं अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणु॰परियट्टंति जीवा मोहवससण्णिविट्ठा ।।

९. एसो सो परिग्गहस्स फलविवाओ इहलोइओ पारलोइओ[4] अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चई, न य अवेदयित्ता[5] अत्थि हु मोक्खोत्ति—एवमाहंसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो, कहेसी य परिग्गहस्स फलविवागं ।।

निगमण-पदं

१०. एसो सो परिग्गहो पंचमो उ नियमा—नाणामणि-कणग-रयण-महरिह[6]•परिमल-सपुत्तदार-परिजण-दासी - दास-भयग-पेस-हय-गय-गो-महिस-उट्ट-खर-अय-गवेलग - सीया-सगड-रह-जाण-जुग्ग-संदण-सयणासण-वाहण-कुविय-धण-धण्ण-पाण-भोयण-अच्छायण-गंध-मल्ल-भायण-भवणविहि चेव बहुविहीयं, भरहं णग-णगर-णियम-जणवय- पुरवर-दोणमुह-खेड-कब्बड-मडंब-संवाह-पट्टणसहस्स-मंडियं थिमियमेइणीयं, एगच्छत्तं ससागरं भुंजिऊण वसुहं अपरिमियमणंततण्ह-मणुगय-महिच्छसार-निरयमूलो, लोभकलिकसाय-महक्खंधो, चिंतासयनिचिय-विपुलसालो, गारव-पविरल्लियग्गविडवो, नियडि-तयापत्तपल्लवधरो, पुप्फफलं जस्स कामभोगा, आयासविसूरणाकलह-पकंपियग्गसिहरो, नरवतिसंपूजितो, बहुजणस्स हियइच्छिओ॰ इमस्स मोक्खवर-मोत्तिमग्गस्स फलिहभूयो । चरिमं अधम्मदारं समत्तं ।

---

१. पडिबंधो अत्थि (ख, ग, घ, च) ।
२. ४।१३ सूत्रे अतः प्राग् 'इहलोए ताव नट्ठा' पाठो विद्यते, अत्र तु स न दृश्यते ।
३. सं॰ पा॰—एवं जाव परियट्टंति ।
४. परलोइओ (ख, ग, घ, च) ।
५. अवेतित्ता (ग) ।
६. सं॰ पा॰—एवं जाव इमस्स ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एएहिं पंचहिं असंवरेहिं रयमादिणित्तु[1] अणुसमयं ।
चउव्विहगतिपेरंतं, अणुपरियट्टंति संसारं ॥१॥
सव्वगई - पक्खंदे, काहेंति अणंतए अकयपुण्णा ।
जे य ण सुणंति धम्मं, सोऊण य जे पमायंति ॥२॥
अणुसिट्ठंपि[2] बहुविहं, मिच्छदिट्ठी णरा अबुद्धीया ।
बद्धनिकाइयकम्मा, सुणंति धम्मं न य करेंति ॥३॥
किं सक्का काउं जे, जं णेच्छह ओसहं मुहा पाउं ।
जिणवयणं गुणमहुरं, विरेयणं सव्वदुक्खाणं ॥४॥
पंचेव[3] उज्झिऊणं, पंचेव य रक्खिऊण भावेण ।
कम्मरय - विप्पमुक्का, सिद्धिवरमणुत्तरं जंति ॥५॥

---

१. °अचिणित्तु (वृ) ।
२. अणुसट्ठं (क, ग, घ); अणुसिट्ठा (वृ) ।
३. पंचेव य (च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठं अज्झयणं

पढमं संवरदारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू !

एत्तो संवरदाराइं, पंच वोच्छामि आणुपुव्वीए ।
जह भणियाणि भगवया, सव्वदुहविमोक्खणट्ठाए ॥१॥
पढमं होइ अहिंसा, बितियं सच्चवयणंति पण्णत्तं ।
दत्तमणुण्णायसंवरो, य बंभचेरमपरिग्गहत्तं च ॥२॥
तत्थ पढमं अहिंसा, तसथावरसव्वभूयखेमकरी ।
तीसे सभावणाए, किंचि वोच्छं गुणुद्देसं ॥३॥

२. ताणि उ इमाणि सुव्वय-महव्वयाइं 'लोकहिय-सव्वयाइं'[1] सुयसागर-देसियाइं तव-संजम-महव्वयाइं सीलगुणवरव्वयाइं सच्चज्जवव्वयाइं नरग-तिरिय-मणुय-देवगति-विवज्जकाइं[2] सव्वजिणसासणगाइं कम्मरयविदारगाइं भवसयविणासणकाइं दुहसयविमोयणकाइं सुहसयपवत्तणकाइं कापुरिसदुरुत्तराइं सप्पुरिसनिसेवियाइं[3] निव्वाणगमणमग्ग-सग्गपणायगाइं[4] संवरदाराइं पंच कहियाणि उ भगवया ॥

अहिंसा-पज्जवनाम-पदं

३. तत्थ पढमं अहिंसा, जा सा सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स भवति—

---

१. लोए थिइअव्वयाइं (वृ); लोयहियसव्वयाइं (वृपा)।
२. विवज्जियकाइं (क); विवज्जयकाइं (ख, ग, च)।
३. सप्पुरिसतीरियाइं (वृपा)।
४. पयाणगाइं (वृपा)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीवो ताणं सरणं गती पइट्ठा
निव्वाणं[1] निव्वुई[2] समाही
सत्ती कित्ती कंती
रती य विरती य सुयंग तित्ती
दया विमुत्ती खंती समत्ताराहणा
महंती बोही बुद्धी धिती
समिद्धी रिद्धी विद्धी
ठिती पुट्ठी नंदा भद्दा
विसुद्धी लद्धी विसिट्ठदिट्ठी
कल्लाणं मंगलं पमोओ विभूती रक्खा
सिद्धावासो अणासवो
केवलीणं ठाणं
सिव-समिई-सील-संजमो त्ति य
सीलपरिघरो[3] संवरो य गुत्ती ववसाओ
उस्सओ[4] य जणो, आयतणं जयणमप्पमाओ।
आसासो वीसासो, अभओ सव्वस्स वि अमाघाओ।
चोक्खपवित्ता[5] सुती पूया विमल-पभासा य निम्मलतर त्ति।
एवमादीणि नियगुण-निम्मियाइं पज्जवणामाणि होंति अहिंसाए भगवतीए॥

अहिंसा-थुइ-पद

४. एसा सा भगवती अहिंसा, जा सा—

भीयाणं पिव सरणं, पक्खीणं पिव गयणं[6]।
तिसियाणं पिव सलिलं, खुहियाणं पिव असणं।
समुद्दमज्झे व पोतवहणं, चउप्पयाणं व आसमपयं।
दुहट्टियाणं[7] व ओसहिबलं, अडवीमज्झे व सत्थगमणं॥

५. एसो विसिट्ठतरिका अहिंसा, जा सा—
पुढवि-जल-अगणि - मारुय - वणप्फइ-बीज-हरित-जलचर-थलचर-खहचर-तस-थावर-सव्वभूय-खेमकरी॥

---

१. नेव्वाणं (क)।
२. नेव्वुई (क, ख)।
३. सीलायारो (क); सीलघरो (ख, घ, च)।
४. उस्सतो (क)।
५. चोक्खा पवित्ती (क)।
६. गमणं (क, ग, वृ)।
७. दुहट्ठियाणं (च, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिंसा-साहप्प-पदं

६. एसा भगवती अहिंसा, जा सा —
अपरिमियनाणदंसणधरेहिं सीलगुण-विणय-तव-संजमनायकेहिं तित्थंकरेहिं सव्वजगवच्छलेहिं[1] तिलोगमहिएहिं जिणचंदेहिं सुट्ठुदिट्ठा, ओहिजिणेहिं विण्णाया, उज्जुमतीहिं विदिट्ठा, विपुलमतीहिं विदिता[2], पुव्वधरेहिं अधीता, वेउव्वीहिं पतिण्णा।
आभिणिबोहियनाणीहिं सुयनाणीहिं मणपज्जवनाणीहिं केवलनाणीहिं आमोसहि-पत्तेहिं खेलोसहिपत्तेहिं जल्लोसहिपत्तेहिं विप्पोसहिपत्तेहिं सव्वोसहिपत्तेहिं बीजबुद्धीहिं कोट्ठबुद्धीहिं पदाणुसारीहिं संभिण्णसोतेहिं सुयधरेहिं मणबलिएहिं वयिबलिएहिं कायबलिएहिं नाणबलिएहिं दंसणबलिएहिं चरित्तबलिएहिं खीरासवेहिं महुआसवेहिं सप्पिआसवेहिं[3] अक्खीणमहाणसिएहिं चारणेहिं विज्जाहरेहिं चउत्थभत्तिएहिं 'छट्ठभत्तिएहिं अट्ठमभत्तिएहिं एवं-दसम-दुवालस-चोद्दस-सोलस - अद्धमास - मास - दोमास-चउमास-पंचमास'[4]-छम्मासभत्तिएहिं उक्खित्तचरएहिं निक्खित्तचरएहिं अंतचरएहिं पंतचरएहिं लूहचरएहिं समुदाण-चरएहिं अण्णइलाएहिं मोणचरएहिं संसट्ठकप्पिएहिं तज्जायससट्ठकप्पिएहिं उवनि-हिएहिं सुद्धेसणिएहिं संखादत्तिएहिं दिट्ठलाभिएहिं अदिट्ठलाभिएहिं पुट्ठलाभिएहिं आयंबिलिएहिं पुरिमड्ढिएहिं एक्कासणिएहिं निव्वितिएहिं भिण्णपिंडवाइएहिं परिमियपिंडवाइएहिं अंताहारेहिं पंताहारेहिं अरसाहारेहिं विरसाहारेहिं लूहाहा-रेहिं तुच्छाहारेहिं अंतजीवीहिं पंतजीवीहिं लूहजीवीहिं तुच्छजीवीहिं उवसंत-जीवीहिं पसंतजीविहिं विवित्तजीवीहिं अक्खीरमहुसप्पिएहिं[5] अमज्जमंसासिएहिं ठाणाइएहिं पडिमट्ठाईहिं[6] ठाणुक्कडिएहिं[7] वीरासणिएहिं णेसज्जिएहिं डंडाइएहिं लगंडसाईहिं एगपासगेहिं आयावएहिं अप्पाउएहिं अणिट्ठुभएहिं अकंडूयएहिं धुतकेसमंसु-लोमनखेहिं सव्वगायपडिकम्मविप्पमुक्केहिं समणुचिण्णा।
सुयधरविदितत्थकायबुद्धीहिं। धीरमतिबुद्धिणो य जे ते आसीविस-उग्गतेयकप्पा निच्छय-ववसाय-पज्जत्तकयमतीया[8] णिच्चं सज्झायज्झाण-अणुबद्धधम्मज्झाणा पंचमहव्वयचरित्तजुत्ता समिता समितीसु समितपावा छव्विहजगवच्छला[9] निच्चमप्पमत्ता, एएहिं[10] अण्णेहि य जा सा अणुपालिया भगवती॥

---

१. सव्वजगजीव° (क)।
२. विविदिता (घ)।
३. सप्पियासवेहिं (ख, ग, घ, च)।
४. एवं जाव (क, ख, ग, घ)।
५. अक्खित्त° (क)।
६. पडिमट्ठाइएहिं (ख, घ, च)।
७. ठाणुक्कुडुएहिं (क)।
८. समनुपालितेति सम्बन्धः (वृ)।
९. मिच्छत्तकयमतीया (ख, घ); विणीयपज्जत्त-कयमतीया (वृपा)।
१०. छव्विहजगजीववच्छला (क)।
११. एएहि य (घ, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उंछगवेसणा-पदं

७. इमं च पुढवि-दग-अगणि-मारुय-तरुगण-तस-थावर-सव्वभूय-संजमदयट्ठयाए सुद्धं उंछं गवेसियव्वं अकतमकारितमणाहूयमणुद्दिट्ठं, अकीयकडं, नवहि य कोडीहिं सुपरिसुद्धं, दसहि य दोसेहिं विप्पमुक्कं, उग्गमउप्पायणेसणासुद्धं, ववगय-चुय-चइय[1]-चत्तदेहं च, फासुयं च।

न निसज्जकहापओयणक्खासुओवणीयं, न तिगिच्छा-मंत-मूल-भेसज्जहेउं[2], न लक्खणुप्पाय-सुमिण-जोइस-निमित्त-कह-कुहकप्पउत्तं ॥

८. नवि डंभणाए, नवि रक्खणाते, नवि सासणाते, नवि डंभण-रक्खण-सासणाते भिक्खं गवेसियव्वं ॥

९. नवि वंदणाते, नवि माणणाते, नवि पूयणाते, नवि वंदण-माणण-पूयणाते भिक्खं गवेसियव्वं ॥

१०. नवि हीलणाते, नवि निंदणाते, नवि गरहणाते, नवि हीलण-निंदण-गरहणाते भिक्खं गवेसियव्वं ॥

११. नवि भेसणाते, नवि तज्जणाते, नवि तालणाते, नवि भेसण-तज्जण-तालणाते भिक्खं गवेसियव्वं ॥

१२. नवि गारवेणं, नवि कुहणयाते, नवि वणीमयाते, नवि गारव-कुहण-वणीमयाते भिक्खं गवेसियव्वं ॥

१३. नवि मित्तयाए, नवि पत्थणाए, नवि सेवणाए, नवि मित्तत-पत्थण-सेवणाते भिक्खं गवेसियव्वं ॥

१४. अण्णाए अगढिए अदुट्ठे अदीणे[3] अविमणे अकलुणे अविसाती अपरितंतजोगी जयण-घडण-करण-चरिय-विणय-गुण-जोगसंपउत्ते भिक्खू भिक्खेसणाते निरते ॥

१५. इमं च सव्वजगजीव-रक्खणदयट्ठाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चाभावियं आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाण विओसमणं ॥

अहिंसाए पंचभावणा-पदं

१६. तस्स इमा पंच भावणाओ पढमस्स वयस्स होंति पाणातिवायवेरमण-परिरक्खणट्ठयाए ॥

१७. पढमं—ठाणगमणगुणजोगजुंजण-जुगंतरनिवातियाए दिट्ठीए इरियव्वं कीड-

---

१. चयिय (क); चाविय (वव)।
२. भेसज्जकज्जहेउं (क, ख, ग, घ, च)।
३. अदीणे (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पयंग-तस-थावर-दयावरेण, निच्चं पुप्फ-फल-तय-पवाल-कंद-मूल-दगमट्टिय-बीज-हरिय-परिवज्जणए[1] सम्मं[2]।

एवं खु[3] सव्वपाणा न हीलियव्वा, न निंदियव्वा, न गरहियव्वा, न हिंसियव्वा, न छिंदियव्वा, न भिंदियव्वा, न वहेयव्वा, न भयं दुक्खं च किंचि लब्भा पावेउं जे।

एवं इरियासमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, असबलमसंकिलिट्ठ-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसए संजए सुसाहू ॥

१८. बितियं च—मणेण पावएणं पावगं अहम्मियं दारुणं निस्संसं[4] वह-बंध-परिकिलेसबहुलं भय-मरण-परिकिलेससंकिलिट्ठं न कयावि मणेण पावएणं[5] पावगं किंचि वि झायव्वं।

एवं मणसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, असबलमसंकिलिट्ठ-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसए संजए सुसाहू ॥

१९. ततियं च—वतीते पावियाते पावगं न किंचि वि भासियव्वं।

एवं वतिसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, असबलमसंकिलिट्ठ-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसओ संजओ सुसाहू ॥

२०. चउत्थं—आहारएसणाए[6] सुद्धं उंछं गवेसियव्वं अण्णाए 'अगढिए अदुट्ठे'[7] अदीणे[8] अविमणे[9] अकलुणे अविसादी[10], अपरितंतजोगी जयण-घडण-करण-चरिय-विणय-गुण-जोगसंपउत्ते[11] भिक्खू भिक्खेसणाए जुत्ते समुदाणेऊण भिक्खचरियं उंछं घेत्तूण आगते गुरुजणस्स पासं, गमणागमणातिचार-पडिक्कमण-पडिक्कंते, आलोयण-दायणं च दाऊण गुरुजणस्स जहोवएसं निरइयारं च अप्पमत्तो पुणरवि अणेसणाए पयतो[12] पडिक्कमित्ता पसंतआसीण-सुहनिसण्णे[13], मुहुत्तमेत्तं च झाण-सुहजोग-नाण-सज्झाय-गोवियमणे धम्ममणे अविमणे सुहमणे अविग्गहमणे समाहिमणे सद्धासंवेगनिज्जरमणे पवयणवच्छल्लभावियमणे उट्ठेऊण य पहट्ठतुट्ठे जहराइणियं[14] निमंतइत्ता य साहवे भावओ य, विइण्णे[15] य

---

१. परिवज्जिएणं (क)।
२. समं (ग, घ)।
३. खलु (क, ग)।
४. निसंसं (ख, घ)।
५. पावतेणं (ख)।
६. आहारं एसणाए (क, ग, घ, च)।
७. अकहिए असिट्ठे (क, ख, ग, घ, च, वृ); एते पदे वृत्तेर्वाचनान्तरस्य तथा अस्यैवाध्ययनस्य चतुर्दशसूत्रस्याधारेण स्वीकृते।
८. 'अदीणे' त्यादि तु पूर्ववत् (वृ)।
९. × (क, ख, ग, घ, च)।
१०. अविसाती (ख, घ, च)।
११. °संपओगजुत्ते (क, ख, ग, घ, च)।
१२. पयत्तो (क, ख, घ, च)।
१३. सुनिसण्णा (घ)।
१४. जहारायणियं (क, ग)।
१५. विदिण्णे (क, ख, घ, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुरुजणेणं, उपविट्ठे संपमज्जिऊण ससीसं कायं तहा करतलं, अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अगरहिए अणज्झोववण्णे अणाइले अलुद्धे अणत्तट्ठिते असुरसुरं अचवचवं अद्दुयमविलंबियं[1] अपरिसाडिं आलोयभायणे जयं पयत्तेणं ववगय-संजोगमणिंगालं च विगयधूमं अक्खोवंजण-वणाणुलेवणभूयं संजमजायामाया-निमित्तं[2] संजयभारवहणट्ठयाए भुंजेज्जा पाणधारणट्ठयाए[3] संजए णं समियं ।
एवं आहारसमितिजोगेणं भाविओ भवति अंतरप्पा, असबलमसंकिलिट्ठ-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसए संजए सुसाहू ॥

२१. पंचमगं —पीढ-फलग-सिज्जा-संथारग-वत्थ-पत्त-कंबल-दंडग-रयहरण-चोलपट्टग-मुहपोत्तिग-पायपुंछणादी । एयंपि संजमस्स उववूहणट्ठयाए[4] वातातव-दंसमसग-सीय-परिरक्खणट्ठयाए उवगरणं रागदोसरहियं परिहरितव्वं संजतेणं[5] णिच्चं पडिलेहण-पप्फोडण-पमज्जणाए अहो य राओ य अप्पमत्तेण होइ सततं निक्खिवियव्वं च गिण्हियव्वं च भायण-भंडोवहि-उवगरणं ।
एवं आयाणभंडनिक्खेवणासमितिजोगेण भाविओ भवति अंतरप्पा, असबलमसंकिलिट्ठ-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसए संजते सुसाहू ॥

निगमण-पदं

२२. एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होति सुप्पणिहियं इमेहिं पंचहि वि कारणेहिं मण-वयण-काय-परिरक्खणेहिं ॥

२३. णिच्चं आमरणंतं च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णातो ॥

२४. एवं पढमं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं आराहियं आणाते अणुपालियं भवति ॥

२५. एवं नायमुणिणा भगवया पण्णवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवितं सुदेसितं पसत्थं । पढमं संवरदारं समत्तं ।

—त्ति बेमि ॥

---

१ अदुय° (च) ।
२. मायनिमित्तं (क, ख, ग, घ) ।
३. °रक्खणट्ठयाए (क) ।
४. उवगहणट्ठयाए (क, ख, च) ।
५. संजमेणं (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तमं अज्झयणं

बीयं संवरदारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू ! बितियं च सच्चवयणं—सुद्धं सुइयं सिवं सुजायं सुभासियं सुव्वयं सुकहियं सुदिट्ठं सुपतिट्ठियं सुपतिट्ठियजसं सुसंजमियवयणबुइयं सुरवर-नरवसभ-पवर-बलवग-सुविहियजण-बहुमयं परमसाहुधम्मचरणं तव-नियम-परिग्गहियं सुगति-पहदेसगं च लोगुत्तमं वयमिणं विज्जाहरगगणगमणविज्जाण साहकं सग्गमग्ग-सिद्धिपहदेसकं अवितहं, तं सच्चं उज्जुयं अकुडिलं भूयत्थं, अत्थतो विसुद्धं उज्जोयकरं पभासकं भवति सव्वभावाण जीवलोगे अविसंवादि जहत्थमधुरं पच्चक्खं दइवयं[1] व जं तं अच्छेरकारकं अवत्थंतरेसु बहुएसु माणुसाणं ।।

सच्चस्स माहप्प-पदं

२. सच्चेण महासमुद्दमज्झे चिट्ठंति, न निमज्जंति मूढाणिया वि पोया ।।
३. सच्चेण य उदगसंभमंमि वि[2] न बुज्झइ[3], न य मरंति, थाहं च ते लभंति ।।
४. सच्चेण य अगणिसंभमंमि वि[4] न डज्झंति उज्जुगा[5] मणूसा ।।
५. सच्चेण य तत्ततेल्ल-तउय-लोह-सीसकाइं छिवंति धरेंति[6], न य डज्झंति मणूसा ।।
६. पव्वयकडकाहि मुच्चंते, न य मरंति सच्चेण य परिग्गहिया ।।
७. असिपंजरगया[7] समराओ वि णिइंति अणहा य सच्चवादी ।।

---

१. दरियवं (ख, ग); देवयं (च)।
२. × (क, ख, ग, घ, च)।
३. वचनपरिणामान्नोह्यन्ते (वृ)।
४. × (क)।
५. उज्जगा (क, ख, घ)।
६. अंजलिभिरिति गम्यते (वृ)।
७. असिपंजरसत्तिपंजरगया (क, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. वहबंधभियोगवेरघोरेहिं पमुच्चंति य, अमित्तमज्झाहिं निइंति[1] अणहा य सच्चवादी ।।

९. सादेव्वाणि य देवयाओ करेंति सच्चवयणे रताणं ।।

सच्चस्स थुइ-पदं

१०. तं सच्चं[2] भगवं तित्थगरसुभासियं दसविहं चोद्दसपुव्वीहिं पाहुडत्थविदितं 'महरिसीण य समयप्पदिण्णं'[3] देविंद-नरिंद-भासियत्थं वेमाणियसाहियं महत्थं मंतोसहिविज्जसाहणट्ठं चारणगण-समण-सिद्धविज्जं मणुयगणाणं च वंदणिज्जं 'अमरगणाणं च अच्चणिज्जं असुरगणाणं च पूयणिज्जं,'[4]

अणेगपासंड-परिग्गहियं, जं तं लोकम्मि सारभूयं ।
गंभीरतरं महासमुद्दाओ, थिरतरगं मेरुपव्वयाओ ।
सोमतरं चंदमंडलाओ, दित्ततरं सूरमंडलाओ ।
विमलतरं सरयनहयलाओ, सुरभितरं गंधमादणाओ ।।

११. जे वि य लोगम्मि अपरिसेसा मंता जोगा जवा य विज्जा य जंभका य अत्थाणि य सत्थाणि य सिक्खाओ य आगमा य सव्वाणि[5] वि ताइं सच्चे पइट्ठियाइं ।।

सावज्जसच्च-पदं

१२. सच्चंपि य संजमस्स उवरोहकारकं[6] किंचि न वत्तव्वं—हिंसा-सावज्जसंपउत्तं भेय-विकहकारकं अणत्थवाय-कलहकारकं अणज्जं अववाय-विवायसंपउत्तं वेलंबं ओजघेज्जबहुलं निल्लज्जं लोयगरहणिज्जं दुद्दिट्ठं दुस्सुयं दुम्मुणियं[7] ।।

१३. अप्पणो थवणा, परेसु निंदा—

नसि[8] मेहावी, न तंसि धण्णो ।
नसि पियधम्मो, न तं कुलीणो ।
नसि दाणपती, न तंसि सूरो ।
नसि पडिरूवो, न तंसि लट्ठो ।
न पंडिओ, न बहुस्सुओ, न वि य तं तवस्सी ।

---

१. नइंति (क) ।
२. भगवंतं (क, ख, ग, घ, च) ।
३. °प्पइण्णं (वृ); महरिसिसमयपइण्णचिण्णं (वृपा) ।
४. × (क) ।
५. सव्वाइं (ख, च) ।
६. अवरोहकारकं (ख) ।
७. अमुणियं (ख, ग, घ, च) ।
८. त्वमिति गम्यते (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न यावि परलोगणिच्छियमतीऽसि सव्वकालं, जाति-कुल-रूव-वाहि-रोगेण वा वि जं होइ वज्जणिज्जं दुहिलं[1] उवयारमतिकंतं —एवंविहं सच्चंपि न वत्तव्वं ।।

अणवज्जसच्च-पदं

१४. अह केरिसकं पुणाइं सच्चं तु भासियव्वं ? जं तं दव्वेहिं पज्जवेहि य गुणेहिं कम्मेहिं सिप्पेहिं आगमेहि य नामक्खाय-निवाओवसग्ग-तद्धिय-समास-संधि-पद-हेउ-जोगिय-उणादि-किरियाविहाण-धातु-सर[2]-विभत्ति-वण्णजुत्तं तिकल्लं दसविहं पि सच्चं जह भणियं तह य कम्मुणा होइ ।

दुवालसविहा होइ भासा, वयणंपि य होइ सोलसविहं ।
एवं अरहंतमणुण्णायं समिक्खियं संजएणं कालम्मि य वत्तव्वं ।।

१५. इमं च अलिय-पिसुण-फरुस-कडुय-चवल-वयण-परिरक्खणट्ठयाए[3] पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चाभाविकं आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाणं विओसमणं ।।

सच्चस्स पंचभावणा-पदं

१६. तस्स इमा पंच भावणाओ बितियस्स वयस्स अलियवयणवेरमण[4]-परिरक्खणट्ठयाए ।।

१७. पढमं सोऊणं संवरट्ठं परमट्ठं, सुट्ठु जाणिऊण न वेगियं[5] न तुरियं न चवलं न कडुयं न फरुसं न साहसं न य परस्स पीलाकरं सावज्जं, सच्चं च हियं च मियं च 'गाहकं च'[6] सुद्धं संगयमकाहलं च समिक्खितं संजतेण कालम्मि य वत्तव्वं ।

एवं अणुवीइसमितिजोगेण[7] भाविओ भवति अंतरप्पा, संजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरो सच्चज्जवसंपण्णो ।।

१८. बितियं—कोहो[8] ण सेवियव्वो । कुद्धो चंडिक्किओ मणूसो अलियं भणेज्ज, पिसुणं भणेज्ज, फरुसं भणेज्ज, अलियं पिसुणं फरुसं भणेज्ज ।
कलहं करेज्ज, वेरं करेज्ज, विकहं करेज्ज, कलहं वेरं विकहं करेज्ज ।
सच्चं हणेज्ज, सीलं हणेज्ज, विणयं हणेज्ज, सच्चं सीलं विणयं हणेज्ज ।
वेसो भवेज्ज, वत्थुं भवेज्ज, गम्मो भवेज्ज, वेसो वत्थुं गम्मो भवेज्ज ।

---

१. दुहओ (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।
२. रस (वृपा) ।
३. परिरक्खणट्ठाए (क) ।
४. अलियवयणस्स ° (क, ख, ग, घ, च); एतद् विहाय सर्वेष्वपि संवरद्वारेषु समस्तं पदमुपलभ्यते । अत्रापि तथैव युज्यते । असमस्तपदस्यार्थो भ्रान्तिं जनयति ।
५. वेतितं (क); वेइयं (ख, ग, च) ।
६. गाहगं (क) ।
७. अणुवीति ° (क); अणुवीयि ° (ख, घ); अणुवीय ° (च) ।
८. कोधो (ख, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एयं अण्णं च एवमादियं भणेज्ज कोहग्गि-संपलित्तो, तम्हा कोहो न सेवियव्वो । एवं खंतीए[1] भाविओ भवति अंतरप्पा, संजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरो सच्चज्जवसंपण्णो ।।

१९. ततियं—लोभो न सेवियव्वो ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं खेत्तस्स व वत्थुस्स व कतेण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं कित्तीए व लोभस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं इड्ढीए व सोक्खस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं भत्तस्स व पाणस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं पीढस्स व फलगस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं सेज्जाए व संथारकस्स[2] व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं वत्थस्स व पत्तस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं कंबलस्स व पायपुंछणस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं सीसस्स व सिस्सिणीए व कएण ।
अण्णेसु[3] य एवमादिएसु बहुसु कारणसतेसु लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं, तम्हा लोभो न सेवियव्वो ।

एवं मुत्तीए[4] भाविओ भवति अंतरप्पा, संजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरो सच्चज्जवसंपण्णो ।।

२०. चउत्थं—न भाइयव्वं । भीतं खु भया अइंति लहुयं, भीतो अबितिज्जओ मणूसो, भीतो भूतेहिं व घेपेज्जा, भीतो अण्णं पि हु भेसेज्जा, भीतो तव-संजमं पि हु मुएज्जा, भीतो य भरं न नित्थरेज्जा, सप्पुरिसनिसेवियं च मग्गं भीतो न समत्थो अणुचरिउं । तम्हा न भाइयव्वं[5] भयस्स वा वाहिस्स वा रोगस्स वा जराए वा मच्चुस्स वा अण्णस्स व एवमादियस्स[6] ।

एवं धेज्जेण भाविओ भवति अंतरप्पा, संजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरो सच्चज्जवसंपण्णो ।।

२१. पंचमकं—हासं न सेवियव्वं । अलियाइं असंतकाइं जंपंति हासइत्ता । परपरिभवकारणं च हासं, परपरिवायप्पियं च हासं, परपीलाकारगं च हासं, भेदविमुत्तिकारकं च हासं, अण्णोण्णजणियं च होज्ज हासं, अण्णोण्णगमणं च होज्ज मम्मं, अण्णोण्णगमणं च होज्ज कम्मं, कंदप्पाभिओगगमणं च होज्ज हासं, आसुरियं किब्बिसत्तं च जणेज्ज हासं, तम्हा हासं न सेवियव्वं ।

---

१. खंतीयं (ख); खंतीय (ग, घ, च) ।
२. संथारस्स (क) ।
३. लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं अण्णेसु (क, ख, ग, घ, च) ।
४. मुत्तीय (ख, घ) ।
५. भावितव्वं (क); भातियव्वं (ग) ।
६. एगस्स (वृ); एवमादियस्स (वृपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं मोणेण भाविओ भवइ अंतरप्पा, संजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरो सच्चज्जवसंपण्णो ।।

निगमण-पदं

२२. एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुप्पणिहियं इमेहिं पंचहि वि कारणेहिं मण-वयण-काय-परिरक्खिएहिं ।।

२३. निच्चं आमरणंतं च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सुद्धो[1] सव्वजिणमणुण्णाओ ।।

२४. एवं बितियं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं 'आराहियं आणाए अणुपालियं'[2] भवति ।।

२५. एवं नायमुणिणा भगवया पण्णवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवितं सुदेसितं पसत्थं । बितियं संवरदारं समत्तं ।

-- त्ति बेमि ।।

---

१. × (क, ख, ग, घ) ।

२. अणुपालियं आणाए आराहियं (क, ख, ग, घ, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठमं अज्झयणं

तइयं संवरदारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू ! दत्ताणुण्णायसंवरो[1] नाम होति ततियं—सुव्वतं[2] महव्वतं गुणव्वतं परदव्व-हरणपडिविरइकरणजुत्तं अपरिमियमणंततण्हामणुगय-महिच्छ-मणवयणकलुस-आयाणसुनिग्गहियं सुसंजमियमण-हत्थ-पायनिहुयं निग्गंथं णेट्ठिकं निरुत्तं निरासवं निब्भयं विमुत्तं उत्तमनरवसभ-पवरबलवग-सुविहियजणसंमतं परम-साहुधम्मचरणं ।।

अदत्तस्स अग्गहण-पदं

२. जत्थ य गामागर-नगर-निगम-खेड-कव्वड[3]-मडंब-दोणमुह-संवाह-पट्टणासमगयं च किंचि दव्वं मणि-मुत्त-सिल-प्पवाल-कंस-दूस-रयय-वरकणग-रयणमादिं पडियं पम्हुट्ठं विप्पणट्ठं न कप्पति कस्सति[4] कहेउं वा गेण्हिउं वा । अहिरण्ण-सुवण्णिकेण समलेट्ठुकंचणेणं अपरिग्गहसंवुडेणं लोगंमि विहरियव्वं ।।

३. जं पि य होज्जा हि दव्वजातं 'खलगतं खेत्तगतं रण्णमंतरगतं व'[5] किंचि पुप्फ-फल-तय-प्पवाल-कंद-मूल-तण-कट्ठ-सक्कराइं अप्पं व बहुं व अणुं व थूलगं वा न कप्पति ओग्गहे अदिण्णंमि गिण्हिउं जे ।।

---

१. दत्तमणुण्णायं° (क); दत्तमणुण्णाय° (ख, ग, घ, च) ।

२. सुव्वत (क, ख, ग, घ, च); वृत्तिकारेण 'सुव्वय' इति पाठो लब्धः, तेन 'हे सुव्रत' इति सम्बोधनत्वेन व्याख्यातः । वस्तुतोऽत्र 'सुव्वयं महव्वयं गुणव्वयं' एतानि त्रीण्यपि पदानि एकरूपाणि सन्ति । एकस्मिन् क्वचित्प्रयुक्तादर्शे 'सुव्वयं' इति पाठोपि लब्धः । तेनासौ पाठः स्वीकृतः ।

३. खव्वड (क)

४. कासती (क, घ) ।

५. वाचनान्तरे—जलथलगयं खेत्तमंतरगयं(वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. हणिहणि ओग्गहं अणुण्णविय गेण्हियव्वं। वज्जेयव्वो य सव्वकालं अचियत्त-घरप्पवेसो, अचियत्तभत्तपाणं अचियत्तपीढ-फलग-सेज्जा-संथारग-वत्थ-पत्त-कंबल-दंडग-रयहरण-निसेज्ज-चोलपट्टग-मुहपोत्तिय-पायपुंछणाइ-भायण - भंडोवहि-उवकरणं परपरिवाओ परस्स दोसो परववएसेणं जं च गेण्हइ, परस्स नासेइ जं च सुकयं, दाणस्स य अंतरातियं, दाणविप्पणासो, पेसुण्णं चेव मच्छरित्तं च ॥

अदत्तादाणवेरमणस्स अजोग्गता-पदं

५. जे वि य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारग-वत्थ-पाय[1]-कंबल-रओहरण[2]-निसेज्ज-चोलपट्टग-मुहपोत्तिय-पायपुंछणादि-भायण-भंडोवहि-उवकरणं[3] असंविभागी, असंगहरुई,
'तव-वइतेणे'[4] य रूवतेणे य, आयारे चेव भावतेणे य,
सद्दकरे झंझकरे कलहकरे वेरकरे विकहकरे असमाहिकारके, सया अप्पमाण-भोई[5] सततं अणुबद्धवेरे य निच्चरोसी, से तारिसए नाराहए वयमिणं ॥

अदत्तादाणवेरमणस्स जोग्गता-पदं

६. अह केरिसए पुणाइं आराहए वयमिणं ?
जे से उवहि-भत्तपाण-'दाण-संगहण'[6]-कुसले अच्चंतबाल-दुब्बल-गिलाण-वुड्ढ-खमके पवत्ति-आयरिय-उवज्झाए सेहे साहम्मिए तवस्सी-कुल-गण-संघ-चेइयट्ठे य निज्जरट्ठी वेयावच्चं अणिस्सियं दसविहं बहुविहं करेति, न य अचियत्तस्स घरं[7] पविसइ, न य अचियत्तस्स 'गेण्हइ भत्तपाणं'[8], न य अचियत्तस्स सेवइ पीढ-फलग-सेज्जा-संथारग-वत्थ-पाय-कंबल-दंडग-रओहरण- निसेज्ज-चोलपट्टय-मुहपोत्तिय-पायपुंछणाइ-भायण-भंडोवहि-उवगरणं, न य परिवायं परस्स जंपति, ण यावि दोसे परस्स गेण्हति, परववएसेणवि न किंचि गेण्हति, न य विपरिणामेति कंचि[9] जणं, न यावि णासेति दिण्ण-सुकयं, दाऊण य काऊण य न होइ पच्छातावए, संविभागसीले संगहोवग्गहकुसले, से तारिसए आराहए वयमिणं ॥
७. इमं च परदव्वहरणवेरमण-परिरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चाभाविकं आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाण विओसमणं[10] ॥

---

१. पत्त (च)।
२. रओहरण (ख, ग, घ,)।
३. प्रतीत्येति गम्यते (वृ)।
४. तव तेणे य वइ० (क, ख, ग, घ)।
५. °भोती (क, ग)।
६. संगहणदाण (क, ग, च)।
७. गिहं (क, ग)।
८. भत्तपाणं गेण्हइ (ख, घ, च)।
९. किंचि (क)।
१०. विओवसमणं (क, ख, ग, घ, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अदत्तादाणवेरमणस्स पंचभावणा-पदं

८. तस्स इमा पंच भावणा तितियस्स वतस्स होंति परदव्वहरणवेरमण-परिरक्खणट्ठयाए ॥

९. पढमं—देवकुल-सभ-प्पवा-आवसह[1]-रुक्खमूल-आराम-कंदरा - आगर-गिरिगुह[2]-'कम्मंत-उज्जाण'[3]-जाणसाल-कुवितसाल-मंडव - सुण्णघर - सुसाण-लेण[4]-आवणे, अण्णंमि य एवमादियंमि दगमट्टिय[5]-बीज-हरित-तसपाण-असंसत्ते अहाकडे फासुए विवित्ते पसत्थे उवस्सए होइ विहरियव्वं ।
आहाकम्मं-बहुले य जे से आसित्त-संमज्जिओसित्त-सोहिय-छायण-दुमण-लिंपण-अणुलिंपण-जलण-भंडचालण[6], अंतो बहिं च असंजमो जत्थ वट्टती[7], संजयाण अट्ठा 'वज्जेयव्वे हु उवस्सए'[8] से तारिसए सुत्तपडिकुट्ठे ।
एवं विवित्तवासवसहिसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, निच्चं अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय[9]-ओग्गहरुई[10] ॥

१०. बितियं—आरामुज्जाण-काणण-वणप्पदेसभागे जं किंचि इक्कडं व कढिणगं व जंतुगं व 'परा-मेरा'[11] - कुच्च - कुस - डब्भ - पलाल - मूयग - वल्लय[12]-पुप्प- फल-तय-प्पवाल-कंद-मूल-तण-कट्ठ-सक्कराइं गेण्हइ सेज्जोवहिस्स अट्ठा, न कप्पए ओग्गहे अदिण्णंमि गेण्हिउं जे । हणिहणि ओग्गहं अणुण्णविय गेण्हियव्वं ।
एवं ओग्गहसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, निच्चं अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहरुई ॥

११. तितियं—पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगट्ठयाए रुक्खा न छिंदियव्वा, न य छेदणेण[13] भेयणेण य सेज्जा कारेयव्वा ।
जस्सेव उवस्सए वसेज्ज सेज्जं तत्थेव गवेसेज्जा, न य विसमं समं करेज्जा, न निवाय[14]—पवाय-उस्सुकत्तं, न डंसमसगेसु खुभियव्वं, अग्गी धूमो य न कायव्वो ।
एवं संजमबहुले संवरबहुले संवुडबहुले समाहिबहुले धीरे कारण फासयंते सययं अज्झप्पज्झाणजुत्ते समिए एगे चरेज्ज धम्मं ।

---

१. वसहि (क, ख, घ) ।
२. गिरिगुहा (च) ।
३. कम्मंतुज्जाण (क, ग, घ), कम्मं उज्जाण (ख, च) ।
४. लयण (ख) ।
५. °मट्टिया (ख, घ) ।
६. एतेषां समाहारद्वन्द्वः विभक्तिलोपश्च दृश्यः (वृ) ।
७. वट्टति (च) ।
८. वज्जेयव्वो हु उवस्सओ (ग) ।
९. दत्तमणुण्णाय (क, ख, ग, घ, च); सर्वत्र ।
१०. °रुती (क, ग) ।
११. परमेर (क); परंमेरा (ख); परमेरा (घ) ।
१२. पव्वय (ख, घ); वल्वजः तृणविशेषः (वृ) ।
१३. छेदण (ख, ग, घ, च) ।
१४. निव्वाय (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं सेज्जासमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, निच्चं अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहरुई ।।

१२. चउत्थं—साहारणपिंडपातलाभे भोत्तव्वं संजएण समियं, न सायसूयाहिकं, न खद्धं, न वेइयं[1], न तुरियं, न चवलं, न साहसं, न य परस्स पीलाकरं सावज्जं, तह भोत्तव्वं जह से ततियवयं न सीदति ।
साहारणपिंडवायलाभे सुहुमं 'अदिण्णादाणवय-नियम-वेरमण'[2] ।
एवं साहारणपिंडवायलाभ समितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, निच्चं अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहरुती ।।

१३. पंचमगं—साहम्मिएसु विणओ पउंजियव्वो, उवकारण-पारणासु विणओ पउंजियव्वो, वायण-परियट्टणासु विणओ पउंजियव्वो, दाण-गहण-पुच्छणासु विणओ पउंजियव्वो, निक्खमण-पवेसणासु विणओ पउंजियव्वो, अण्णेसु य एवमाइएसु बहुसु कारणसएसु विणओ पउंजियव्वो । विणओ वि तवो तवो वि धम्मो, तम्हा विणओ पउंजियव्वो गुरूसु साहूसु तवस्सीसु य ।
एवं विणएण भाविओ भवति अंतरप्पा, णिच्चं अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहरुई ।।

निगमण-पदं

१४. एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुपणिहियं 'इमेहिं पंचहि वि कारणेहिं मण-वयण-काय-परिरक्खिएहिं ।।

१५. निच्चं आमरणतं च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णाओ ।।

१६. 'एवं ततियं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं 'आराहियं आणाए अणुपालियं'[3] भवति ।

१७. एवं नायमुणिणा भगवया पण्णवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवियं[4] सुदेसियं पसत्थं । ततियं संवरदारं समत्तं ।

—त्ति बेमि ।।

---

१. वेतितं (क) ।
२. अदिण्णादाणविरमणवयनियमणं (वृ); अदिण्णादाणवयनियमवेरमणं (वृपा) ।
३. अणुपालियं आणाए आराहियं (च) ।
४. एवं जाव आघवियं (क, ख, ग, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवमं अज्झयणं

चउत्थं संवरदारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू ! एत्तो य बंभचेरं- उत्तम-तव-नियम-णाण-दंसण-चरित्त-सम्मत्त-विणयमूलं जम[1]-नियम-गुणप्पहाणजुत्तं हिमवंत-महंत-तेयमंतं पसत्थ-गंभीर-थिमित-मज्झं अज्जवसाहुजणाचरितं मोक्खमग्गं विसुद्ध-सिद्धिगति-निलयं 'सासयमव्वाबाहम-पुणब्भवं पसत्थं सोमं सुभं सिवमचलमक्खयकरं'[2] जतिवर-सारक्खियं[3] सुचरियं सुसाहियं[4] नवरि मुणिवरेहिं महापुरिस-धीर[5]-सूर-धम्मिय-धितिमंताण य सया विसुद्धं भव्वं भव्वजणाणुचिण्णं[6] निस्संकियं[7] निब्भयं नित्तुसं निरायासं निरुवलेवं निव्वुतिघरं नियम-निप्पकंपं तवसंजममूलदलिय-णेम्मं पंचमहव्वयसुरक्खियं समितिगुत्तिगुत्तं झाणवरकवाडसुकयं[8] अज्झप्पदिण्णफलिहं संणद्धोत्थइय-दुग्गइपहं[9] सुगतिपहदेसगं[10] लोगुत्तमं च वयमिणं पउमसरतलागपालिभूयं महासगडअरगतुंबभूयं महाविडिमरुक्खक्खंधभूयं महानगरपागारकवाडफलिहभूयं रज्जुपिणद्धो व इंदकेतू विसुद्धणेगगुणसंपिणद्धं ।।

बंभचेरमाहप्प-पदं

२. जंमि य भग्गंमि होइ सहसा सव्वं संभग्ग-मथिय-चुण्णिय-कुसल्लिय-पल्लट्ट-

---

१. यम (ग, घ) ।
२. सासयमपुणब्भवं पसत्थं सोमं सुहं सिवमक्ख-यकरं (च); सासयमव्वाबाहमपुणब्भवं पसत्थं सोमं सुहं सिवमचलमक्खयकरं (कृपा) ।
३. संरक्खियं (ख) ।
४. सुभासियं (ग) ।
५. वीर (क, ख, घ) ।
६. भव्वजणसमुच्चिण्णं (क, ख) ।
७. नीसंकं (ख) ।
८. °सुक्कयरक्खणं (च) ।
९. सण्णद्धवद्धोच्छइय° (च) ।
१०. °देसगं च (क, ख, ग, घ, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिय-खंडिय-परिसडिय-विणासियं विणयसीलतवनियमगुणसमूहं, तं बंभं भगवंतं—

गहगण-नक्खत्त-तारगाणं वा जहा उडुपती[1],
मणि-मुत्त-सिल-प्पवाल-रत्तरयणागराणं च जहा समुद्दो,
वेरुलिओ चेव जह मणीणं,
जह[2] मउडो चेव भूसणाणं,
वत्थाणं चेव खोमजुयलं,
अरविंदं चेव पुप्फजेट्ठं,
गोसीसं चेव चंदणाणं,
हिमवंतो चेव ओसहीणं,
सीतोदा चेव निन्नगाणं,
उदहीसु जहा सयंभुरमणो,
रुयगवरे चेव मंडलिकपव्वयाण पवरे,
एरावण इव कुंजराणं,
सीहो व्व जहा मिगाणं पवरो,
पवकाणं चेव वेणुदेवे,
धरणो जह पण्णगइंदराया[3],
कप्पाणं चेव बंभलोए,
सभासु य जहा भवे सुहम्मा,
ठितिसु लवसत्तम व्व पवरा,
दाणाणं चेव अभयदाणं,
किमिराओ चेव कंबलाणं,
संघयणे चेव वज्जरिसभे,
संठाणे चेव समचउरंसे,
झाणेसु य परमसुक्कज्झाणं,
णाणेसु य परमकेवलं तु सिद्धं,
लेसासु य परमसुक्कलेस्सा,
तित्थकरो चेव जह मुणीणं,
वासेसु जहा महाविदेहे,
गिरिराया चेव मंदरवरे,

---

१. उलूपती (क); उदूपती (ग, घ)।
२. जहा (ख, ग)।
३. पण्णइंदराया (क, घ, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वणेसु जह नंदणवणं पवरं,
दुमेसु जह जंबू सुदंसणा वीसुयजसा— जीसे नामेण य अयं दीवो,
तुरगवती गयवती रहवती नरवती जह वीसुए चेव राया,
रहिए चेव जहा महारहगते ।
एवमणेगा गुणा अहीणा भवंति एक्कंमि बंभचेरे ।।

३. जंमि य आराहियंमि आराहियं वयमिणं सव्वं ।
सीलं तवो य विणओ य, संजमो य खंती गुत्ती मुत्ती ।
तहेव इहलोइय-पारलोइय-जसो य कित्ती य पच्चओ य ।
तम्हा निहुएण बंभचेरं चरियव्वं सव्वओ विसुद्धं जावज्जीवाए जाव सेयट्ठि-संजओत्ति—एवं भणियं वयं भगवया ।
तं च इमं—

पंचमहव्वय-सुव्वयमूलं, समणमणाइलसाहुसुचिण्णं ।
वेरविरामण-पज्जवसाणं, सव्वसमुद्द-महोदधितित्थं ।।१।।
तित्थकरेहि सुदेसियमग्गं, नरयतिरिच्छविवज्जियमग्गं ।
सव्वपवित्त-सुनिम्मियसारं, सिद्धिविमाण-अवंगुयदारं ।।२।।
देवनरिंदनमंसियपूयं, सव्वजगुत्तममंगलमग्गं ।
दुद्धरिसं गुणनायगमेक्कं, मोक्खपहस्स वडिंसकभूयं ।।३।।

जेण सुद्धचरिएण भवइ सुबंभणो सुसमणो सुसाहू । स इसी स मुणी स संजए स एव भिक्खू, जो सुद्धं चरति बंभचेरं ।।

बंभचेरथिरीकरण-पदं

४. इमं च रति-राग-दोस-मोह[1]-पवड्ढणकरं किमज्झ-पमायदोस-पासत्थसीलकरणं अब्भंगणाणि य तेल्लमज्जणाणि य अभिक्खणं कक्खसीसकरचरणवदणधोवण-संबाहण-गायकम्म-परिमद्दण-अणुलेवण-चुण्णवास-धूवण - सरीरपरिमंडण-बाउसिक-हसिय-भणिय-नट्टगीयवाइयनडनट्टकजल्लमल्लपेच्छण-वेलंबक[2] जाणि य सिंगारागाराणि य अण्णाणि य एवमादियाणि तव-संजम-बंभचेर-घातोवघातियाइं अणुचरमाणेणं बंभचेरं वज्जेयव्वाइं सव्वकालं । भावेयव्वो भवइ य अंतरप्पा इमेहिं तव-नियम-सील-जोगेहिं निच्चकालं, किं ते ?—
अण्हाणक-ऽदंतधोवण[3] - सेयमलजल्लधारण - मूणवय-केसलोय-खम-दम-अचेलग-खुप्पिवास - लाघव - सीतोसिण-कट्ठसेज्ज-भूमिनिसेज्ज-परघरपवेस-लद्धावलद्ध-

---

१. संमोह (क, च) । वर्जयितव्या इति योगः (वृ) ।
२. छान्दसत्वाच्च प्रथमाबहुवचनलोपो द्रष्टव्यः, ३. अदंतधोवण (च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणावमाण-निंदण-दंसमसगफास-नियम-तवगुणविणयमादिएहिं जहा से थिर-तरगं होइ बंभचेरं ॥

५. इमं च अबंभचेरविरमण[1]-परिरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहित पेच्चाभाविकं आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाण विओसवणं ॥

बंभचेरस्स पंचभावणा-पदं

६. तस्स इमा पंच भावणाओ चउत्थवयस्स होंति अबंभचेरवेरमण-परिरक्खणट्ठयाए ॥

७. पढमं –सयणासण - घरदुवारअंगण - आगास - गवक्ख - साल - अभिलोयण-पच्छवत्थुक-पसाहणकण्हाणिकावकासा, अवकासा जे य वेसियाणं, अच्छंति य जत्थ इत्थिकाओ अभिक्खणं मोह-दोस-रति-रागवड्ढणीओ, कहिंति य कहाओ बहुविहाओ, ते हु वज्जणिज्जा । इत्थिसंसत्त-संकिलिट्ठा, अण्णे वि य एवमादी अवकासा ते हु वज्जणिज्जा जत्थ मणोविब्भमो 'वा भंगो वा'[2] भंसणा वा अट्ट रुद्दं च होज्ज झाणं तं तं वज्जेज्ज वज्जभीरू अणायतणं अंतपंतवासी ।

एवमसंसत्तवासवसहीसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, आरतमण-विरयगामधम्मे जितेंदिए बंभचेरगुत्ते ॥

८. बितियं—नारीजणस्स मज्झे न कहेयव्वा कहा—विचित्ता विब्बोय-विलास-संपउत्ता हास-सिंगार-लोइयकह व्व मोहजणणी, न आवाह-विवाह-वरकहा,[3] इत्थीणं वा सुभग-दुब्भग[4]-कहा, चउसट्ठि[5] च महिला गुणा, न वण्ण-देस-जाति-कुल-रूव-नाम-नेवत्थ-परिजणकहव्व इत्थियाणं, अण्णा वि य एवमादियाओ कहाओ सिंगार-कलुणाओ तव-संजम-बंभचेर-घातोवघातियाओ अणुचरमाणेण बंभचेरं न कहेयव्वा, न सुणेयव्वा, न चितेयव्वा ।

एवं इत्थीकहविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, आरतमण-विरयगामधम्मे जितेंदिए बंभचेरगुत्ते ॥

९. ततियं—नारीण हसिय - भणिय - चेट्ठिय - विप्पेक्खिय-गइ - विलास-कीलियं, विब्बोइय-नट्ठ-गीत-वाइय-सरीरसंठाण- वण्ण - कर - चरण - नयण - लावण्ण-रूव-जोवण्ण-पयोहर-अधर-वत्थ-अलंकार-भूसणाणि य, गुज्झोकासियाइं[6], अण्णाणि य एवमादियाइं तव-संजम-बंभचेर-घातोवघातियाइं अणुचरमाणेण बंभचेरं न चक्खुसा न मणसा न वयसा पत्थेयव्वाइं पावकम्माइं ।

---

१. बंभचेर° (क, ग, घ); बंभविरमण (ख) ।
२. व्व भंगो व्व (क) ।
३. °कहाविव (क, ख, ग, घ, च) ।
४. दुभग (ख, ग, घ) ।
५. चोयट्ठि (ख, ग, घ) ।
६. गुज्झोवकासियाइं (क, ख, ग, घ, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं इत्थीरूवविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, आरतमण-विरयगामधम्मे जितेंदिए बंभचेरगुत्ते ॥

१०. चउत्थं—पुव्वरय-पुव्वकीलिय-पुव्वसगंथ[1]-गंथ-संथुया जे ते आवाह-विवाह-चोल्लकेसु य तिथिसु जण्णेसु उस्सवेसु य सिंगारागार-चारुवेसाहिं इत्थीहिं[2] हाव-भाव-पललिय - विक्खेव[3] - विलास-सालिणीहिं अणुकूलपेम्मिकाहिं[4] सद्धिं अणुभूया सयण-संपओगा, उदुसुह-वरकुसुम-सुरभिचंदण-सुगंधिवर[5]-वास-धूव-सुहफरिस-वत्थ-भूसणगुणोववेया, रमणिज्जाओज्ज-गेज्ज[6]-पउरनड-नट्टक-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिक-वेलंबग - कहग - पवग - लासग - आइक्खग - लंख - मंख - तूणइल्ल-तुंबवीणिय-तालायर-पकरणाणि य बहूणि महुरसर-गीत-सुस्सराइं, अण्णाणि य एवमाइयाइं तव-संजम-बंभचेर-घातोवघातियाइं अणुचरमाणेण बंभचेरं न ताइं समणेण लब्भा दट्ठं न कहेउं नवि सुमरिउं जे ।

एवं पुव्वरयपुव्वकीलियविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, आरयमण-विरतगामधम्मे जितिंदिए बंभचेरगुत्ते ॥

११. पंचमगं—आहारपणीय-निद्धभोयण-विवज्जए संजते सुसाहू ववगयखीर-दहि-सप्पि-नवनीय-तेल्ल-गुल-खंड-मच्छंडिक-महु-मज्ज-मंस-खज्जक-विगति-परिचत्त-कयाहारे न दप्पणं[7] न बहुसो न नितिकं न सायसूपाहिकं न खद्धं, तहा भोत्तव्वं जह से जायामाता य भवति, न य भवति विब्भमो भंसणा य धम्मस्स ।

एवं पणीयाहारविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, आरयमण-विरतगामधम्मे जितिंदिए बंभचेरगुत्ते ॥

निगमण-पदं

१२. एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुप्पणिहितं इमेहिं पंचहि वि कारणेहिं मण-वयण-काय-परिरक्खिएहिं ॥

१३. णिच्चं आमरणंतं च एस[8] जोगो णेयव्वो[9] धितिमता मतिमता अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी[10] असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णाओ ॥

---

१. °संगंथ (ख, ग, घ, च) ।
२. × (ख,ग,घ,च); स्त्रीभिरिति गम्यते (वृ) ।
३. विच्छेव (क, ख, घ, च) ।
४. °पेम्मकाहिं (क) ।
५. सुगध° (क, ख, ग, घ, च) ।
६. गेय (ग) ।
७. आहारं भुंजीतेतिशेषः (वृ) ।
८. एसो (क, ख, ग, घ) ।
९. णायव्वो (ख, घ) ।
१०. अपरिस्सादी (क); अपरिस्साती (ख,घ,च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. एवं[1] चउत्थं संवरदारं फासितं पालितं सोहितं तीरितं किट्टितं आराहितं आणाए अणुपालितं भवति ॥

१५. एवं नायमुणिणा भगवया पण्णवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवियं सुदेसितं पसत्थं । चउत्थं संवरदारं समत्तं ।

—त्ति बेमि ॥

---

१. एयं (क, ख, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दसमं अज्झयणं

पंचमं संवरदारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू ! अपरिग्गहो[1] संवुडे य समणे आरंभ-परिग्गहातो विरते, विरते कोहमाणमायालोभा।

एगे असंजमे। दो चेव राग-दोसा। तिण्णि य दंडा, गारवा य, गुत्तीओ, तिण्णि[2] य विराहणाओ। चत्तारि कसाया, झाणा, सण्णा, विकहा तहा य हुंति चउरो। पंच य किरियाओ,समिति-इंदिय-महव्वयाइं च। छज्जीवनिकाया,छच्च लेसाओ। सत्त भया। अट्ठ य मया। नव चेव य बंभचेरगुत्ती। दसप्पकारे य समणधम्मे। एक्कारस य उवासगाणं[3]। बारस य भिक्खुपडिमा। किरियठाणा य। भूयगामा। परमाधम्मिया। गाहासोलसया। असंजम-अबंभ-णाय-असमाहिठाणा। सबला। परिसहा। सूयगडज्झयण-देव-भावण-उद्देस-गुण-पकप्प-पावसुत-मोहणिज्जे। सिद्धातिगुणा य। जोगसंगहे, 'सुरिंदा। तेत्तीसा आसातणा'[4]। [आदिं[5] एक्काइयं करेत्ता एक्कुत्तरियाए[6] वड्ढिएसु तीसातो जाव उ भवे तिकाहिका[7]]

---

१. अपरिग्गह (क, ग, घ, च)।

२. तिन्नि तिन्नि (क, ग, घ, च)।

३. प्रतिमा भवन्तीति गम्यम् (वृ)।

४. तेत्तीमा आसातणा सुरिंदा (क, ख, ग, घ, च); आदर्शेषु यद्यपि 'तेत्तीसा आसातणा सुरिंदा' एवं पाठो दृश्यते, किन्तु अर्थमीमांसया नैव सङ्गच्छते। 'जोगसंगहे सुरिंदा' एष क्रमः स्यात् तदार्थसङ्गतिर्जायते। यथा—'तिण्णि य दंडा गारवा य गुत्तीओ, तिण्णि य विराहणाओ' एवं एकस्यां संख्यायामनेकेषां विषयाणामुल्लेखोस्ति तथा द्वात्रिंशत्संख्यायामपि द्वयोर्विषयोरुल्लेखोस्ति, द्रष्टव्यमिह 'समवाओ' (३२।१,२) यथा—'बत्तीसं जोगसंगहा पण्णत्ता' तथा 'बत्तीसं देविंदा पण्णत्ता'। अत्र 'देविंदा' इति पदस्य स्थाने 'सुरिंदा' इति पदं प्रयुक्तमस्ति।

५. एएसु त्ति वाक्यशेषः (वृ)।

६. वृद्धचा इति गम्यते (वृ)।

७. असौ पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विरती-पणिहोसु अविरतीसु य, एवमादिसु बहूसु ठाणेसु जिणपसत्थेसु अवितहेसु सासयभावेसु अवट्ठिएसु संकं कंखं निराकरेत्ता सद्दहते सासणं भगवतो अणियाणे अगारवे अलुद्धे अमूढमण-वयण-कायगुत्ते ॥

२. जो सो वीरवरवयणविरतिपवित्थर-बहुविहप्पकारो सम्मत्तविसुद्धमूलो धितिकंदो विणयवेइओ निग्गततिलोक्कविपुलजसनिचियपीणपीवरसुजातखंधो पंचमहव्वयविसालसालो भावणतयंत[1]-ज्झाण-सुभजोग-नाण-पल्लववरंकुरधरो बहुगुणकुसुमसमिद्धो सीलसुगंधो अणण्हयफलो[2] पुणो य मोक्खवरबीजसारो मंदरगिरि-सिहरचूलिका इव इमस्स मोक्खवर-मोत्तिमग्गस्स सिहरभूओ संवरवरपायवो। चरिमं संवरदारं ॥

अकप्पदव्वजाय-पदं

३. जत्थ न कप्पइ गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासमगयं च किंचि अप्पं व बहुं व अणुं व थूलं व तस-थावरकाय-दव्वजायं मणसा वि परिघेत्तुं।[3] न हिरण्ण-सुवण्ण-खेत्त-वत्थुं, न दासी-दास-भयक-पेस-हय-गय-गवेलगं व, न जाण-जुग्ग-सयणासणाइं, न छत्तकं न कुंडिया[4] 'न पाणहा'[5] न पेहुण-वीयण-तालियंटका[6] ॥

४. न यावि अय-तउय-तंब - सीसक-कंस - रयत - जातरूव-मणि - मुत्ताधारपुडक-[7] संख-दंतमणि-सिंग-सेल[8]-काय-वइर[9]-चेल-चम्म-पत्ताइं महारिहाइं परस्स अज्झोववायलोभजणणाइं परियट्टिउं गुणवओ[10] ॥

५. न यावि पुप्फ-फल-कंद-मूलादियाइं, सणसत्तरसाइं सव्वधण्णाइं तिहिं वि जोगेहिं परिघेत्तुं ओसहभेसज्जभोयणट्ठयाए संजएणं। किं कारणं ?—
अपरिमितणाणदंसणधरेहिं सील-गुण-विणय-तव-संजमनायकेहिं तित्थयरेहिं

---

१. भावणतयं (घ, वृ); °तयंत (वृपा)।
२. अणण्हव° (वृ)।
३. परिघेत्तू (क, ख, ग, घ)।
४. कोंडिका (ख, घ)।
५. नोवाहणा (ख); न वाहणा (ग, च); नोपाणहा (क्व)।
६. न कल्पते परिग्रहीतुमिति शेषः।
७. °हारपुलक (क)।
८. लेस (वृपा)।
९. वर (क, ख, ग, घ, च, वृ); एतत् पदं वृत्तिरचनात् पूर्वमेव विपर्यस्त जातम्।
१०. गुणवयाइं (क)।

वृत्तिकृत्ता 'वर' इति पदं लब्धम्, तेन 'कावरः प्रधानकाचः' इति व्याख्यातम्। वस्तुतोऽत्र 'वइर' इति पदमासीत्। लिपि-दोषेण तद् विपर्ययो जातः। निसीहज्झयणस्स एकादशोद्देशे प्रथमे सूत्रे 'कायपायाणि वा··· वइरपायाणि वा' इति पदद्वयं सुस्पष्टमस्ति। अत्रापि पात्रप्रकरणे तथैव युज्यते। आचारचूलायाः पात्रैषणाध्ययने 'वइर' पदस्य उल्लेखो नास्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वजग-जीव-वच्छलेहिं तिलोयमहिएहिं जिणवरिंदेहिं एस जोणी जगाणं दिट्ठा न कप्पते[1] जोणिसमुच्छेदोत्ति, तेण वज्जंति समणसीहा ।।

असण्णिहि-पदं

६. जंपि य ओदण-कुम्मास-गंज-तप्पण-मंथु-भुज्जिय-पलल-सूप-सक्कुलि-वेढिम-वरसरक[2]-चुण्णकोसग-पिंड-सिहरिणि-वट्ट-मोयग-खीर-दहि-सप्पि-नवनीत-तेल्ल-गुड[3]-खंड-मच्छंडिय-मधु-मज्ज-मंस-खज्जक-वंजणविधिमादिकं पणीयं उवस्सए परघरे व रण्णे न कप्पति तंपि सण्णिहिं काऊण[4] सुविहियाणं ।।

अकप्पभोयण-पदं

७. जंपि य उद्दिट्ठ-ठविय-रचितग-पज्जवजात-पकिण्ण-पाउकरण-पामिच्चं, मीसक-कीयकड-पाहुडं वा, दाणट्ठ-पुण्णपगडं, समण-वणीमगट्ठयाए व कयं, पच्छाकम्मं पुरेकम्मं नितिकं मक्खियं अतिरित्तं मोहरं चेव सयंगाहमाहडं[5] मट्टिओवलित्तं, अच्छेज्जं चेव अणीसट्ठं, जं तं तिहीसु[6] जण्णेसु ऊसवेसु य अंतो व्व बहिं व होज्ज समणट्ठयाए ठवियं, हिंसा-सावज्ज-संपउत्तं न कप्पति तंपि य परिघेत्तुं ।।

कप्पभोयण-पदं

८. अह केरिसयं पुणाइ कप्पति ?
जं तं एक्कारसपिंडवायसुद्धं किणण-हणण-पयण-कयकारियाणुमोयण-नवकोडीहिं सुपरिसुद्धं, दसहि य दोसेहिं विप्पमुक्कं, उग्गम-उप्पायणेसणासुद्धं, ववगय-चुय-चइय[7]-चत्तदेहं च फासुयं च ववगयसंजोगमणिंगालं, विगयधूमं, छट्ठाण-निमित्तं, छक्कायपरिरक्खणट्ठा हणिहणि[8] फासुकेण भिक्खेण वट्टियव्वं ।।

रोगायंकेवि असण्णिहि-पदं

९. जंपि य समणस्स सुविहियस्स उ रोगायंके बहुप्पकारंमि समुप्पण्णे, वाताहिक-पित्तसिभाइरित्तकुविय-तहसण्णिवायजाते[9], उदयपत्ते उज्जल-बल-विउल-तिउल-कक्खड-पगाढ-दुक्खे, असुभ-कडुय-फरुस-चंडफलविवागे महब्भये जीवियंतकरण सव्वसरीर-परितावणकरे न कप्पति[10] तारिसे वि तह अप्पणो परस्स वा ओसह-भेसज्जं भत्त-पाणं च तंपि सण्णिहिकयं ।।

---

१. कप्पती (क, ग, घ, च) ।
२. विसारक (क) ।
३. गुल (ग, घ, च) ।
४. काउ (ग) ।
५. सयगाह° (घ, च) ।
६. तिहिसु (क, च) ।
७. चयिय (क); चविय (घ) ।
८. हणि-हणि (क, ग, घ) ।
९. °जाते व्व (क, ग, घ, च) ।
१०. कप्पती (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवगरणधारणविहि-पदं

१०. जंपि य समणस्स सुविहियस्स तु पडिग्गहधारिस्स भवति भायण-भंडोवहि-उवगरणं पडिग्गहो पायबंधणं पायकेसरिया पायठवणं च पडलाइं तिण्णेव, रयत्ताणं च गोच्छओ, तिण्णेव य पच्छाका, रओहरण-चोलपट्टक-मुहणंतकमादीयं। एयं पि य संजमस्स उववूहणट्ठयाए वायायव-दंस-मसग-सीय-परिरक्खणट्ठयाए उवगरणं रागदोसरहियं परिहरियव्वं संजएण णिच्चं, पडिलेहण-पप्फोडण-पमज्जणाए अहो य राओ य अप्पमत्तेण होइ सततं निक्खिवियव्वं च गिण्हियव्वं च भायण-भंडोवहि-उवगरणं ॥

समणस्स सरूवनिरूवण-पदं

११. एवं से संजते विमुत्ते निस्संगे निप्परिग्गहरुई निम्ममे निन्नेह-बंधणे सव्वपाव-विरते वासीचंदण-समाणकप्पे सम-तिण[1]-मणि-मुत्त[2]-लेट्ठु-कंचण-समे समे य माणावमाणणाए समियरए समित-रागदोसे, समिए समितीसु, सम्मद्दिट्ठी, समे य जे सव्वपाणभूतेसु, से हु समणे, सुयधारते उज्जुए[3] संजते सुसाहू, सरणं सव्वभूयाणं, सव्वजगवच्छले सच्चभासके य, संसारंते ठिते य, संसारसमुच्छिण्णे सततं मरणाणुपारए, पारगे[4] य सव्वेसिं संसयाणं, पवयणमायाहिं अट्ठहिं अट्ठकम्मगंठीविमोयके, अट्ठमयमहणे ससमयकुसले य भवति सुह-दुक्ख-निव्विसेसे, अब्भितर-बाहिरंमि सया तवोवहाणंमि य सुट्ठुज्जुत्ते, खंते दंते य हिय-निरते[5], ईरियासमिते भासासमिते एसणासमिते आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणासमिते उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणजल्ल-परिट्ठावणियासमिते मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबंभयारि चाई[6] लज्जू धन्ने तवस्सी खंतिखमे जितिंदिए सोधिए[7] अणियाणे अबहिल्लेस्से अममे अकिंचणे छिण्णगंथे[8] निरुवलेवे,

सुविमल-वरकंसभायणं व[9] मुक्कतोए,
संखे विव निरंगणे विगय-राग-दोस-मोहे,
कुम्मो व[10] इंदिएसु गुत्ते,
जच्चकंचणं[11] व जायरूवे,
पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे,

---

१. तण (क)।
२. मुत्ते (ख)।
३. उज्जते (क्व); उद्यतो वा (वृ)।
४. पारके (क, ख, घ, च)।
५. धिइनिरते (वृपा)।
६. चागी (ख, घ, च)।
७. सोधिके (क, ख, घ, च)।
८. छिण्णसोए (वृपा)।
९. चेव (क, ख, ग, घ, च)।
१०. इव (क, ग)।
११. °कंचणगं (क, ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंदो इव सोमभावयाए[1],
सूरो व्व दित्ततेए,
अचले जह मंदरे गिरिवरे,
अक्खोभे सागरो व्व थिमिए,
पुढवीव[2] सव्वफाससहे,
तवसावि[3] य भासरासिछन्ने व्व जाततेए,
जलियहुयासणो विव तेयसा जलंते,
गोसीसचंदणं पिव सीयले सुगंधे य,
हरयो[4] विव समियभावे,
उग्घसिय सुनिम्मलं व आयंसमंडलतलं पागडभावेण सुद्धभावे,
सोंडीरे कुंजरे[5] व्व,
वसभे व्व जायथामे,
'सीहे वा'[6] जहा मिगाहिवे होति दुप्पधरिसे,
सारयसलिलं व सुद्धहियए,
भारंडे चेव अप्पमत्ते,
खग्गिविसाणं व एगजाते,
खाणुं चेव उड्ढकाए,
सुन्नागारे व्व अप्पडिकम्मे,
सुन्नागारावणस्संतो निवायसरणप्पदीवज्झाणमिव निप्पकंपे,
जहा खुरो चेव एगधारे,
जहा अही चेव एगदिट्ठी,
आगासं चेव निरालंबे,
विहगे[7] विव सव्वओ विप्पमुक्के,
कय-परनिलये जहा चेव उरए,
अपडिबद्धे अनिलो व्व,
जीवो व्व अप्पडिहयगती,

---

१. सोमताए (वृ); सोमभावयाए (वृपा); ओवाइयसुत्ते (सू० २७) 'चदो इव सोमलेसा' तथा कप्पसुत्ते 'चंदो इव सोमलेसे' आयारो तह आयारचूला परिशिष्ट ३, पृ० १६ तथा जंबुद्दीवपण्णत्तीए 'चंदो इव सोमदंसणे' इति पाठो विद्यते, आयारो तह आयारचूला परिशिष्ट ३, पृ० १७।
२. पुढवी विव (घ, च)।
३. °इ (ख, ग, घ, च)।
४. हरतो (ख, घ, च)।
५. कुंजरो (ग, च)।
६. सीहे व्व (क); सीहो वा (ख, घ) सीहो व्व (च)।
७. विहंगे (ख, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गामे-गामे एगरायं, नगरे-नगरे य पंचरायं दूइज्जंते य, जितिंदिए जितपरीसहे निब्भए[1] विऊ[2] सच्चित्ताचित्तमीसकेहिं दव्वेहिं विरायं गते, संचयतो विरए, मुत्ते लहुके निरवकंखे जीवियमरणासविप्पमुक्के, निस्संधि निव्वणं चरित्तं धीरे काएण फासयंते, सततं अज्झप्पझाणजुत्ते निहुए[3] एगे चरेज्ज धम्मं ॥

१२. इमं च परिग्गहवेरमण-परिरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चाभाविकं आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाण विओसमणं ॥

अपरिग्गहस्स पंचभावणा-पदं

१३. तस्स इमा पंचभावणाओ चरिमस्स वयस्स होंति परिग्गहवेरमण-रक्खणट्ठयाए ॥

१४. पढमं—सोइंदिएण सोच्चा सद्दाइं मणुण्ण-भद्दगाइं, किं ते ? —
वरमुरय-मुइंग-पणव-दद्दुर-कच्छभि- वीणा-विपंची - वल्लयि-बद्धीसक-सुघोस-नंदि-सूसरपरिवादिणी-वंस- तूणक - पव्वक-तंती - तल-ताल-तुडियनिग्घोस-गीय-वाइयाइं, नडनट्टक-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिक-वेलंबक-कहक-पवक-लासग-आइक्खक-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-तालायर-पकरणाणि य, बहूणि महुरसर-गीत-सुस्सराइं, कंची-मेहला[4]- कलाव - पतरक- पहेरक-पायजालग-घंटिय-खिखिणि-रयणोरुजालय-छुद्दिय - नेउर-चलणमालिय - कणगनियल- जालग-भूसणसद्दाणि, लीलचंकम्ममाणाणुदीरियाइं, तरुणीजणहसिय - भणिय-कलरिभित-मंजुलाइं, गुणवयणाणि य बहूणि महुरजणभासियाइं, अण्णेसु य एवमादिएसु सद्देसु मणुण्ण-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं न रज्जियव्वं न गिज्झियव्वं न मुज्झियव्वं न विणिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न तुसियव्वं न हसियव्वं न सइं च मइं च तत्थ कुज्जा ।
पुणरवि सोइंदिएण सोच्चा सद्दाइं अमणुण्ण-पावकाइं, किं ते ?—
अक्कोस-फरुस - खिसण- अवमाणण - तज्जण - निब्भंछण - दित्तवयण-तासण-उक्कूजिय-रुण्ण-रडिय - कंदिय - निग्घुट्ठरसिय-कलुणविलवियाइं[5], अण्णेसु य एवमादिएसु सद्देसु अमणुण्ण-पावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं न हीलियव्वं न निंदियव्वं न खिंसियव्वं न छिंदियव्वं न भिंदियव्वं न वहेयव्वं न दुगुंछावत्तियाए लब्भा उप्पाएउं ।
एवं सोतिंदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा, मणुण्णाऽमणुण्ण-सुब्भि-दुब्भि-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते संवुडे पणिहितिंदिए चरेज्ज धम्मं ॥

---

१. निब्भओ (ग) ।
२. विउसे (च); विसुद्ध (वृग) ।
३. निहुते (क); निहुके (ख, घ, च) ।
४. मेहल (क, ग, घ, च) ।
५. करुण० (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. बितियं—चक्खुइंदिएण पासिय रूवाणि मणुण्णाइं भद्दकाइं, सचित्ताऽचित्त-मीसकाइं—कट्ठे पोत्थे य चित्तकम्मे लेप्पकम्मे सेले य दंतकम्मे य, पंचहिं वण्णेहिं अणेगसंठाण-संठियाइं, गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमाणि य मल्लाइं बहुविहाणि य अहियं नयण-मणसुहकराइं, वणसंडे पव्वते य गामागरनगराणि य खुद्दिय-पुक्खरणि-वावी-दीहिय-गुंजालिय-सरसरपंतिय-सागर-बिलपंतिय-खातिय[1]-नदि-सर-तलाग-वप्पिणी-फुल्लुप्पल-पउम[2]-परिमंडियाभिरामे, अणेग-सउणगण-मिहुणविचरिए, वरमंडव-विविहभवण-तोरण-चेतिय-देवकुल-सभ-प्पवावसह-सुकयसयणासण-सीय-रह-सगड-जाण-जुग्ग-संदण-नरनारिगणे य सोमपडिरूवदरिसणिज्जे, अलंकियविभूसिए, पुव्वकयतवप्पभावसोहग्गसंपउत्ते, नड-नट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहक-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-तालायर-पकरणाणि य बहूणि सुकरणाणि, अण्णेसु य एवमादिएसु रूवेसु मणुण्ण-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं न 'रज्जियव्वं न गिज्झियव्वं न मुज्झियव्वं न विणिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न तुसियव्वं न हसियव्वं न सइं[3] च मइं च तत्थ कुज्जा।

पुणरवि चक्खिदिएण पासिय रूवाइं अमणुण्ण-पावकाइं, किं ते ?—

गंडि-कोढिक-कुणि-उदरि-कच्छुल्ल-पइल्ल-कुज्ज-पंगुल-वामण-अंधिल्लग-एग-चक्खुविणिहय-सप्पिसल्लग-वाहिरोगपीलियं, विगयाणि य मयककलेवराणि[4], सकिमिणकुहियं च दव्वरासिं, अण्णेसु य एवमादिएसु अमणुण्ण-पावतेसु न तेसु समणेण रूसियव्वं[5] •न हीलियव्वं न निंदियव्वं न खिंसियव्वं न छिंदियव्वं न भिंदियव्वं न वहेयव्वं ° न दुगुंछावत्तिया व लब्भा उप्पातेउं।

एवं चक्खिदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा[6], •मणुण्णाऽमणुण्ण-सुब्भि-दुब्भि-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते संवुडे पणिहितिंदिए ° चरेज्ज धम्मं ॥

१६. ततियं—घाणिंदिएण अग्घाइय गंधाति मणुण्ण-भद्दगाइं, किं ते ?—

जलय-थलय-सरसपुप्फफलपाणभोयण-कोट्ठ[7]-तगर-पत्त-चोय-दमणक-मरुय-एला-रस-पिक्कमंसि[8]-गोसीस-सरसचंदण-कप्पूर-लवंग-अगरु-कुंकुम-कक्कोल-उसीर-सेयचंदण-सुगंधसारंगजुत्तिवरधूववासे उउय[9]-पिंडिम-णिहारिम-गंधिएसु, अण्णेसु

---

१. खादिय (क, ग)।
२. पउमसंड (ख, घ)।
३. रज्जियव्वं जाव न सइं (क, ख, ग, घ)।
४. मतक° (ख, घ, च)।
५. सं० पा०—रूसियव्वं जाव न।
६. सं० पा०—अंतरप्पा जाव चरेज्ज।
७. कुट्ठ (क, ग)।
८. पक्कमंसि (ख) विक्कमंसि (च)।
९. उदुय (क, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य एवमादिएसु गंधेसु मणुण्ण-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं[1] •न रज्जियव्वं न गिज्झियव्वं न मुज्झियव्वं न विणिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न तुसियव्वं न हसियव्वं ° न सतिं च मइं च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि घाणिंदिएण अग्घाइय गंधाणि अमणुण्ण-पावकाइं, किं ते ?—

अहिमड-अस्समड-हत्थिमडगोमड-विग-सुणग-सियाल-मणुय-मज्जार-सीह-दीविय-मयकुहियविणट्ठकिविण-बहुदुरभिगंधेसु, अण्णेसु य एवमादिएसु गंधेसु अमणुण्ण-पावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं न हीलियव्वं[2] •न निंदियव्वं न खिसियव्वं न छिंदियव्वं न भिंदियव्वं न वहेयव्वं न दुगुंछावत्तिया व लब्भा उप्पाएउं ।

एवं घाणिंदियभावणाभाविओ भवति अंतरप्पा, मणुण्णाऽमणुण्ण-सुब्भि-दुब्भि-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते संवुडे ° पणिहिएंदिए[3] चरेज्ज धम्मं ।।

१७. चउत्थं—जिब्भिदिएण साइय रसाणि उ मणुण्ण-भद्दकाइं, किं ते ?—

उग्गाहिम-विविहपाण-भोयण-गुलकय-खंडकय-तेल्लघयकय-भक्खेसु बहुविहेसु लवणरससंजुत्तेसु महु-मंस-बहुप्पगारमज्जिय-निट्ठाणग-दालियंब-सेहंब-दुद्ध-दहि-सरय-मज्ज-वरवारुणी-सीहु-काविसायणक-साकट्ठारस-बहुप्पगारेसु भोयणेसु य मणुण्णवण्ण-गंध-रस-फास-बहुदव्वसंभितेसु, अण्णेसु य एवमादिएसु रसेसु मणुण्ण-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं[4] •न रज्जियव्वं न गिज्झियव्वं न मुज्झियव्वं न विणिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न तुसियव्वं न हसियव्वं ° न सइं च मइं च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि जिब्भिदिएण साइय रसाति अमणुण्ण-पावगाइं, किं ते ?—

अरस-विरस-सीय-लुक्ख-णिज्जप्प[5]-पाण-भोयणाइं दोसीण-वावण्ण-कुहिय-पूइय-अमणुण्ण-विणट्ठ-पसूय-बहुदुब्भिगंधियाइं तित्त-कडुय-कसाय-अंबिल-रस-लिडनीर-साइं, अण्णेसु य एवमाइएसु रसेसु अमणुण्ण-पावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं[6] •न हीलियव्वं न निंदियव्वं न खिसियव्वं न छिंदियव्वं न भिंदियव्वं न वहेयव्वं न दुगुंछावत्तिया व लब्भा उप्पाएउं ।

एवं जिब्भिदियभावणाभाविओ भवति अंतरप्पा, मणुण्णाऽमणुण्ण-सुब्भि-दुब्भि-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते संवुडे पणिहितिंदिए ° चरेज्ज धम्मं ।।

१८. पंचमगं—फासिंदिएण फासिय फासाइं मणुण्ण-भद्दकाइं, किं ते ?—

---

१. सं० पा०—सज्जियव्वं जाव न सतिं ।
२. सं० पा०—हीलियव्वं जाव पणिहिएंदिए ।
३. पिहियपंचेंदिए (ख) ।
४. सं० पा०—सज्जियव्वं जाव न सइं ।
५. णिज्जंप (क, ख, ग) ।
६. सं० पा०— रूसियव्वं जाव चरेज्ज ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दगमंडव-हार-सेयचंदण- सीयलविमलजल - विविहकुसुमसत्थर-ओसीर - मुत्तिय-मुणाल-दोसिणा पेहुणउक्खेवग-तालियंट-बीयणग-जणियसुहसीयले य पवणे गिम्हकाले, सुहफासाणि य बहूणि सयणाणि आसणाणि य, पाउरणगुणे य सिसिरकाले अंगार-पतावणा य आयव-निद्ध-मउय-सीय-उसिण-लहुया य जे उदुसुहफासा अंगसुह-निव्वुइकरा ते[1], अण्णेसु य एवमादिएसु फासेसु मणुण्ण-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं न रज्जियव्वं न गिज्झियव्वं न मुज्झियव्वं न विणिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न अज्झोववज्जियव्वं[2] न तुसियव्वं न हसियव्वं न सतिं च मतिं च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि फासिदिएण फासिय फासाति अमणुण्ण-पावकाइं, किं ते ?—

अणेगबंध-वह-तालणंकण-अतिभारारोहणए, अंगभंजण-सूईनखप्पवेस-गाय-पच्छणण[3]-लक्खारस-खारतेल्ल-कलकलतउ-सीसक[4]-काललोहसिंचण - हडिबंधण-रज्जु-निगल-संकल- हत्थंडुय[5] - कुंभिपाक-दहण - सीहपुच्छण - उब्बंधण - सूलभेय-गयचलणमलण -करचरणकण्णनासोट्ठसीसछेयण[6]-जिब्भंछण - वसणनयणहिययंत-दंतभंजण[7]-जोत्तलयकसप्पहार - पादपण्हिजाणुपत्थरनिवाय - पीलण - कविकच्छु-अगणि-विच्छुयडक्क-वायातवदंसमसकनिवाते, 'दुट्ठणिसेज्जा दुनिसीहिया'[8] कक्खड[9]-गुरु-सीय-उसिण-लुक्खेसु बहुविहेसु, अण्णेसु य एवमाइएसु फासेसु अमणुण्ण-पावकेसु न तेसु समणेण रूसियव्वं न हीलियव्वं न निंदियव्वं न गरहियव्वं न खिंसियव्वं न छिंदियव्वं न भिंदियव्वं न वहेयव्वं न दुगुंछावत्तियं च लब्भा उप्पाएउं ।

एवं फासिंदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा, मणुण्णामणुण्ण-सुब्भि-दुब्भि-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते संवुडे पणिहितिंदिए चरेज्ज धम्मं ।।

निगमण-पदं

१९. एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुप्पणिहियं इमेहिं पंचहिवि कारणेहिं मण-वयण-काय-परिरक्खिएहिं ।।

२०. निच्चं आमरणंतं च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो

---

१. तान् स्पृष्ट्वा इति प्रकृतम् (वृ) ।

२. पूर्ववर्तिषु १४-१७ सूत्रेषु एतत् पदं नास्ति । तत्र लिपिकाले त्रुटितमथवात्र अतिरिक्त-मस्ति ।

३. °पच्छण (क, घ) ।

४. सिंसक (क, ख, ग, घ, च) ।

५. हत्थंदुय (ख, ग) ।

६. कण्णनासोट्ठ° (क, ग, घ) ।

७. °हिययदंत° (क, ग); °हियएदंत° (घ) ।

८. दुट्ठणिसेज्जदुनिसीहिय (क, ख, ग, घ, च) ।

९. कक्कड (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णातो ।।

२१. एवं पंचमं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं आराहियं 'आणाए अणुपालियं'[1] भवति ।।

२२. एवं नायमुणिणा भगवया पण्णवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवियं सुदेसियं पसत्थं—पंचमं संवरदारं समत्तं ।

—त्ति बेमि ।।

२३. 'एयाइं वयाति'[2] पंचवि सुव्वय-महव्वयाइं हेउसय-विवित्त-पुक्कलाइं कहिया अरहंतसासणे पंच समासेण संवरा, वित्थरेण उ पणवीसति । समिय-सहिय-संवुडे सया जयण-घडण-सुविसुद्ध-दंसणे एए अणुचरिय संजते चरमसरीरधरे भविस्सतीति'[3] ।

परिसेसो

पण्हावागरणाणं एगो सुयक्खंधो, दस अज्झयणगा एक्कसरगा, दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति, एगंतरेसु आयंबिलेसु निरुद्धेसु आउत्तभत्तपाणएणं । अंगं जहा आयारस्स ।।

पण्हावागरणं दसमं अंगं सुत्तओ समत्तं ।

ग्रन्थ परिमाण

कुल अक्षर—४१३३८

अनुष्टुप् श्लोक—१२९१ अ० १६

---

१. अणुपालियं आणाए आराहियं (क, ख, ग, घ, च) ।

२. वताइं (ख) ।

३. वाचनान्तरे पुनर्निगमनमन्यथाऽभिधीयते यदुत एतानि पंचापि सुव्रत ! महाव्रतानि लोकधृतिदव्रतानि श्रुतसागरदर्शितानि तपः संयमव्रतानि शीलगुणधरव्रतानि सत्यार्जव-व्रतानि नरकतिर्यङ्मनुजदेवगतिविवर्जकानि सर्वजिनशासनकानि कर्मरजोविदारकाणि भवशतविमोचकानि दुःखशतविनाशकानि सुखशतप्रवर्त्तकानि कापुरुषदुरुत्तराणि सत्पुरुषतीरितानि निर्वाणगमनस्वर्गप्रयाण-कानि पंचापि संवरद्वाराणि समाप्तानीति ब्रवीमि (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट—१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

नायाधम्मकहाओ

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंतिए जाव पव्वयामि	२।१।२५	१।१।१०१
अंतेउरे य जाव अज्झोववण्णे	१।१६।४१	१।१६।२८
अगडे वा जाव सागरे	१।८।१५४	१।८।१५४
अग्गिसामण्णे जाव मच्चुसामण्णे	१।१।१११	१।१।१११
अग्घेणं जाव आसणेणं	१।१६।१९७	१।१६।१८६
अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे	१।२।७६	ओ० सू० २
अज्जग जाव परिभाएत्तए	१।६।५	१।१।११०
अज्जाओ तहेव भणंति तहेव साविया जाया तहेव चिंता तहेव सागरदत्तं आपुच्छति	१।१६।९८-१०४	१।१४।४४-५०
अज्झत्थिए०	१।८।७९	१।१।४८
अज्झत्थिए किमण्णे जाव वियंभइ	१।१६।२७२	१।१६।२७२
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था	१।१।५३,५६,१५४,१५५,१६९,२०४,२०५; १।२।१२,७१;१।५।११८,१२४;१।७।२५; १।१६।११८,२८५;२।१।३८	१।१।४८
अज्झत्थिय जाव जाणित्ता	१।१६।२८६	१।१।४८
अट्टदुहट्टवसट्टमाणसगए जाव रयणि	१।१।१५५	१।१।१५४
अट्ठमस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव चत्तारि	२।८।१,२	२।२।१,२
अट्ठाइं जाव नो वागरेइ	१।५।६९	१।५।६९
अट्ठाइं जाव वागरेइ	१।५।६९	१।५।६९
अट्ठाहियं महानंदीसरं जामेव दिसं पाउ जाव पडिगए	१।८।२२६	१।८।२२४
अड्ढा जाव अपरिभूया	१।५।७	ओ० सू० १४१
अड्ढा जाव भत्तपाणा	१।३।८	ओ० सू० १४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणंते जाव समुप्पण्णे	१।८।२२५	वृत्ति
अणंते णाणे समुप्पण्णे जाव सिद्धा	१।१६।३२४	१।५।८४
अणगारवण्णओ भाणियव्वो	१।१।१६४	ओ० सू० १६४
अणगारे जाव इहमागए	१।५।६८	ओ० सू० ५२
अणगारे जाव पज्जवासमाणे	२।१।४	१।१।७
अणिट्ठतराए चेव जाव गंधेणं	१।१२।३	१।८।४२
अणिट्ठा जाव अमणामा	१।१६।९७	१।१।४६
अणिट्ठा जाव दंसणं	१।१४।४३	१।१४।३६
अणिट्ठा जाव परिभोगं	१।१४।५०	१।१४।३६
अणुत्तरे पुणरवि तं चेव जाव तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ जाव पव्वइस्ससि	१।१।११३	१।१।११२
अण्णं च तं विउलं	१।८।२०७	१।८।२०५
अण्णमण्णं जाव समणे	१।१३।३८	१।५।५३
अत्थत्थिया जाव ताहिं इट्ठाहिं जाव अणवरयं	१।१।१४३	ओ० सू० ६८
अत्थामा जाव अधारणिज्ज०	१।१६।२५३	१।१६।२१
अपत्थिय जाव परिवज्जिए	१।८।१२८	१।५।१२२
अपत्थियपत्थए जाव वज्जिए	१।५।१२२	उवा०।२।२२
अपत्थियपत्थया जाव परिवज्जिया	१।८।७४	१।५।१२२
अपुण्णाए जाव निंबोलियाए	१।१६।२५	१।१६।८
अब्भणुण्णाए जाव पव्वइत्तए	१।१२।३९	१।१।१०४
अब्भुज्जएणं जाव विहरित्तए	१।५।११८;१।१९।२८	१।५।१२४
अब्भुट्ठेसि जाव वंदसि	१।५।६७	१।५।६६
अभिसिंचइ जाव पडिगए	१।१६।२८०	१।१।१६१
अभिसिंचइ जाव राया जाए विहरइ	१।५।९३-९५	१।१।११७-११९
अमच्चे जाव तुसिणीए	१।१२।१५	१।१२।७
अम्मयाओ जाव पव्वइत्तए	१।१।१०९	१।१।१०७
अम्मयाओ जाव सुलद्धे	१।१।१२	१।१।३३
अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।५।६५	१।१।४८
अरहण्णग जाव वाणियगाणं	१।८।६७	१।८।६४
अरहण्णग संज्जत्तगा	१।८।८४	१।८।६६
अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए	१।१६।३२०	१।१६।३३४
अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	१।५।२०	१।१।१०६
अवंगुणेइ जाव पडिगए	१।१६।६५	१।१६।६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवरकंका जाव सण्णिवाडिया	१।१६।२७९	१।१६।२६२
अवसेसं तहेव जाव सामाइयमाइयाइं	१।५।९९-१०१	१।५।३४-३८
अवहरइ जाव तालेइ	१।१८।१२	१।१८।८
अवहिया जाव अवक्खित्ता	१।१६।२२०	१।१६।२१६
अवीरिए जाव अधारणिज्ज०	१।८।१६६	१।१६।२१
असक्कारिय जाव निच्छूढे	१।१६।२४६	१।१६।२४५
असक्कारिया जाव निच्छूढा	१।८।१७२	१।८।१५९
असणं जाव अणुबड्ढेमि	१।२।१२	१।२।१२
असणं जाव दवावेमाणी	१।१४।३९	१।१४।३८
असणं जाव परिभुंजेमाणी	१।२।२०	१।२।१४
असणं जाव परिवेसेइ	१।२।५२,५३	१।२।३७,३८
असणं जाव विहरइ	१।१२।४	१।२।१४
असणं मित्तनाइ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर जाव सम्माणित्ता	१।७।२२	१।७।६
असण जाव पसन्नं	१।१६।१५२	१।१६।१५१
असिपत्ते इ वा जाव मुम्मुरे इ वा एत्तो अणिट्ठतराए चेव	१।१६।५२	वृत्ति
असोगवणिया जाव कंडरीयं	१।१९।३४	१।१९।३३
अहं जाव अणेगभूयभावभविए	१।५।७६	१।५।७६
अहं जाव सुया	१।५।७६	१।५।७६
अहं रज्जं च जाव ओसन्न जाव उउबद्ध पीढ० विहरामि	१।५।१२४	१।५।११७,११८
अहम्मिए जाव अहम्मकेऊ	१।१८।१९	वृत्ति
अहम्मिए जाव विहरइ	१।१८।१९	१।१८।१९
अहाकप्पं जाव किट्टेत्ता	१।१।२०१	१।१।१९८
अहापडिरूवं जाव विहरइ (ति)	१।१।९७;१।१६।११	१।१।४
अहापवत्तेहिं जाव मज्जपाणएण	१।५।११६	१।५।११५
अहासुत्तं जाव सम्मं	१।१।२०१	१।१।१९८
अहिमडे इ वा जाव अणिट्ठतराए अमणामतराए	१।८।४२	वृत्ति
अहीण जाव सुरूवे	१।१।१६	ओ० सू० १५
अहो णं तं चेव	१।१२।१६	१।१२।१३
आइगरे जाव विहरइ	२।१।२०	१।१।९५
आइण्ण वेढो	१।१७।१४	वृत्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आएहि य जाव परिणामेमाणा	१।८।१०४	१।८।१६८
आउक्खएणं जाव चइत्ता	१।१६।१२३	१।१।२१२
आढंति जाव पज्जुवासंति	१।१६।१८८	१।१६।१८६
आढाइ जाव तुसिणीए	१।१२।७;१।१६।१५	१।८।१७०
आढाइ जाव तुसिणीया	२।१।३६	१।८।१७०
आढाइ जाव नो पज्जुवासइ	१।१६।१६०	१।१६।१८६
आढाइ जाव भोगं	१।१४।६१	१।१४।६०
आढाइ जाव संचिट्ठइ	१।१६।३०	१।८।१७०
आढायंति °	१।१।१५५	१।१।१५४
आढायंति जाव संलवेंति	१।१।१५४	१।१।१५४
आपुच्छइ जाव पडिगए	१।१६।२००	१।१।१६१
आपुच्छणिज्जं जाव वड्ढावियं	१।७।४२	१।७।६
आपुच्छामि जाव पव्वयामि	१।१२।३८	१।१।१०१
आपुच्छामि तएणं जाव पव्वयामि	१।१६।१२	१।१।१०१
आरोग्गतुट्ठी जाव दिट्ठे	१।१।२६	१।१।२०
आलंबे वा जाव भविस्सइ	१।१६।३१२	१।८।१८६
आलिघरएसु य जाव कुसुमघरएसु	१।३।१६	वृत्ति
आलोएहि जाव पडिवज्जाहि	१।१६।११५	वृत्ति
आसयंति वा जाव तुयट्टंति	१।१७।२२	१।१७।२२
आसाएइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ	१।१६।४२	१।१६।४४
आसाएमाणीओ जाव परिभुंजेमाणीओ	१।२।१७	१।१।८१
आसाएमाणी जाव विहरइ	१।२।१४	१।१।८१
आसाएमाणे जाव विहरइ	१।१२।२२	१।१।८१
आसायणिज्जं जाव सव्विंदिय०	१।१२।२०	१।१२।४
आसायणिज्जे जाव सव्विंदिय०	१।१२।१६	१।१२।४
आसिय जाव गंधवट्टिभूयं	१।५।६७	१।१।३३
आसिय जाव परिगीयं	१।१।७६	वृत्ति
आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा	१।१६।२८	१।१।१६१
आसुरुत्ते जाव तिवलियं	५।८।१५६	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव तिवलियं एवं	१।१६।२८६	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव पउमनाभं	१।१६।२८०	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे	१।५।१२२	१।१।१६१
आहारे वा जाव पव्वयामो	१।८।१३	१।५।६०
आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था	१।१।१६७	१।१।१५७
आहेवच्चं जाव पालेमाणे	१।५।६	१।१।११८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहेवच्चं जाव विहरइ	१।३।८	१।१।११८
आहेवच्चं जाव विहरइ	१।१८।२०	१।५।६
आहेवच्चं जाव विहरसि	१।१।१५७	१।५।६
इट्ठा जाव मणामा	१।१६।७०	१।१।४६
इट्ठा तं चेव	१।१६।४८	१।१६।४७
इट्ठाहिं जाव आसासेइ	१।१६।१३१	१।१।४६
इट्ठाहिं जाव एवं	१।८।२०३	१।१।४६
इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं	१।८।६७	१।१।४८
इट्ठाहिं जाव समासासेइ	१।१।५०	१।१।४६
इट्ठे जाव से णं	१।५।२०	१।१।१४५
इड्ढी जाव परक्कमे	१।८।७६;१।१६।२६५	उवा० २।४०
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।७।६;२।१।१२	१।१।४८
इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ	१।१४।४०	१।१।१६४
इहमागए जाव विहरइ	१।५।५३	१।१।६७;१।५।५२
ईसर जाव नीहरणं	१।१४।५६	१।५।६;१।२।३४
ईसर जाव पभितीणं	१।७।६	१।५।६
ईहामिय जाव भत्तिचित्तं	१।१।८६;१।८।४६	१।१।२५
उक्किट्ठ जाव समुद्दरवभूयं	१।१८।४०	१।८।६७
उक्किट्ठाए जाव देवगईए	१।१६।२०४,२०६	राय० सू० १०
उक्किट्ठाए जाए विज्जाहरगईए	१।१६।१६०	१।४।२१
उक्किट्ठाए प्फ कुम्मगईए	१।४।२१	वृत्ति
उक्खेवओ तइयवग्गस्स	२।३।१	२।२।१
उक्खेवओ पढमज्झयणस्स	२।५।३	२।२।३
उज्जलंजाव दुरहियासं	१।१।१६३	१।१।१६२
उज्जला जाव दाहवक्कंतीए	१।१।१८७	१।१।१६२
उज्जला जाव दुरहियासा	१।५।१०६;१।१६।२०;१।१६।४५	१।१।१६२
उज्जाणे जाव विहरइ	१।१६।३२१	१।१६।३१६
उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिदंडयं जाव धाउरत्ताओ	१।५।८०	भ० २।५२;१।५।५२
उत्तरिज्जेहिं जाव चिट्ठामो	१।८।१७६	१।८।१७७
उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा	१।८।१७८	१।८।१७७
उदगपरिफोसिया जाव भिसियाए	१।८।१५१	१।८।१४१
उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं	१।२।१४	राय० सू० ६७
उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा	१।१६।१२८	१।१६।३७
उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण	१।८।३८;१।१६।३७	वि० १।४।३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उम्मुक्कबालभावे जाव जोव्वणग०	१।१४।२२	१।१।२०
उरालस्स क सि ध मं जाव सुमिणस्स	१।१।१६	१।१।१६
उरालाइं जाव भुंजमाणा	१।१२।४०	१।१६।११३
उरालाइं जाव विहरइ	१।१४।२०	१।१२।४०
उरालाइं जाव विहरिज्जामि	१।१६।११३	१।१६।११३
उरालाइं जाव विहरिस्सइ	१।१६।२०४	१।१६।११३
उराले जाव तेयलेस्से	१।१६।१२	१।१।६
उरालेणं तहेव जाव भासं	१।१।२०४	१।१।२०२
उववेए जाव फासेणं	१।१२।४	१।१२।३
उव्वट्टिज्जमाणे जाव टिट्टियावेज्जमाणे	१।३।२२	१।३।२१
उव्वट्टेइ जाव टिट्टियावेइ	१।३।२६	१।३।२१
उव्वेत्तेंति जाव दंतेहिं निक्खुडेंति जाव करेत्तए	१।४।१६	१।४।११
उव्वत्तेंति जाव नो चेव णं संचाएंति करेत्तए	१।४।१२	१।४।११
एगदिसिं जाव वाणियगा	१।८।६७	१।८।६२
एगयओ जहा अरहन्नए जाव लवणसमुद्दं	१।१७।५	१।८।६६
एज्जमाणिं जाव निवेसेह	१।८।१७१	१।१।४८;१।१६।१३१
एवं अत्थेणं दारेणं दासेहिं पेसेहिं परियणेणं	१।१४।७७	१।१४।७७
एवं कुलत्था वि भाणियव्वा । नवरं इमं नाणत्तं—इत्थिकुलत्था य धन्नकुलत्था य । इत्थिकुलत्था तिविहा पण्णत्ता, तं जहा— कुलबहुयाइ य कुलमाउयाइ य कुलधूयाइ य।		
धन्नकुलत्था तहेव	१।५।७४	१।५।७३
एवं जहा मल्लिणाए	१।१६।२००	१।८।१५४
एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स	१।१८।३१,३२	१।१८।२०,२२
एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं	२।१।१५	राय० सू० ६६८
एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोसढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे		
तहेव जाव सूमालिया	१।१६।९४-९७	१।१४।४०-४३
एवं जहेव राई तहेव रयणी वि	२।१।५७-६०	२।१।४७-५०
एवं जाव घोसस्स	२।३।११	ठाणं २।३५६-३६२
एवं जाव सागरदत्तस्स	१।१६।८८-९१	१।१६।६३-६६
एवं पत्तियामि णं रोएमि णं	१।१।१०१	१।१।१०१
एवं पाएहिं सीसे पोट्टे कायंसि	१।१।१५३	१।१।१५३
एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्ठए वि		
कण्णसक्कुलीओ वि नासापुडाइं	१।१४।२१	१।१४।२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं पासत्थे कुसीले पमत्ते	१।५।११७	१।५।११७
एवं मासा वि । नवरं इमं नाणत्तं—मासा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—कालमासा य अत्थमासा य धन्नमासा य । तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं दुवालस तं जहा—सावणे जाव आसाढे । तेणं अभक्खेया । अत्थमासा दुविहा हिरण्णमासा य सुवण्णमासा य तेणं		
अभक्खेया । धन्नमासा तहेव	१।५।७५	१।५।७३; भ० १८।२१५-२१६
एवं वट्टए आडोलियाओ तिंदूसए पोचुल्लए साडोल्लए	१।१८।८	१।१८।८
एवं सेसाओ वि	२।७।६	२।७।२
एवं सेसाओ वि	२।८।६	२।८।२
ओरोह जाव विहरइ	१।१६।२२५	१।१६।१९५
ओसन्ने जाव संथारए	१।५।१२५	१।५।११७
ओहय जाव झियायह	१।८।१७१	१।१।३४
ओहयमण जाव झियायइ	१।३।२३	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणिं	१।१४।३८;१।१६।२०८	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा०	१।१४।३८	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियाइ	१।१।३४	वृत्ति
ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ	१।१४।३७;१।१६।६२,८७,२०७	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियायंति	१।९।१५	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह	१।८।१७३	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियायामि	१।१६।६५	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि	१।१६।६४,९२,२०८	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि	१।१७।१०	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ	१।८।१६८;१।१४।७७;१।१७।८	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे	१।१९।३२	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियायसि	१।१७।९	१।१।३४
कंडरीए उट्ठाए उट्ठेइ उठेत्ता जाव से जहेयं	१।१९।१२	१।१।१०१
कंता जाव भवेज्जामि	१।१६।९७	१।१४।४३
कंते जाव जीवियऊसासए	१।१।१४५	१।१।१०६
कक्खडा जाव दुरहियासा	१।१।१६२	वृत्ति
कज्जेसु य जाव रहस्सेसु	१।७।४२	१।५।९०
कटटु जाव पडिसहेइ	१।१६।२५५	१।१६।२५१,२५२
कट्ठस्स य जाव भरेंति	१।१७।२८	१।१७।२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कणग जाव दलयइ	१।१६।१६८	१।१।९१
कणग जाव पडिमाए	१।८।१८०	१।८।४१
कणग जाव सावएज्जं	१।१८।३८	१।१।९१
कणग जाव सिलप्पवाले	१।१८।३३	१।१।९१
कयकोउय जाव सव्वालंकारविभूसिया	१।१।८१	१।२।२६
कयत्थे जाव जम्म०	१।१३।२५	१।१३।२५
कयबलिकम्मं जाव सव्वालंकारविभूसियं	१।१६।७३	१।१।८१
कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता	१।१।२७	१।१।३३
कयबलिकम्मा जाव विपुलाइं जाव विहरइ	१।१।३२	१।२।६६
कयबलिकम्मे जाव रायगिहं	१।२।५८	१।१।८१
कयबलिकम्मे जाव सरीरे	१।१।६६	१।१।२७
कयबलिकम्मे जाव सव्वालंकार०	१।१।४७	१।१।८१
करयल०	१।५।६८,१२३;१।८।७३,८१,९८, १५८,१६०;१।९।३१;१।१४।३१,५०	१।१।१९
करयल०	१।८।२०३,२०४;१।१६।१३७,१६१, २१६,२६४;१।१७।११	१।१।२६
करयल०	१।१६।२४६	१।१।३९
करयल अंजलिं	१।१।५८,६०	१।१।१९
करयल जाव एवं	१।१।३०;१।१६।१७०,२९२; १।१९।१३,४६;२।१।२०	१।१।२६
करयल जाव एवं	१।९।१७;१।१४।२७,२८;१।१६।४३	१।१।२१
करयल जाव कट्टु	१।१।११८;१।१६।१३३;२।१।११	१।१।२६
करयल जाव कट्टु तहेव जाव समोसरह	१।१६।१४२	१।१६।१३२
करयल जाव कण्हं	१।१६।१३८	१।१६।१३७
करयल जाव पच्चप्पिणंति	१।८।१९६	१।८।१९५
करयल जाव पडिसुणेइ	१।८।१९५	१।१।२६
करयल जाव वद्धावेइ	१।१५।१८	१।१।४८
करयल जाव वद्धावेंति	१।१६।२३६	१।१।४८
करयल जाव वद्धावेंति	१।१७।२९	१।१।३९
करयल जाव वद्धावेत्ता	१।८।१३१;१।१६।२४४	१।१।४८
करयल जाव वद्धावेहि	१।८।१०७	१।१।४८
करयल तं चेव जाव समासोरह	१।१६।१३४	१।१६।१३२
करयल तहत्ति जेणेव	१।१४।१३	१।५।१३
करयलपरिग्गहियं जाव अंजलिं	१।१।२१	१।१।१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु	१।१।३६	१।१।२६
करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता	१।८।१२६	१।१।४८
करयल वद्धावेइ	१।५।२०	१।१।४८
करयल वद्धावेत्ता	१।८।१०५	१।१।४८
करयल वद्धावेत्ता	१।१६।१५७	१।१।३६
करेइ जाव अडमाणीओ	१।१४।४१,४२	वृत्ति
करेंति जाव पच्चुत्तरंति	१।६।१५	१।२।१४
करेत्ता जाव विगयसोया	१।१८।२७	१।६।४८
करेमो तं चेव जाव णूमेमो	१।१६।२८८	१।१६।२८२
करेह करेत्ता जाव पच्चप्पिणह	२।१।१२	राय० सू० ६
करेह जाव पच्चप्पिणंति	१।८।४०	१।८।५१
कल्लं	१।८।५१	१।१।२४
कल्लं जाव विहरइ	१।५।१२४	१।५।१२४
कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा	१।२।३३	१।२।३३
कसप्पहारेहि य जाव तण्हाए	१।२।६७	१।२।३३
कसप्पहारेहि य जाव लयाप्पहारेहि	१।२।४५	१।२।३३
कारणेसु य जाव तहा	१।५।६०	१।१।१६
कालगए जाव प्पहीणे	१।१६।३२२	१।५।८४
कालोभासे जाव वेयणं	१।२।६७	वृत्ति
कासे जोणिसूले जाव कोढे	१।१६।३०	१।१३।२८
किण्हाण य जाव सुक्किलाण	१।१७।२२	१।१७।२३
किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि	१।१३।२०	१।१७।२३
किण्होभासा जाव निउरंबभूया	१।७।१३	ओ० सू० ४
कुंभए एवं तं चेव जाव पवेसेइ रोहासज्जे	१।८।१७४	१।८।१७३
कुडवा जाव एगदेसंसि	१।७।१७,१८	१।७।१५,१६
के जाव गमणाए	१।१।१११	१।१।१०७
कोट्ठपुडाण य जाव अण्णेसिं	१।१७।२२	वृत्ति
कोट्ठागारंसि सकम्म सं	१।७।२५	१।७।७
कोडुंबिय जाव खिप्पामेव लहुकरणजुत्तं जाव जुत्तामेव उवट्ठवेंति	१।८।५२	उवा० १।४७;१।८।५१
कोडुंबियपुरिसा जाव एवं	१।१५।७	१।१५।६
कोडुंबियपुरिसा जाव ते वि तहेव	१।१।११७	१।१।११६
कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति	१।१।६२	१।१।२३
खंड जाव एडेह	१।१६।७८	१।१६।७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंतीए जाव बंभचेरवासेणं	१।१०।५	१।१०।३
खिज्जणाहि य जाव एयमट्ठं	१।१८।१४	१।१८।१०
खीरघाईए जाव गिरिकंदरमल्लीणा	१।१६।३६	आयारचूला १५।१४
गंध जाव उस्सुक्कं	१।८।८४	१।१।३०
गंध जाव पडिविसज्जेइ	१।१६।१६६	१।८।१६०
गंध जाव सक्कारेत्ता	१।७।६	१।१।३०
गंधव्वेहि य जाव विहरंति	१।१६।१५२	१।१६।१५०
गज्जियं जाव थणियसद्दे	१।६।६	१।८।७१
गणनायग जाव आमंतेंति	१।१।८१	१।१।२४
गणिमस्स जाव चउव्विहभंडगस्स	१।८।६६	१।८।६६
गब्भस्स जाव विणेंति	१।२।१७	१।२।१७
गय०	१।८।६३	१।१।६७
गवलगुलिय जाव खुरधारेणं	१।६।१६	उवा० २।२२
गवल जाव एडेमि	१।६।३७	१।६।१६
गहाय जाव पडिगए	१।१८।३६	१।१८।३८
गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं	१।१८।२४	१।१८।२२
गामागर जाव अणुपविससि	१।१६।२२६	१।८।५८
गामागर जाव आहिंडह	१।१४।४३;१।१७।१७	१।८।५८
गिण्हामि जाव मग्गणगवेसणं	१।२।२६	१।२।२७,२६
गुणे० किं चालेइ जाव नो परिच्चयइ	१।८।७६	१।८।७४
घडएसु जाव संवसावेइ	१।१२।१६	१।१२।१६
चउत्थ जाव भावेमाणे	१।८।१६	१।१।१६५
चउत्थ जाव विहरइ	१।५।१०१;२।१।३३	१।१।१६५
चउत्थ जाव विहरंति	१।८।१७,२५	१।१।१६५
चउत्थस्स उक्खेवओ	२।४।१	२।२।१
चंपगपायवे०	१।१८।४६	१।१।१०५
चच्चर जाव महापहपहेसु	१।१।६७	१।१।३३
चरगा वा जाव पच्चप्पिणंति	१।१५।७	१।१५।६
चरमाणा जाव जेणेव	१।२।६६	१।१।४
चरमाणे जाव जेणेव	१।५।१०	१।१।४
चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ	१।५।१०८	१।१।४
चवलं० नहेहिं	१।४।१७	१।४।१४
चारगसोहणं जाव ठिइपडियं	१।१४।३३,३४	१।१।७६-७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चारुवेसा जाव पडिरूवा	१।२।८	१।१।१७
चालित्तए जाव विप्परिणामित्तए	१।८।७६	१।८।७६
चिट्ठइ जाव उट्ठाए	१।१।१५१	१।१।१५०
चिट्ठइ जाव संजमेणं	१।१।१६३	१।१।१५१
चित्तेह जाव पच्चप्पिणह	१।८।११७	१।१।२३
चेइए जाव अहापडिरूवं	१।२।६६	१।१।४
चेइए जाव विहरइ	१।१।६४	१।१।४
चेइए जाव संजमेणं	२।१।३	१।१।४
चोक्खा जाव सुहासणवरगया	१।१६।१५२	१।२।१४
चोरनायगं जाव कुडंगे	१।१८।३०	१।१८।२१
चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए	१।१८।२८	१।१८।२५
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरइ	१।१३।३६	१।१३।३६
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरइ	१।१६।१०८	१।१६।१०६
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरित्तए	१।१६।१०७	१।१६।१०६
छट्ठट्ठम जाव विहरइ	१।१६।१०५	१।१।१६५
जणवयं जाव नित्थाणं	१।१८।३२	१।१८।२२
जहा पोट्ठिला जाव परिभाएमाणी	१।१६।६२	१।१४।३८
जहा मंडुए सेलगस्स जाव बलिय सरीरे जाए	१।१६।२४-२६	१।५।११४-११६
जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा	१।१७।११	१।८।७२
जहा महब्बले जाव परिवड्ढिया	१।८।३७	राय० सू० ८०४
जहा मागंदियदारगाणं जाव कालियवाए	१।१७।६	१।६।६
जहा वद्धमाणसामी नवरं नवहत्थुस्सेहे०	२।१।१६	औ० सू० १६;वाचनान्तर पृ० १४०
जहा सूरियाभो जाव भासमणपज्जत्तीए	२।१।४०	राय० सू० ७६७
जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतीए	१।१६।२०	१।५।१०६
जायं च जाव अणुवड्ढेमि	१।२।१४	१।२।१२
जाया जाव पडिलाभेमाणी	१।१४।४६	१।५।४७
जाव एवं चेव पल्हायणिज्जे	१।१२।२३	१।१२।२२
जाव जहा	१।४।२२	१।२।७६
जाव पज्जुवासइ	१।५।१७	१।१।६६
जाव सणियं	१।४।१६	१।४।१३
जाव समणोवासए जाए अभिगयजीवा-जीवे जाव पडिलाभेमाणे	१।५।६३,६४	राय० सू० ६६३;१।५।४७
जाव हावभावं	१।८।१२१	१।८।११७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिमिय जाव सूइभूया	१।२।१४	१।१।८१
जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासण०	१।१६।२१६	१।२।१४
जोव्वणेण य जाव नो खलु	१।८।१५४	१।८।९०
झोडा जाव मिलायमाणा	१।११।४	१।११।२
ठवेंति जाव चिट्ठंति	१।१७।२२	१।१७।२२
डिभएहि य जाव कुमारियाहि	१।२।२७	१।२।२५
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	१।१४।६४	१।१।२७
ण्हाए जाव सरणं उवेइ २ करयल एवं व	१।१६।२६५	१।१६।२६४
ण्हाए जाव सुद्धप्पावेसाइं	१।२।७१	१।१।१२४
ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणीयं	१।१४।५३	१।१४।१८
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	१।२।६६;१।८।१७६	१।१।२७
ण्हाया जाव बहूहिं	१।८।१६८	१।८।१७६
ण्हाया जाव सरीरा	१।३।११	१।१।२७
ण्हायाणं जाव सुहासण०	१।१६।८	१।७।६
तइयज्झयणस्स उक्खेवओ	२।१।५६	२।१।४६
तइयवग्गस्स निक्खेवओ	२।३।१२	२।१।६३
तएणं से दूए एवं वयासी जहा वासुदेवे		
नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव	१।१६।१४३,१४४	१।१६।१३४-१४१
तं इक्छामि णं जाव पव्वइत्तए	१।१।१११	१।१।१०४
तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स		
जाव पव्वइस्ससि	१।१।१०७	१।१।१०६
तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स	१।१८।५२	१।१८।५१
तं रयणि च णं चोद्दस महासुमिणा		
वण्णओ	१।८।२६	कल्पसूत्र ४
तक्करे जाव गिद्धे विव आमिसभक्खी	१।२।३३	१।२।११

तच्चं दूयं चंपं नयरिं। तत्थ णं तुम कण्णं अंगरायं सल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह। चउत्थं दूयं सोत्तिमइं नयरिं। तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसय-संपरिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह। पंचमं दूयं हत्थिसीसं नयरिं। तत्थ णं तुमं दमदंतरायं करयल जाव समोसरह। छट्ठं दूयं महुरं नयरिं। तत्थ णं तुमं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धरं रायं करयल जाव समोसरह। सत्तमं दूयं रायगिहं नयरं। तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासंधसुयं करयल जाव समोसरह। अट्ठमं दूयं कोडिण्णं नयरं। तत्थ णं तुमं रुप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह। नवमं दूयं विराटं नयरिं। तत्थ णं तुमं कीयगं भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह। दसमं दूयं अवसेसेसु गामागर-नगरेसु अणेगाइं रायहस्साइं जाव समोसरह। तए णं से दूए तहेव निग्गच्छइ

जेणेव गामागर तहेव जाव समोसरह।	१।१६।१४५	१।१६।१३२-१३४
तच्चं पि जाव संचिट्ठइ	१।१६।३५	१।१६।३५
तच्चा जाव सब्भूया	१।१२।३१	१।१२।१६
तणकूडे०	१।१४।७७	१।१४।७६
तत्थे जाव संजायभए	१।१।१६८	१।१।१६०
तयावर ईहापूह जाव सण्णिजाइसरणे	१।८।१८१	१।१।१६०
तलवर जाव पभितओ	१।१४।६५	१।५।६
तलवर जाव सत्थवाह	१।५।६	ओ० सू० ५२
तहत्ति जाव पडिसुणेंति	१।५।१३	१।१।२६
तहारूवेहिं जाव विपुलं	१।१।२१५	१।१।२०६
तहेव जाव पहारेत्थ	१।८।१३६,१३७	१।८।६६,१००
तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं	२।१।५१-५४	२।१।३२-४४
तहेव सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइ-छत्तं पडागाइपडागं पासइ २ त्ता		
विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता	१।५।२८,२६	१।१।१२६,१४४,६६
ताओ जाव विदेहे वासे जाव अंतं	१।१६।३२६	१।१।२१२
तिक्खुत्तो जाव एवं	१।१६।३४	१।१६।२६
तिग जाव पहेसु	१।५।२६	१।१।३३
तिग जाव बहुजणस्स	१।१६।२६	१।५।५३
तित्तेसु जाव विमुक्कबंधणे	१।६।४	१।६।४
तुट्ठो वा जाव आणंदो	१।२।६४	१।२।६३
तुब्भण्णं जाव पव्वयामि	१।१२।४३	१।१।१०४
तुरियं जाव वेइय	१।८।१६६	१।४।१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं	१।१६।१५५	१।१।२२
तेसिं जाव बहूणि	१।१७।६	१।८।७१
थलय०	१।८।४६	१।८।३०
थलय जाव दसद्धवण्णं	१।८।३१	१।८।३०
थलय जाव मल्लेणं	१।८।३२	१।८।३०
थावच्चापुत्ते जाव मुंडे	१।५।८०	१।५।३४
थेरागमणं इंदकुंभे उज्जाणे समोसढा	१।८।८	१।८।१२
थेरा जाव आलित्ते	१।१६।३१५	१।१।१४६
दंडणाणि जाव अणुपरियट्टइ	१।४।१८	सूय० २।२।७८
दंडणाणि य जाव अणुपरियट्टइ	१।३।२४	१।३।२४
दसमस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव अट्ठ	२।१०।१,२	२।२।१,२
दाणधम्मं च जाव विहरइ	१।८।१४१ १५२	१।८।१४०
दारियं जाव झियायमाणि	१।१६।६४	१।१६।६२
दासचेडियाहिं जाव परिक्खिज्जमाणी	१।८।१४७	१।८।१४६
दाहिणड्ढभरहस्स जाव दिसं	१।१६।२६६	१।१६।२६७
दिट्ठे जाव आरोग्ग	१।१।२०	१।१।२०
दित्ते जाव विउलभत्तपाणे	१।२।७	वृत्ति
दीहमद्धं जाव वीईवइस्सइ	१।२।७६	१।२।६७
दुपयस्स वा जाव निव्वत्तेइ	१।८।१२६	१।८।११६
दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ	१।१७।१३	१।१।१०२
दुरुहंति जाव कालं	१।१६।३२३	१।१६।३२३
दुरूढा जाव पाउब्भवंति	१।८।१४	१।५।६१
दूइज्जमाणा जाव जेणेव	१।१६।३२१	१।१।४
दूइज्जमाणे जाव विहरइ	१।१६।३२०	१।१।४;१।१६।३१६
देवकन्ना	१।८।१५४	१।८।८६
देवकन्ना वा जाव जारिसिया	१।८।८६,१११	वृत्ति
देवयभूयाए जाव निव्वत्तिए	१।८।१२८	१।८।१२६
देवलोगाओ जाव महाविदेहे	१।१६।२४	१।१।२१२
देवाणुप्पिया जाव कालगए	१।१६।३२३	१।१६।३२२
देवाणुप्पिया जाव जीवियफले	१।८।७६	उवा० २।४०
देवाणुप्पिया जाव नाइ	१।१६।२६५	१।५।१२३
देवाणुप्पिया जाव पव्वतिए	१।१६।३४	१।१६।२६
देवाणुप्पिया जाव साहरांहि	१।१६।२४२	१।१६।२४०
देवाणुप्पिया जाव सुलद्धे	१।१६।२६	१।१६।२६
देवी जाव पंडुस्स	१।१६।३०१	१।१६।२६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवी जाव पउमनाभ०	१।१६।२३६	१।१६।२३३
देवी जाव साहिया	१।१६।२४०	१।१६।२०८
देवेण वा जाव निग्गंथाओ	१।८।७५	उवा० २।४५
देवेण वा जाव मल्लीए	१।८।१३५	१।८।७५
दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ	२।२।१	२।१।६
धण कणग जाव परिभाएउं	१।१।६२	१।१।६१
धण जाव सावएज्जस्स	१।७।३४	१।१।६१
धण जाव सावएज्जे	१।१६।६	१।१।६१
धण्णा णं ते जाव ईसरपभियओ	१।१३।१५	१।१।३३
धम्मं सोच्चा जं नवरं	१।५।८७	१।१।१०१
धम्मं सोच्चा जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरण्णं जाव पव्वइया तहा णं अहं णो संचाएमि पव्वइए	१।५।४५	राय० सू० ६६५
धम्मकहा भाणियव्वा	१।५।७८	१।५।६३
धम्मोत्ति वा जाव विजयस्स	१।२।७५	१।२।६४
धोवसि जाव आसयसि	२।१।३५	२।१।३४
धोवेइ जाव आसयइ	२।१।३८	२।१।३४
धोवेइ जाव चेएइ	१।१६।११६	१।१६।११४
धोवेसि जाव चेएसि	१।१६।११५	१।१६।११४
नंदीसरे अट्ठाहियं करेंति जाव पडिगया	१।८।२२४	जंबू० वक्ष० ५
नगरगिहाणि	१।८।६७	१।८।५८
नगर जाव सण्णिवेसाणं आहेवच्चं जाव विहराहि	१।१।११८	ओ० सू० ६८
नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ	१।१४।८५	१।१।६६
नट्ठा य जाव दिन्न०	१।१३।२०	ओ० सू० १
नट्ठमईए जाव अवहिए	१।१७।१०	१।१७।८
नयरिं अणुपविसइ	१।१६।२१६	१।१६।२१८
नवमस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव अट्ठ	२।६।१,२	२।२।१,२
नवरं तस्स	१।७।२८,२६	१।७।८,२५,२६
नाइ०	१।५।२६;१।७।६,६,२२,२६,४२;१।१५।११;१।१६।५०,५४;१।१८,५१,५६	१।१।८१
नाइ०	१।१४।१८;१।१५।१६	१।५।२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाइ चउण्ह य कुल जाव विहराहि	१।७।२५	१।७।६
नाइ जाव आमंतेइ	१।१४।५३	१।७।६
नाइ जाव नगरमहिलाओ	१।२।१६	१।२।१२
नाइ जाव परियणं	१।१४।१६	१।१।८१
नाइ जाव परियणेण	१।६।४८	१।१।८१
नाइ जाव परिवुडे	१।१६।५०	१।५।२०
नाइ जाव संपरिवुडे	१।१३।१५;१।१४।५३	१।५।२०
नामं वा जाव परिभोगं	१।१६।६७	१।१४।३६
नाम जाव परिभोगं	१।१४।३७	१।१४।३६
नासानीसासवायवोज्झं जाव हंसलक्खणं	१।१।१२८	आयारचूला १५।२८
निक्खेवओ	२।४।६	२।१।४५
निक्खेवओ अज्झयणस्स	२।२।८	२।१।४५
निक्खेवओ चउत्थवग्गस्स	२।४।६	२।१।६३
निक्खेवओ दसमवग्गस्स	२।१०।७	२।१।६३
निक्खेवओ पढमज्झयणस्स	२।३।८	२।१।४५
निक्खेवओ बिइयवग्गस्स	२।२।१०	२।१।६३
निग्गंथा जाव पडिसुणेंति	१।१६।२३	१।१।२६
निग्गंथाणं जाव विहरित्तए	१।५।१२४	१।५।११४
निग्गंथी वा	१।१८।६१	१।२।६८
निग्गंथी वा जाव पव्वइए	१।७।२७;१।१०।३;१।११।३,५	१।२।६८
निग्गंथे वा जाव पव्वइए	१।२।७६	१।२।६८
निग्गंथो वा	१।१७।२५,३६	१।२।६८
निग्गंथी वा जाव पंचसु	१।१५।१४	१।३।२४
निग्गंथो वा २ जाव विहरिस्सइ	१।५।१२६	१।२।७६
निट्ठियं जाव विज्झायं	१।१।१८४	१।१।१८३
निप्पाणे जाव जीवविप्पजढे	१।१८।५४	१।२।३२
नियग०	१।७।६	१।१।८१
निव्वत्तियनामधेज्जे जाव चाउदंते	१।१।१६७	१।१।१५६
निव्वाघायंसि जाव परिवड्ढइ	१।१६।३६	राय० सू० ८०४
निसंते जाव अब्भणुण्णाया	१।१४।५०	१।१।१०४
निसम्म जं नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे ठावेमि	१।८।८	१।५।८७
निसीयइ जाव कुसलोदंतं	१।१६।१६८	१।१६।१८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निस्संचारं जाव चिट्ठंति	१।८।१७२	१।८।१६७
नीलुप्पल०	१।१८।४६	१।६।१६
नीलुप्पल जाव असिं	१।१४।७३	१।६।१६
नीलुप्पल जाव खंधंसि	१।१४।७७	१।१४।७३
पउमनाहे जाव नो पडिसेहिए	१।१६।२८७	१।१६।२८५
पंचअणगारसया बहूणि वासाणि सामण्ण- परियागं पाउणित्ता जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छंति जहेव थावच्चापुत्ते तहेव सिद्धा०	१।५।१२७,१२८	१।५।८३,८४
पंचमवग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव बत्तीसं	२।५।१,२	२।२।१,२
पंचमे जाव भवियव्वं	१।७।३३	१।७।२५,६
पंचयण्णं जाव पूरियं	१।१६।२७६	१।१६।२७५
पंचाणुव्वइयं जाव समणोवासए जाए अहिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं	१।५।४५-४७	वृत्ति; ओ० सू० १२०,१६२
पंडवा०	१।१६।३१३	१।१।११६
पंथएणं जाव विहरइ	१।५।१२६	१।५।१२४
पगइभद्दए जाव विणीए	१।१।२०६;१।१६।२४	ओ०सू०११६
पच्चक्खाए जाव आलोइय०	१।१६।४६	१।१।२०६
पच्चक्खाए जाव थूलए	१।१३।४२	१।१।२०६
पज्जग जाव तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे पव्वइस्ससि	१।१।१११	१।१।११०
पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणंति	१।१।७७	१।१।२३
पट्टिया जाव गहियाउहपहरणा	१।२।३२	राय०सू० ६६४
पडागे जाव दिसोदिसिं	१।१६।२५२	वृत्ति
पडिबुद्धा जाव विहाडिय	१।१६।६५	१।१६।६२
पडिबुद्धिं जाव जियसत्तुं	१।८।३६	१।८।२७
पडिबुद्धी० करयल०	१।८।४७	१।१।३६
पडिलाभेमाणे जाव विहरइ	१।५।५६	१।५।५२
पडिसुणेंति जाव उवसंपज्जित्ता	१।१६।२३	१।५।११३
पढमज्झयणस्स उक्खेवओ	२।७।३;२।८।३;२।६।३	२।२।३
पढमस्स उक्खेवओ	२।१०।३	२।२।३
पणामेत्ता जाव कूवं	१।१६।२४४	१।१६।२४३
पण्णत्ते जाव सग्गं	१।५।६०	१।५।५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पतिदया जाव अपासमाणी	१।१६।६२	१।१६।५६
पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए	१।७।१५	१।७।१४
पत्तिया जाव चिट्ठंति	१।११।२	१।११।२
पत्तेयं जाव पहारेत्थ	१।१६।१७१	१।१६।१४६
पमाएयव्वं जाव जामेव	१।५।३३	१।१।१४८
परलोए नो आगच्छइ जाव वीईवइस्सइ	१।१५।१४	१।२।७६
परिग्गहिए जाव परिवसित्तए	१।८।१३१	१।८।१०७
परिणमंति तं चेव	१।१२।१७	१।१२।६
परिणममाणा जाव ववरोवेंति	१।१५।१५	१।१५।११
परिणामेणं जाव जाईसरणे	१।१३।३५	१।१।६०
परिणामेणं जाव तयावरणिज्जाणं	१।१४।८३	१।१।१६०
परितंता जाव पडिगया	१।१३।३१	१।४।१६
परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति	१।१७।२२	१।१७।२२
परियागए जाव पासित्ता	१।३।१६	१।३।५
परियाणह जाव मत्थयंसि	१।१।४८	१।१।४८
पल्लंसि जाव विहरंति	१।७।२०	१।७।१६
पवर जाव पडिसेहित्था	१।१६।२५६	१।८।१६५
पवर जाव भीए	१।१८।४४	१।१८।४२
पवरविवडिय जाव पडिसेहिया	१।१६।२५३	१।८।१६५
पव्वए जाव सिद्धे	१।५।१०४,१०५	१।५।८३,८४
पव्वावेइ जाव उवसंपज्जित्ता	२।१।३०,३१	१।१।१५०,१५१
पव्वावेइ जाव जायामायाउत्तियं	१।१।१६२	१।१।१५०
पसत्थदोहला जाव विहरइ	१।८।३३	१।१।६८,६६
पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं	१।६।४	१।१।२०६
पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा	१।१।१८६	१।१।१८१
पाणाणुकंपयाए जाव सत्ताणुकंपयाए	१।१।१८२	१।१।१८१
°पामोक्खा जाव वाणियगा	१।८।८१	१।८।६६
°पामोक्खे जाव वाणियगे	१।८।८३	१।८।६६
पायसंघट्टाणि य जाव रयरेणुगुंडणाणि	१।१।१८६	१।१।१५३
पावयणं जाव पव्वइए	१।२।७३	१।१।१०१;भ० ६।१५०,१५१
पावयणं जाव से जहेयं	१।१२।३५	१।१।१०१
पासाईए जाव पडिरूवे	१।१।८६	१।१।८६
पासित्ता जाव नो वंदसि	१।५।६७	१।५।६६
पियं जाव विविहा	१।१।२०६	भ० २।५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पीइदाणं जाव पडिविसज्जेइ	१।३।३१	१।१।३०
पीइमणा जाव हियया	२।१।११	१।१।१९
पीढं	१।५।११७	१।५।११०
पुच्छणाए जाव एमहालियं	१।१।१५४,१५५	१।८।१५३
पुढवि जाव पाओवगमणं	१।५।८३	१।१।२०६
पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स	१।२।५६,६४	१।२।४०
पुप्फ जाव मल्लालंकार	१।२।१४	१।२।१२
पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा	१।१३।१९	१।११।२
पुरापोराणं जाव पच्चणुब्भवमाणी	१।१६।९२	वृत्ति
पुरापोराणं जाव विहरइ	१।१६।११३	१।१६।९२
पुव्वभवपुच्छा एवं	२।१।५०	२।१।१५
पोक्खरिणीओ जाव सरसरपंतियाओ	१।१३।१५	राय०सू० १७४
पोसहसालं जाव पुव्वसंगइयं	१।१६।२०१-२०३	१।१६।२३७-२३९
पोसहसालाए जाव विहरइ	१।१३।१४	१।१।५३
फलिया जाव उवसोभेमाणा	१।११।४	१।११।२
फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं	१।५।११४	१।५।११०
फासुयं पीढ जाव विहरइ	१।५।११३	१।५।११०
बंधित्ता जाव रज्जू	१।१४।७७	१।१४।७३
बहिया जाव खणावेत्तए	१।१३।१५	१।१३।१५
बहिया जाव विहरंति	१।५।११८	१।१।१९६
बहिया जाव विहरित्तए	१।५।११७	१।१।१९६
बहुनायाओ एवं जहा पोट्टिला जाव उव्वलद्धे	१।१६।९७	१।१४।४३
बहूइं जाव पडिगयाइं	१।१६।१८२	१।८।१९१
बहूणि गामाणि जाव गिहाइं	१।१६।१९९	१।८।५८
बहूहिं जाव चउत्थ विहरइ	१।५।३८	१।१।१९५
बहूसु जाव विहरेज्जाह	१।९।२०	१।९।२०
बारवइं एवं जहा पंडू तहा घोसणं घोसावेइ		
जाव पच्चप्पिणंति पंडुस्स जहा	१।१६।२२३,२२४	१।१६।२१३,२१४
बावत्तरिं कलाओ जाव अलंभोगसमत्थे	१।१६।३०८,३०९	१।१।८४,८५
बासट्ठिं जाव उत्तरइ	१।१६।२८७	१।१६।२८५
बासट्ठिं जाव उत्तिण्णा	१।१६।२८७	१।१६।२८५
बिइयज्झयणस्स निक्खेवओ	२।१।५५	२।१।४५
बुज्झिहिइ जाव अंतं	१।१३।४४	१।१।२१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवओ जाव पव्वइत्तए	१।१।११३	१।१।१०४
भड०	१।८।६४	१।८।५७
भवणवइ० तित्थयर०	१।८।३६	कल्पसूत्र महावीरजन्म प्रकरण
भवित्ता जाव बोद्दसपुव्वाइं	१।१४।८२	१।५।८०
भवित्ता जाव पव्वइत्तए	१।८।२०४;२।१।२७	१।१।१०४
भवित्ता जाव पव्वइस्सामो	१।१२।४०	१।१।१०१
भवित्ता जाव पव्वयामो	१।८।१८६;१।१६।३१०	१।१।१०१
भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स	२।४।८	ठाणं० २।३५५-३६२
भारहाओ जाव हत्थिणाउरं	१।१६।२४०	१।१६।२५४
भाव जाव चित्तेउं	१।८।११८	१।८।११७
भासासमिए जाव विहरइ	१।५।३५-३७	वृत्ति
भीए जाव इच्छामि	१।१२।३६	१।५।२१
भीए जाव संजायभए	१।१४।६६	१।१।१६०
भीया जाव संजायभया	१।६।२५,२७	१।१।१६०
भीया वा	१।८।७६	१।८।७३
भीया संजायभया	१।८।७२	१।१।१६०
भुंजावेंति जाव आपुच्छंति	१।८।६६	१।८।६६
°भुत्तुत्तरागए जाव सुइभूए	१।१२।४	१।२।१४
भेसज्जेहिं जाव तेगिच्छं	१।१६।२२	१।५।११०
भोगभोगाइं जाव विहरइ	१।१।६६	१।१।१७
भोगभोगाइं जाव विहरति	१।१६।१८३	१।१।३२
भोगभोगाइं जाव विहराहि	१।१६।२०८	१।१।३२
मडविकप्पणाहिं जाव उवणेंति	१।१६।२४७	ओ० सू० ५७
मज्झमज्झेणं जाव सयं	१।१६।१६६	१।१६।२१८
मट्टियाए जाव अविरुद्धेणं	१।८।१४३	१।५।६०
मट्टियालेवे जाव उप्पतित्ता	१।६।४	१।६।४
मणुण्णे तं चेव जाव पल्हायणिज्जे	१।१२।८	१।१२।४
मत्थयच्छिड्डाए जाव पडिमाए	१।८।४१,४२	१।८।४१
मयूरपोयगं जाव नदुल्लगं	१।३।२८	१।३।२७
महत्थं०	१।८।८१	१।८।८१
महत्थं जाव उवणेंति	१।८।८४	१।८।८१
महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं	१।८।२०५	१।१।११६
महत्थं जाव निक्खमणाभिसेय	१।५।६८	१।१।११६
महत्थं जाव पडिच्छइ	१।१७।१७	१।८।८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महत्थं जाव पाहुडं	१।१७।१६	१।५।२०
महत्थं जाव पाहुडं रायारिहं	१।१३।१५	१।५।२०
महत्थं जाव रायाभिसेयं	१।५।६२;१।१६।३७	१।१।११६
महब्बले जाव महया	१।८।१६	१।५।३४
महयाहय जाव विहरइ	२।१।१०	राय० सू० ८
महालियं जाव बंधित्ता अत्थाह जाव उदगंसि	१।१४।७७	१।१४।७५
महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि	१।१।११०	१।१।१०६
महिड्ढीए जाव महासोक्खे	१।१।५३	सूय०२।२।७३
महुरालाउयं जाव नेहावगाढं	१।१६।८	१।१६।८
माणुस्सगाइं जाव विहरइ	१।१५।१६	१।१।६७
माया इ वा जाव सुण्हा	१।१४।७१	सूय० २।२।७
मासाणं जाव दारियं	१।१६।१२४	१।२।२०
माहण जाव वणीमगाण	१।१४।३८	आयारचूला १।१६
माहणी जाव निसिरइ	१।१६।२४	१।१६।१४
मित्त	१।७।२२	१।१।८१
मित्त जाव चउत्थ	१।७।१०	१।७।६
मित्त जाव बहवे	१।७।३८	१।७।२५,११
मित्त जाव संपरिवुडा	१।५।२०	१।२।१२
मित्तनाइ गणनायग जाव सद्धिं	१।१।८१	१।१।८१
मित्तपक्खं जाव भरहो	१।१।११८	वृत्ति
मुडावियं जाव सयमेव	१।१।१६१	१।१।१४६
मुडे जाव पव्वयाहि	१।१६।१४	१।१।१०१
मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे	१।१६।२६	१।१६।२८
मेहे जाव सवणाए	१।१।१५४	१।१।१०६
य णं जाव परमसुइभूए	१।१२।२२	१।१।८१
रज्जइ जाव नो विप्पडिघाय०	१।१६।४६	१।१७।२५
रज्जं च जाव अंतेउरं	१।१६।२६	१।१।१६
रज्जे जाव अंतेउरे	१।१४।६०	१।१४।२१
रज्जे य जाव अंतेउरे	१।८।१५१;१।१६।१८७;१।१६।२६	१।१।१६
रज्जे य जाव वियंगेइ जाव अंगमगाइ	१।१४।२२	१।१४।२१
रज्जे य जाव वियत्तेइ	१।१४।२२	१।१४।२१
रण्णो जाव तहत्ति	१।१६।३०३	१।८।१०४
रण्णो वा जाव एरिसए	१।८।१५३	१।८।६७
रयण जाव आभागी	१।१८।५६	१।१।६१;१।१८।५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रहमहया	१।१६।१४७	१।८।५७
राईसर जाव गिहाइं	१।१४।४३	१।८।५८
राईसर जाव विहरइ	१।८।१४६	१।८।१४०
रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा	१।१४।५६	१।१४।५६
रिउव्वेय जाव परिणिट्ठिया	१।८।१३६	ओ० सू० ६७
रुट्ठा जाव मिसिमिसेमाणी	१।२।५७	१।१।१६१
रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा	१।१६।२००	१।८।६०
रूवेण य जाव लावण्णेण	१।१६।१६०	१।८।३८
रूवेण य जाव सरीरा	१।१४।११	१।८।६०
रोयमाणा य जाव अम्मापिऊण	१।१८।१३	१।१८।६
रोयमाणि जाव नावयक्खसि	१।६।४०	१।६।४०
रोयमाणे जाव विलवमाणे	१।२।३४	१।२।२६
रोयमाणे जाव विलवमाणे	१।६।४७	१।६।४०
लद्धमईए जाव अमूढदिसाभाए	१।१७।१३	१।१७।१२
लवण जाव ओगाहित्तए	१।६।६	१।६।४
लवण जाव ओगाहेह	१।६।५	१।६।४
लवणसमुद्दे जाव एडेमि	१।६।२०	१।६।१६
लोइयाइं जाव विगयसोए	१।१८।५७	१।६।४८
वंदामो जाव पज्जुवासामो	१।१३।३८	ओ० सू० ५२
वंदित्तए जाव पज्जवासित्तए	२।१।१२	राय० सू० ६ वृत्ति
वण्णहेउं वा जाव आहारेइ	१।१८।४८	१।१८।६१
वण्णेणं जाव अहिए	१।१०।४	१।१०।२
वण्णेणं जाव फासेणं	१।१२।३	१।१२।१२
वत्थ जाव पडिविसज्जेइ	१।१४।१६	१।८।१६०
वत्थ जाव सम्माणेत्ता	१।१६।५४	१।७।६
वत्थस्स जाव सुद्धेणं	१।५।६१	१।५।६१
वत्थे जाव तिसंझं	१।७।३३	१।७।६
वयासी जाव के अन्ने आहारे जाव पव्वयामि	१।१२।४५	१।५।६०
वयासी जाव तुसिणीए	१।१६।१६,१७	१।१६।१४,१५
वरतरुणी जाव सुरूवा	१।१।१३७	१।१।१३४
वरोवेह जाव आभागी	१।१८।५३	१।१८।५२
वाइय जाव रवेणं	१।८।२०२	१।१।११८
वाणियगाणं जाव परियणा	१।८।६७	१।८।६६
वाबाहं वा जाव छविच्छेयं	१।४।२०	१।४।११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वायणाए जाव धम्माणुओगचिंताए	१।१।१८६	१।१।१५३
वाराओ तं चेव जाव नियघरं	१।६।४	१।६।४
वावीसु य जाव विहरेज्जाह	१।६।२०	१।६।२०
वासाइं जाव देंति	१।२।१२	१।२।१२
वासुदेवपामोक्खे जाव उवागए	१।१६।१७७	१।१६।१७६
वासुदेवे धणुं परामुसइ वेढो	१।१६।२५८	वृत्ति
वासे जाव असीइं च सयसहस्सा दलइत्तए	१।८।१६४	१।८।१६४
विउला पगाढा जाव दुरहियासा	१।१६।४०	१।१।१६२
विगोवइत्ता जाव पव्वइए	१।१६।२६	ओ० सू० ५२
विजया जाव अवक्कमामो	१।२।४७	१।२।४४
विणिम्मुयमाणी २ एवं	१।५।३३	१।१।१४८
वेज्जा य जाव कुसलपुत्ता	१।१३।३०	१।१३।२६
सइं वा जाव अलभमाणा	१।६।२२,२४	१।६।२१
सइं वा जाव जेणेव	१।६।२३	१।६।२१
संकामेत्ता जाव महत्थं पाहुडं	१।८।८४	१।८।८१
संकिए जाव कलुससमावण्णे	१।३।२४	१।३।२१
संगयगयहसिय०	१।३।८	१।१।१३४
संचाएइ जाव विहरित्तए	१।५ ११८	१।५।११७
संचाएंति० करेत्तए ताहे दोच्चं पि अवक्कमंति	१।४।१४,१५	१।४।११,१२
संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ	१।८।८२	१।८।८१
संता जाव भावा	१।१२।३२	१।१२।३१
संताणं जाव सव्वभूयाणं	१।१२।२६	१।१२।१६
संते जाव निविण्णे	१।८।७६	१।४।१२
संते जाव भावे	१।१२।२६	१।१२।१६
संपरिवुडे एवं जाव विहरइ	१।८।१४७	१।१६।१७८
संभग्गं जाव पासित्ता	१।१६।२६३	१।१६।२६२
संभग्गं जाव सण्णिवइया	१।१६।२७८	१।१६।२६२
संभग्गं तोरण जाव पासइ	१।१६।२७८	१।१६।२६२
संसारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए	१।१४।५३	१।१।१४५
संसारभउव्विग्गे जाव पव्वयामि	१।५।८६	१।१।१४५
सकोरेंट जाव सेयवर०	१।८।५७	१।१।६६
सकोरेंटमल्लदाम जाव सेयवरचामराहिं महया	१।८।१६१	१।८।५७
सकोरेंट० सेयचामर हयगयरहमहया- भडचडगरेण जाव परिक्खित्ता	१।१६।१५३	१।८।५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सकोरेंट हयगय	१।१६।१५७	१।८।५७
सक्का जाव तन्नत्थ	१।५।२५	१।५।२४
सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं	१।८।२०३	१।८।७६
सगज्जिया जाव पाउससिरी	१।१।६४	१।१।५६
सज्जइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ	१।१५।१६	१।३।२४
सण्णद्ध०	१।१६।२४८	१।२।३२
सण्णद्ध जाव गहिया	१।१६।१३४;१।१८।३५	१।२।३२
सण्णद्ध जाव पहरणा	१।१६।२५१	१।२।३२
सण्णद्धबद्ध जाव गहियाउह०	१।१६।२३६	१।२।३२
सत्तट्ठ जाव उप्पयइ	१।६।३७	१।६।३६
सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं	१।८।७७	१।८।७३
सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु		
जंबू जाव चत्तारि	२।७।१,२	२।२।१,२
सत्तुस्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स	१।१।६	ओ० सू० ८२
सत्थवज्झा जाव कालमासे	१।१६।३१	१।१६।३१
सद्द जाव गंधाणं	४१।१७।२	१।१७।२२
सद्दफरिसरसरूवगंधे जाव भुंजमाणे	१।५।६	ओ० सू० १५
सद्दहंति जाव रोएंति	१।१५।१३	१।१।१०१
सद्दावेइ जाव जेणेव	१।८।६६,१००	१।८।६२,६३
सद्दावेइ जाव तं	१।७।१०	१।७।६,७,६
सद्दावेइ जाव तहेव पहारेत्थ	१।८।११२,११३	१।८।६६,१००
सद्दावेइ जाव पहारेत्थ	१।८।१५५,१५६	१।८।६६,१००
सद्दावेह जाव सद्दावेंति	१।१।१३६	१।१।१३८
सद्देणं जाव अम्हे	१।३।१६	१।३।१८
समणस्स जाव पव्वइत्तए	१।१।१०७	१।१।१०४
समणस्स जाव पव्वइस्ससि	१।१।१०८,११२	१।१।१०६
समणाउसो जाव पंच	१।७।३५,४३	१।७।२७
समणाउसो जाव पव्वइए	१।१०।५;१।१८।४८;१।१६।४२,४७	१।३।२४
समणाउसो जाव माणुस्सए	१।६।५३	१।६।४४
समणाणं जाव पमत्ताणं	१।५।११८	१।५।११७
समणाणं जाव वीईवइस्सइ	१।३।३४	१।२।७६
समणाणं जाव साविआण	१।१७।३६	१।२।७६
समणाण य जाव परिवेसिज्जइ	१।८।२००	१।८।१६६,१६७
समत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरि०	१।१६।१४०	ओ० सू० ६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाणा जाव चिट्ठंति	१।१५।१०	१।१५।१९
समाणी जाव विहरित्तए	१।२।१७	१।२।१७
समोवइए जाव निसीइत्ता	१।१६।२२७,२२८	१।१६।१९७,१९८
समोसरणं	१।५।८५	१।१।४
सम्मज्जिओवलित्तं जाव सुगंधवरगंधियं	१।१।३३	१।१।२२
सम्मज्जिओवलित्तं सुगंध जाव कलियं	१।३।९	१।१।२२
सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ	१।१६।३००	१।१४।१६
सयमेव० आयार जाव धम्ममाइक्खइ	१।१।१५०	१।१।१४९
सरिसगं जाव गुणोववेयं	१।८।१२०	१।८।४१
सरिसियाओ जाव समणस्स पव्वइस्ससि	१।१।१०९	१।१।१०८
सव्वओ जाव करेमाणा	१।१६।२३	१।१६।२३
सव्वं तं चेव आभरणं	१।५।३०-३२	१।१।१४५-१४७
सव्वज्जुईए जाव निग्घोसनाइयरवेणं	१।१।३३	ओ० सू० ६७
सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुराचिंतए	१।१४।५६	१।१४।५६;१।१।१६
सहइ जाव अहियासेइ	१।११।३	१।११।५
सहजायया जाव समेच्चा	१।८।१०,११	१।३।६,७
सहियाणं जाव पुव्वरत्ता०	१।५।११८	१।३।७
साइमं जाव परिभाएमाणी	१।१६।९३	१।१६।९२
सामदंड०	१।८।४५;१।१४।४	१।१।१६
सालइएणं जाव नेहावगाढेणं	१।१६।२५,२६	१।१६।८
सालइयं जाव आहारेसि	१।१६।१६	१।१६।१६
सालइयं जाव गोवेइ	१।१६।८	१।१६।८
सालइयं जाव नेहावगाढं	१।१६।१६;१९,२०	१।१६।८
सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स	१।१६।२२	१।१६।८
सालइयस्स जाव एगंमि	१।१६।१९	१।१६।१६
साहरह जाव ओलयंति	१।८।९२	१।८।४८
सिंगारा जाव कुसला	१।१।१३६	१।१।१३४
सिंगारागारचारूवेसाओ जाव कुसलाओ	१।१।१३५	१।१।१३४
सिंघाडग०	१।५।५३	१।१।३३
सिंघाडग जाव पहेसु	१।३।३३;१।१३।२९;१।१६।१५३;१।१८।१६	१।१।३३
सिंघाडग जाव बहुजणो	१।७।४१;१।८।२००;१।१३।२६	१।५।५३
सिंघाडग जाव महया	१।१।९५	ओ० सू० ५२
सिक्खावइए जाव पडिवण्ण	१।१३।३६	उवा० १।४५
सिज्झिहिइ जाव मंतं	१।१५।२१	१।१।२१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाण०	१।१६।४६	१।१।२१२
सिद्धे जाव प्पहीणे	१।५।८४	ठाणं १।२४६
सीलव्वय जाव न परिच्चयसि	१।८।७४	१।८।७४
सीलव्व तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए	१।८।७७,७८	१।८।७४,७५
सीहनाय जाव रवेणं	१।८।६७	ओ०सू० ५२
सीहनाय जाव समुद्दरवभूयं	१।१८।३५	१।८।६७
सुइं वा०	१।६।३७	१।२।२६
सुइं वा जाव अलभमाणे	१।१६।२१५	१।१६।२१२
सुइं वा जाव लभामि	१।१६।२२१	१।१६।२१२
सुई वा जाव उवलद्धा	१।१६।२२६	१।१६।२१२
सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे	१।५।८	ओ०सू० १४३
सुभरूवत्ताए	१।१५।१३	१।१५।११
सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरइ	१।८।२६	१।१।३२
सुमिणा जाव भुज्जो २ अणुवूहति	१।१।३१	१।१।२६
सुरं च जाव पसन्नं	१।१८।३३	१।१६।१४६
सुरट्ठाजणवए जाव विहरइ	१।१६।३१६	१।१६।३१८
सुरूवा जाव वामहत्थेणं	१।१६।१६३	वृत्ति
सूमालं निव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं	१।१६।३०५,३०६	१।१६।३३,३४
सूमालिया जाव गए	१।१६।८७	१।१६।६२
से धम्मे अभिरुइए तए णं देवा पव्वइत्तए	१।१६।१३	१।१।१०४
सेयवर हयगय महया भडचडगरपहकरेणं	१।१६।२३७	१।८।५७
सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ	१।१६।८१-८६	१।१६।५६-६१
सोणियासवस्स जाव अवस्स०	१।१८।६१	१।१।१०६
सोणियासवस्स जाव विद्धंसणधम्मस्स	१।१८।४८	१।१।१०६
हए जाव पडिसेहिए	१।१६।२५७	१।८।१६५
हट्ठ जाव हियया	२।१।२०,२१,२४,२५	१।१।१६
हट्ठतुट्ठ जाव पच्चप्पिणंति	१।१।२३	१।१।१६,२२
हट्ठतुट्ठ जाव मत्थए	१।५।१३	१।१।२६
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	१।१।२०;१।१६।१३५	१।१।१६
हत्थाओ जाव पडिनिज्जाएज्जासि	१।७।६	१।७।६
हत्थिखंध जाव परिवुडे	१।१६।१४६	१।१६।१४६
हत्थिखंधवरगए जाव सेयवरचामराहिं	१।८।१६३	१।८।५७
हत्थिणाउरे जाव सरीरा	१।१६।२०३	१।१६।२००
हत्थी जाव छुहाए	१।१।१८५	१।१।१५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हत्थीहि य जाव कलभियाहि	१।१।१६८	१।१।१५७
हत्थीहि य जाव संपरिवुडे	१।१।१५८	१।१।१५७
हयगय०	१।१६।२४८	१।८।५७
हयगय जाव पच्चप्पिणंति	१।१६।१३९	ओ०सू० ५६
हयगय जाव परिवुडा	१।१६।१५६	१।८।५७
हयगय जाव रवेणं	१।१।६९	१।१।६७
हयगय जाव हत्थिणाउराओ	१।१६।३०३	१।८।५७
हयगय संपरिवुडे	१।१६।१७४	१।८।५७
हयगया जाव अप्पेगइया	१।१६।१३८	१।५।१५
हय जाव सेणं	१।८।१६२	१।८।५७
हयमहिय जाव नो पडिसेहिए	१।१६।२८५	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहिए	१।८।१६६;१।१६।२५९	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहित्ता	१।१६।२८९	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहिया	१।१८।४२	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहेइ	१।१८।२४	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहेंति	१।१८।४१	१।८।१६५
हरिसवस०	१।१।१९१	वृत्ति
हियए जाव पडिसुणेइ	१।१।१२६	ओ०सू० ५६
हियाए जाव आणुगामियत्ताए	१।१३।३८	ओ०सू० ५२
हिरण्णं जाव वइरं	१।१७।१६	१।१७।१६
हिरण्णागरे य जाव बहवे	१।१७।१८	१।१७।१४
हीलणिज्जे०	१।४।१८	१।३।२४
हीलणिज्जे संसारो भाणियव्वो	१।५।१२५	१।३।२४
हीलिज्जमाणीए जाव निवारिज्जमाणीए	१।१६।११८	१।६।११७
हीलेंति जाव परिभवंति	१।१६।११७	१।३।२४
होत्था जाव सेणियस्स रण्णो		
ट्ठा जाव विहरइ	१।१।१७	वृत्ति

उवासगदसाओ

अंतलिक्खपडिवण्णे एवं वयासी	७।१७	७।१०
अंतियं जाव अंसि	५।२,२१	३।२०,२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अग्गिमित्ताए वा जाव विहरइ	७।२६	७।२६
अज्ज जाव ववरोविज्जसि	३।४४	२।२२
अज्झवसाणेणं जाव खओवसमेणं	८।३७	१।६६
अट्ठेहि य जाव वागरणेहि	७।४८	६।२८
अट्ठेहि य जाव निप्पट्ठ०	६।२८	६।२८
अड्ढे चत्तारि	९।३,४;१०।३,४	२।३,४
अड्ढे जहा आणंदो नवरं अट्ठहिरण्णको-डीओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ अट्ठहि वड्ढि अट्ठहि सकंसाओ पवि अट्ठवया दस गो साहस्सिएणं वएणं	८।३-५	१।११-१३
अड्ढे जाव अपरिभूए	१।११	ओ०सू० १४१
अणारिए जहा चुलणीपिया तहा चिंतेइ जाव कणीयसं जाव आइंचइ	५।४२	३।४२
अणारिए जाव समाचरति	३।४४;४।४२	३।४२
अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं	६।२१,२२,२३;७।२३,२४	६।२०
अण्णदा कदाइ बहिया जाव विहरइ	१।५४	ना० १।१।१९६
अपच्छिम जाव अणवकंखमाणे	१।७२	१।६५
अपच्छिम जाव भत्तपाण	८।४६	१।६५
अपच्छिम जाव झूसियस्स	८।४६	१।६५
अपच्छिम जाव वागरित्तए	८।४६	८।४६
अब्भणुण्णाए तं चेव सव्वं कहेइ जाव	१।७९	१।७१-७८
अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे	१।५५	ओ० सू० १६२
अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ	८।१६	ओ० सू० १६२
अभिगयजीवेजी णं जाव अणइक्कमणिज्जेणं	१।३१	ओ० सू० १६२
अभीए जाव विहरइ	२।२९,३५; ३।२२	२।२३
अभीयं जाव धम्मज्झाणोवगयं	२।२४	२।२३
अभीयं जाव पासइ	२।४०;३।२३	२।२४
अभीयं जाव विहरमाणं	२।२८,३०	२।२४
अवहरइ वा जाव परिट्ठवेइ	७।२६	७।२५
अस्सिणी भारिया । सामी सामासढे जहा आणंदो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ । सामी बहिया विहरइ	९।५-१५	२।५-१५
असोगवणिया जाव विहरसि	७।१७	७।८
अहीण जाव सुरूवा	१।१४	ओ० सू० १५
अहीण जाव सुरूवाओ	८।६	ओ० सू० १५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आओसेसि वा जाव ववरोवेसि	७।२६	७।२५
आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव		
उवागच्छइ, २ त्ता जहा आणंदो जाव समणस्स	२।१६	१।६०
आलोइज्जइ जाव तवोकम्मं	१।७८	ठा० ३।३४८
आलोइज्जइ जाव पडिवज्जिज्जइ	१।७८	वृत्ति अ० ३
आलोएइ जाव जहारिहं	८।५०	वृत्ति अ० ३
आलोएइ जाव पडिवज्जइ	३।४६	वृत्ति अ० ३
आलोएयव्वं जाव पडिवज्जेयव्वं	१।८०	वृत्ति अ० ३
आलोएह जाव पडिवज्जेह	१।७८	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव अहारिहं	८।४६	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव तवोकम्मं	१।७७	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव पडिवज्जाहि	१।१८;३।४५;८।४६	वृत्ति अ० ३
इट्ठे जाव पंचविहे	१।१४	ओ० सू० १५
इड्ढी जाव अभिसमण्णागए	२।४०	२।४०
इमेणं जाव धमणिसंतए	१।६५	१।६४
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	३।४२	१।७३
उक्खेवो	३।१;४।१;५।१;६।१;७।१;८।१;९।१;१०।१	२।१
उज्जलं जाव अहियासेइ	२।३३,३९;३।२६	वृत्ति
उज्जलं जाव अहियासेमि	३।४४	वृत्ति
उज्जलं जाव दुरहियासं	२।२७	वृत्ति
उट्ठाणे इ वा जाव अणियता	६।२१,२३	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव नियता	६।२१,२३;७।२६	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे	६।२०,२३;७।२६	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव पुरिसक्कार०	७।२४	६।२०
उट्ठाणेणं जाव परक्कमेणं	६।२३	६।२०
उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कारपरक्कमेणं	६।२१;७।२३	६।२०
उद्धाविए जहा चुलणीपिया तहेव सव्वं		
भाणियव्वं । नवरं अग्गिमित्ता भारिया		
कोलाहलं सुणित्ता भणइ । सेसं जहा		
चुलणीपिया वत्तव्वया सव्वा नवरं अरुणच्चाए		
विमाणे उववातो जाव महाविदेहे	७।७८-८८	३।४२-५२
उद्धाविए जहा सुरादेवो । तहेव भारिया		
पुच्छइ, तहेव कहेइ । सेसं जहा चुलणीपियस्स		
जाव सोहम्मे	५।४२-५२	३।४२-५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उप्पण्णणाणदंसणधरे जाव तच्चकम्मसंपया	७।११,१८	७।१०
उप्पण्णनाणदंसणधरे जाव महियपूइए जाव तच्च०	७।४५	७।१०
उरालाइं जाव भुंजमाणे	८।२७	८।१६
उरालाइं जाव विहरित्तए	८।१८	८।१८
उरालेणं जहा कामदेवे जाव सोहम्मे	३।५०-५२	२।५३-५५
उरालेणं जाव किसे	८।३५	१।६४
उरालेणं तवोकम्मेणं जहा आणंदो तहेव अपच्छिम०	८।३६	१।६५
एक्कारसमं जाव आराहेइ	१।६३	१।६२
एवं एक्कारस उवासगपडिमाओ तहेव जाव सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे जाव अंतं काहिइ	६।३५-४१	२।५०-५६
एवं तहेव उच्चारेयव्वं सव्वं जाव कणीयसं जाव आइंचइ। अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि	३।४४	३।२७-३८
एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं च	१।६६;८।३७	१।६६
एवं देवो दोच्चं पि तच्चं पि भणइ जाव वत्तरोविज्जसि	४।४१	४।३६
एवं मज्झिमयं, कणीयसं, एक्केक्के पंच सोल्लया। तहेव करेइ, जहा चुलणी-पियस्स, नवरं एक्केक्के पंच सोल्लया	४।२२-३८	३।२२-३८
एवं वण्णगरहिया तिण्णि वि उवसग्गा तहेव पडिउच्चारेयव्वा जाव देवो पडिगओ	२।४५	२।२४-४०
ओहयमणसंकप्पा जाव झियाइ	८।४२	रा० सू० ७६५
कज्जेसु य आपुच्छउ	१।५६	१।१३
कदाइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता तहा पोसहसालाए जाव धम्मपण्णत्तिं	६।३३,३४	२।१८,१६
करएहि य जाव उट्टियाहि	७।७	७।७
करगा य जाव उट्टियाओ	७।२२	७।७
करेइ। सेसं जहा चुलणीपियस्स तहा भद्दा भणइ। एवं सेसं जहा चुलणीपियस्स निरवसेसं जाव सोहम्मे	४।४५-५२	३।४५-५२
कल्लं जाव जलंते	१।५७;७।१२	ओ० सू० २२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कल्लं विउलं	१।५७	१।५७
कामदेवा जाव जीवियाओ	२।४५	२।२२
कामदेवा तहेव जाव सो वि विहरइ	२।३०,३१	२।२२,२३
कामदेवे गाहावई । भद्दा भारिया । छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं	२।३-६	१।११-१४
कासे जाव कोढे	४।३६	वृत्ति
कुंडकोलिए गाहावई । पूसा भारिया छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं	६।३-६	२।३-६
कुडुंब जाव इमेयारूवे	८।१८	१।६५
कुडुंबस्स जाव आधारे	१।५७	१।१३
केणट्ठेणं एवं	७।४६	७।४८
कोडुंबिय पुरिसा जाव पच्चप्पिणंति	७।३४	१।४८
गिहाओ जाव सोणिएण	३।४२	३।४२
गिहाओ तहेव जाव आइंचइ	३।४२	३।४२
गिहाओ तहेव जाव कणीयसं जाव आइंचइ	३।४४	३।४२
गिहिणो जाव समुप्पज्जइ	१।७६,७७	१।७६
गुण जाव भावेमाणस्स	६।१८	२।१८
गुरु जाव ववरोविज्जसि	३।४४	३।४१
घाएत्ता जहा कयं तया विचिंतेइ जाव गायं	३।४२	३।२१
घाएत्ता जहा जेट्ठपुत्तं तहेव भणइ, तहेव करेइ । एवं कणीयंसि पि जाव अहियासेइ चत्तारि पलिओवमाइं ठिई । सेसं तहेव जाव सिज्झिहिति	३।२७-३८ ५।५२	३।२१-२६ २।५५,५६
चुल्लसयए गाहावई अड्ढे जाव छ हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं । बहुला भारिया	५।३-६	४।३-६
चेइए जहा संखे जाव पज्जुवासइ	२।४३	भ० १२।१
जहा आणंदो तहा निग्गच्छइ तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ	८।१०-१५	१।१६-२४
जाए जाव विहरइ	६।१६,१७	२।१६,१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाया जाव पडिलाभेमाणी	१।५६	१।५५
जाव पज्जुवासइ	७।१४	१।१६
जुगवं जाव निउणसिप्पोवगए	७।५०	राय० सू० १२
जेट्ठपुत्तं जाव कणीयसं जाव आइंचइ	४।४२	३।४२
ठावेत्ता जाव विहरित्तए।	१।५७	१।५७
णमंसइ जाव पज्जुवासइ	१।२	ओ० सू० ५२
णमंसित्ता जाव पज्जुवासइ	७।१५	ओ० सू० ५२
णाइदूरे जाव पंजलियडा	७।३५	१।२०
ण्हाए जाव अप्पमहग्घा०	१।५७	ओ० सू० २०
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	७।१५	ओ० सू० २०
ण्हाए सुद्धप्पावेस अप्प०	१।२०	ओ० सू० २०
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	७।३५	ओ० सू० २०
तं मित्त जाव विउलेणं पुप्फ ५ सक्कारेइ सम्माणेइ, २ त्ता तस्सेव मित्त जाव पुरओ	१।५७	१।५७
तच्चं पि तहेव भणइ जाव ववरोविज्जसि	५।४१	५।४०
तत्थ णं बाणारसीए चुलणीपिया नामं गाहावई परिवसई अड्ढे सामा भारिया अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ वड्ढिप० अट्ठपवित्थरप०। अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं जहा आणंदो		
ईसर जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था	३।३-६	२।३-६
तव जाव कणीयसं	३।४५	३।४४
तिक्खुत्तो जाव वंदइ	७।३५	१।२०
तीसे य जाव धम्मकहा सम्मत्ता	२।४४	२।११
तुमं जाव ववरोविज्जसि	३।४४	२।२२
दुहट्ठ जाव ववरोविज्जसि	७।७५	२।२२
देवराया जाव सक्कंसि	२।४०	वृत्ति
देवाणुप्पिए समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे तं	७।३१	१।४५
देवाणुप्पिया जाव महागोवे	७।४६	७।४४
धम्मायरिएणं जाव महावीरेणं	७।५०	७।५०
धम्मायरियस्स जाव महावीरस्स	७।५१	७।५०
नाममुद्दगं च तहेव जाव पडिगए	६।२८	६।२०-२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निक्खेवो	२।५७;३।५३;४।५३;५।५४; ६।४१;७।८६;८।५४;६।२७	१।८५
निक्खेवो पढमस्स	१।८५	वृत्ति
नीणेमि एवं जहा चुलणीपिय, नवरं एक्केक्के सत्त मंससोल्लया जाव कणीयसं जाव आइंचामि	५।२१-३७	३।२१-३७
नीलुप्पल एवं जहा चुलणीपियस्स तहेव देवो उवसग्गं करेइ जाव कणीयसं धाएइ, २ त्ता जाव आइंचइ	७।५७-७३	३।२१-३८
नीलुप्पल जाव असि	२।४५;३।२१,४४;४२१	२।२२
नीलुप्पल जाव असिणा	२।२२,२६	२।२२
पंचजोयणसयाइं जाव लोलुयच्चुयं	१।७६	१।६६
पढमं अहासुत्तं जाव एक्कारस वि	८।३३,३४	१।६२,६३
पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं ४ जहा आणंदो जाव एक्कारस वि	३।४८,४६	१।६२-६३
पाउणित्ता जाव सोहम्मे	१।५३	१।८४
पाडिहारिएणं जाव उवनिमंतिस्सामि	७।११	१।४५
पावयणं जाव जहेयं	७।३७	१।२३
पीढ जाव ओगिण्हित्ता	७।५२	१।४५
पीढ जाव संथारएणं	७।५१	१।४५
पीढ जाव संथारयं	७।१८	१।४५
पीढ-फलग जाव उवनिमंतेत्तए	७।१८	१।४५
पुण्णे कयत्थे कयलक्खणे सुलद्धे	२।४०	२।४०
पुत्तं जाव आइंचइ	७।७८	३।४२
पुरिसे तहेव कहेइ जहा चुलणीपिया धन्ना वि पडिभणइ जाव कणीयसं	४।४४	३।४४
पुव्वरत्ता जाव धम्मजागरियं	१।६५	१।५७
पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोसहसालाए समणस्स	७।५४	२।१८
पोसहिए०	१।६०	ना० १।१।५३
फग्गुणी भारिया। सामी समोसढे जहा आणंदो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता पोसहसालाए। समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहरइ । नवरं निरुवसग्गो एक्कारस्स वि		
उवासगपडिमाओ तहेव भाणियव्वाओ एवं		
कामदेवगमेणं नेयव्वं जाव सोहम्मे	१०।५-२५	२।५-१६,५०-५५
फलग जाव ओगिण्हित्ता	७।५१	१।४५
फलग जाव संथारयं	७।१६	१।४५
बंभयारी जाव दब्भसंथारोवगए	२।४०	१।६०
बंभयारी समणस्स	३।१६	१।६०
बहूहिं जाव भावेत्ता	२।५५	१।८४
बहूणं राईसर जहा चिंतियं जाव विहरित्तए	१।५७	१।५७
बहूहिं जाव भावेमाणस्स	६।३३	२।१८
भवित्ता जाव अहं	७।३७	१।२३
भारिया जाव सम०	७।७८	७।७५
भोगा जाव पव्वइया	७।३७	ओ० सू० ५२
मंसमुच्छिया जाव अज्झोववण्णा	८।२०	वृत्ति
मत्ता जाव उत्तरिज्जयं	८।३८	८।२७
मत्ता जाव विकड्डमाणी	८।४६	८।२७
महइ जाव धम्मकहा समत्ता	७।१६	२।११
महावीरे जाव विहरइ	२।४२	१।१७
महावीरे जाव विहरइ	२।४३;७।१५	१।२०
महावीरे जाव समोसरिए	१।१७;७।१२	ओ० सू० १६-२२
महासतयं तहेव भणइ जाव दोच्चं पि		
तच्चं पि एवं वयासी—हंभो तहेव	८।३८-४०	८।२७-२६
मारणंतिय जाव कालं	१।६५	१।६५
मित्त जाव जेट्ठपुत्तं	१।५७	१।५७
मित्त जाव पुरओ	१।५६	१।५७
मुंडे जाव पव्वइत्तए	१।२३,५३	ओ० सू० ५२
मोहुम्माय जाव एवं वयासी तहेव जाव		
दोच्चं पि	८।४६	८।२७-२६
राईसर जाव सत्थवाहाणं	१।१३	१।२३
राईसर जाव सयस्स	१।५७	१।१३
लद्धट्ठे जहा कामदेवो तहा निग्गच्छइ		
जाव पज्जुवासइ । धम्मकहा ।	६।२६,२७	२।४३,४४
वंदणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे	७।१०	ओ० सू० २
वंदामि जाव पज्जुवासामि	७।१५	ओ० सू० ५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वदाहि जाव पज्जुवासाहि	१।४५;७।३१	ओ० सू० ५२
वंदिस्सामि जाव पज्जुवासिस्सामि	७।११	ओ० सू० ५२
वंदेज्जाहि जाव पज्जुवासेज्जाहि	७।१०	ओ० सू० ५२
वयासी जाव उववज्जिहिसि	८।४६	८।४१
वाताहतं वा जाव परिट्ठवेइ	७।२६	७।२५
विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे	७।४७,४९	७।४६
विहरइ । तए णं	२।५१-५४	१।६२-६५
वीइक्कंताइं तहेव जेट्ठपुत्तं ठवेइ ।		
धम्मपण्णत्ति । वीसं वासाइं परियागं नाणत्त		
अरुणगवे विमाणे उववाओ महाविदेहे		
वासे सिज्झिहिइ	९।१८-२६	२।१८,१९,५०-५६
वीइक्कंता एवं तहेव जेट्ठपुत्तं ठवेइ		
जाव पोसहसालाए धम्मपण्णत्ति	८।२५,२६	२।१८,१९
संचाएइ जाव सणियं	२।३४	२।२८
संताणं जाव भावाणं	१।७८	१।७८
संतेहिं जाव वागरित्तए	८।४६	८।४६
संतेहिं जाव वागरिया	८।४९	८।४९
सखिखिणियाइं जाव परिहिए	७।१०	२।४०
सद्दहामि णं जाव से जहेयं	१।२३	रा० सू० ६९५
सद्दालपुत्ता तं चेव सव्वं जाव पज्जुवासिस्सामि	७।१७	७।१०,११
समएणं अज्जसुहम्मे समोसरिए जाव		
जंबू पज्जुवासमाणे	१।३-५	रा० सू० ६८६; ओ० सू० ८२,८३
समणे जाव विहरइ तं महाफलं		
गच्छामि णं जाव पज्जुवासामि	१।२०	ओ० सू० ५२
समणोवासए जाव अहियासेइ	५।३८	२।२७
समणोवासए जाव विहरइ	४।४०;५।३८	३।२२
समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया		
जाव न भंजेसि	३।४४;७।७५	२।२२
समणोवासया ! जहा कामदेवो जाव न भंजेसि	३।२१	२।२२
समणोवासया ! जाव न भंजेसि	२।३४;५।२१,३९	२।२२
समणोवासया ! तं चेव भणइ	७।७७	७।७४
समणोवासया ! तं चेव भणइ सो		
जाव विहरइ	३।२३,२४	३।२१,२२
समणोवासया ! तहेव जाव गायं आइंचइ	३।४४	३।२३-२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणोवासया ! तहेव जाव ववरोविज्जसि	३।४१	३।३९
समणोवासया ! तहेव भणइ जाव न भंजेसि	२।२८	२।२२
समुप्पज्जित्था एवं जहा चुलणीपिया		
तहेव चिंतेइ	७।७८	३।४२
समोसरणं जहा आणंदो तहा निग्गओ।		
तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ।		
साचेव वत्तव्वया जाव जेट्ठपुत्तं	२।७-१९	१।१७-२३,५४-६०
सहइ जाव अहियासेइ	२।२७	वृत्ति
सहंति जाव अहियासेंति	२।४६	२।२७
सहित्तए जाव अहियासित्तए	२।४६	२।२७
साइमं जहा पूरणो जाव जेट्ठपुत्तं	१।५७	भ० ३।१०२
सामी समोसढे। चुलणीपिया वि जहा आणंदो		
तहा निग्गओ। तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ।		
गोयम पुच्छा। तहेव सेसं जहा कामदेवस्स		
जाव पोसहसालाए	३।७-१९	२।७-१९
सामी समोसढे जहा आणंदो तहा गिहिधम्मं		
पडिवज्जइ। सेसं जहा कामदेवो जाव		
धम्मपण्णत्ति	५।७-१९	२।७-१९
सामी समोसढे जहा कामदेवो तहा		
सावयधम्मं पडिवज्जइ। सा सव्वेव		
वत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ	६।७-१७	२।७-१७
साहस्सीणं जाव अण्णेसिं	२।४०	वृत्ति
सिंघाडग जाव पहेसु	५।३९	ओ० सू० ५२
सिंघाडग जाव विप्पइरित्तए	५।४२	५।३९
सीलव्वय-गुणेहिं जाव भावेत्ता	८।५३	१।८४
सील जाव भावेमाणस्स	७।५४	१।५७
सीलव्वय जाव भावेमाणस्स	८।२५	१।५७
सीलाइं जाव न भंजेसि	४।२१	२।२२
सीलाइं जाव पोसहोववासाइं	२।२२	२।२२
सीलाइं वयाइं न छड्डेसि तो जीवियाओ	२।२४	२।२२
सुक्के जाव किसे	१।६४	भ० २।६४
सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घा	७।१५,३५	१।४९
सुरादेवे गाहावइ अड्ढे छ हिरण्णकोडीओ		
जाव छ व्वया दस गोसाहस्सिएणं वएणं		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स धन्नाभारिया । सामी समोसढो जहा आणंदो तहेव पडिवज्जइ गिहिधम्मं		
जहा कामदेवो जाव समणस्स	४।३-१६	१।११-१४;२।७-१६
सो वि दोच्चं पि तच्चं पि भणइ,		
कामदेवो वि जाव विहरइ	२।३६,३७	२।३४,३५
हंभो ! तं चेव भणइ सो वि तहेव		
जाव अणाढायमाणे	८।२६,३०	८।२७,२८
हट्ठतुट्ठ जाव एवं वयासी	१।२३	ओ० सू० ८०
हट्ठतुट्ठ जाव गिहिधम्मं	१।५१,५२	१।२३,२४
हट्ठतुट्ठ जाव समणं	२।४८	१।२३
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	१।७४;८।४८	१।२३
हट्ठतुट्ठ जाव हियए जहा आणंदो तहा गिहिधम्म पडिवज्जइ, नवरं एगा-हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता एगा-हिरण्णकोडी वड्ढिपउत्ता एगाहिरण्ण-कोडी पवित्थरपउत्ता एगे वए		
दसगोसाहस्सिएणं जाव समणं	७।३०,३१	१।२३,२४
हट्ठतुट्ठा कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव लहुकरण		
जाव पज्जुवासइ	१।४६-४६	ओ० सू० ८०; भ० ६।१४१-१४३; उवा० ७।३३
हट्ठतुट्ठा समणं	७।३७	१।५१
हणेसि वा जाव अकाले	७।२६	७।२५
हारविराइयवच्छं जाव दसदिसाओ	२।४०	ओ० सू० ४७
हेऊहि य जाव वागरणेहि	७।५०	६।२८

अंतगडदसाओ

अंतिए जाव पव्वइत्तए	३।७६	३।२०
अज्जा जाव इच्छामि	८।२०	८।७
अणगारे जाए जाव विहरइ	६।५२	ना० १।५।३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुत्तरे जाव केवल०	३।९२	वृत्ति
अतुरियं जाव अडंति	३।२३	भ० २।१०८
अपत्थिय जाव परिवज्जिए	३।८९	उवा० २।२२
अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए	३।१०२	३।८९
अरहओ मुंडे जाव पव्वाहि	३।७४	३।७०
अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	५।११	३।७६
अहासुत्तं जाव आराहिया	८।८	ठा० ७।१३
आघवणाहि०	६।९५	नाभ १।१।११४
आपुच्छामि देवाणुप्पियाणं	१।१९	ना० १।५।८७
आसुरुत्ते जाव सिद्धे	३।१०१	३।८९-९२
आहेवच्चं जाव विहरइ	१।१४	ना० १।५।६
इच्छामि णं जाव उवसंपज्जित्ता	३।१०१	३।८७,८८
ईसर जाव सत्थवाहाणं	१।१४	ना० १।५।६
उच्च जाव अडइ	६।७६	भ० २।१०८
उच्च जाव अडमाणं	६।५५	भ० २।१०९
उच्च जाव अडमाणा	३।२९,३०	३।२४
उच्च जाव अडमाणे	६।७८	२।२४
उच्च जाव अडामो	६।८०	३।२३
उच्च जाव पडिलाभेइ	३।२८,२९	३।२४,२५
उज्जाणे जाव पज्जुवासइ	३।६१	ना० १।१।९९
उज्जला जाव दुरहियासा	३।९०	ना० १।१।१६२
उत्तर०	६।५२	५।२६
उम्मुक्क जाव अणुप्पत्ते	३।५०	ना० १।१।२०
उरालेणं जाव धमणिसंतया	८।१३	भ० २।६४
उवागए जाव पडिदंसेइ	६।८७	६।५७
उवागच्छित्ता जाव वंदइ	३।९८	३।६१
ओहय जाव झियाइ	५।१७	३।४३
ओहय जाव झियायइ	३।४३	ना० १।१।३४
करयल०	५।२२;६।३५,४१	ना० १।१।२६
करेइ जहा गोयमसामी जाव अडइ	६।५४	भ० २।१०७,१०८
काएणं जाव दो वि पाए	३।८८	वृत्ति
कामा खेलासवा जाव विप्पजहियव्वा	३।७६	ना० १।१।१०९
कुमारस्स	१।१९	राय० सू० ६८८
चउत्थ जाव अप्पाणं	८।६	५।३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थ जाव भावेमाणी	८।३३	५।३१
चउत्थ जाव भावेमाणे	१।२१	५।३१
चउत्थस्स वग्गस्स निक्खेवओ	४।७	१।२५
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरंति	३।२१	३।२०
जइ उक्खेवओ अट्ठमस्स	३।१७	३।३
जइ छट्ठस्स उक्खेवओ नवरं सोलस	६।१,२	१।५,६
जइ णं भंते अट्ठमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव दस	८।१७,१८	१।५,६
जइ णं भंते तेरस	७।३	१।७
जइ णं भंते सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव तेरस	७।१,२	१।५,६
जइ तच्चस्स उक्खेवओ	३।१	१।५
जइ दस	८।१६	१।७
जइ दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ	२।१,२	१।५,६
जहा अभओ नवरं हरिणेगमेसिस्स अट्ठमभत्तं पगेण्हइ जाव अंजलिं	३।४७-४६	ना० १।१।५३-५८
जहा गोयम सामी तहा पडिदसेइ	६।५७	भ० २।११०
जहा गोयमो जाव इच्छामो	३।२२	भ० २।१०७
जावज्जीवाए जाव विहरइ	६।५३	६।५३
जाव संलेहणाकालं	८।३६	८।१५
ण्हाए जाव विभूसिए	३।४४	ओ० सू० ७०
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	३।३६	ओ० सू० २०
तं महा जहा गोयमे तहा	३।१३	१।१६,२०
तीसे य धम्मकहा	३।६२	राय० सू० ६६३
तीसे य धम्मकहा	६।५०,८८	ना० १।१।१००
देहं जाव किलंतं	३।६५	वृत्ति
धारिणी सीहं सुमिणे	३।११६	१।१७
नमंसामि जाव पज्जुवासामि	६।३५	ओ० सू० ५२
नयरीए जाव अडित्तए	३।२२	भ० २।१०७
नवमस्स उक्खेवओ	३।११२	३।३
निग्गया जाव पडिगया	१।२	ना० १।१।५
निक्खमणं जहा महब्बलस्स जाव तमाणाए तहा जाव संजमइ	३।७८-८५	भ०११।१६८;ना०१।१।११५-१५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेरइय जाव उववज्जंति	६।९४	६।९४
पउमावईए य धम्मकहा	५।८	राय०सू० ६९३
पव्वावेइ जाव संजमियव्वं	५।२८	ना० १।१।१५०
पारेइ जाव आराहिया	८।९	८।८
पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि	६।५१	ना० १।१।१०१
पुरिसं पाससि जाव अणुपवेसिए	३।१०४	३।९५
पोरिसीए जाव अडमाणा	३।३०	३।२२,२३
बहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव आघवित्तए	३।७७	ना० १।१।११४
बारवईए उच्च जाव पडिविसज्जेइ	३।२६,२७	३।२४,२५
भगवं जाव समोसढे विहरइ	६।३३	ना० १।१।९४
भूतं जाव पव्वइस्संति	५।१४	५।१२
भूतं वा जाव पव्वइस्संति	५।१३	५।१२
मालागारे जाव घाएमाणे	६।३६	६।२८
मासियाए संलेहणाए बारस वासाइं परियाए जाव सिद्धे	१।२४	ना० १।५।८४
मुंडा जाव पव्वइया	३।३०;५।११	३।२०
मुंडा जाव पव्वयामि	५।२१,२२	३।२०
मुंडे जाव पव्वइए	६।५३	३।२०
मुंडे जाव पव्वइत्तए	५।१९	३।२०
मुंडे जाव पव्वइस्सइ	३।५०	३।२०
रज्जे य जाव अंतेउरे	५।११	ना० १।१।१६
रूवेणं जाव लावण्णेणं	३।५७	३।६०
लहुकरणजाणपवरं जाव उवट्ठवेंति	३।३१	ना० १।१६।१३३
विण्णवणाहिं जाव परूवेत्तए	६।४५	६।४५
संजमेणं जाव भावेमाणे	६।८४	६।३३
संलेहणा जाव विहरित्तए	८।१४	८।१४
संलेहणाए जाव सिद्धे	३।१३	१।२४
समणेणं जाव छट्ठस्स	६।१०२	४।७
समाणा जाव अहासुहं	३।३०	३।२०
समोसढे सिरिवणे उज्जाणे अहा जाव विहरइ	३।१२	ना० १।५।१०
सरिसया जाव नलकूबरसमाणा	३।३०	३।१९
सरिसियाणं जाव बत्तीसाए	३।१०	ना० १।१।९०
सिंघाडग जाव उग्घोसेमाणा	५।१९	ना० १।५।२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिंघाडग जाव महापहपहेसु	६।२८	५।१९
सिद्धे जाव प्पहीणे	३।९२	वृत्ति
सिरिवणे विहरइ	६।७५	६।३३
सुद्धप्पावेसाइं जाव सरीरे	६।३९	ओ० सू० ५३
सोच्चा	१।१९	ना० १।१।९९
सोच्चा जं नवरं अम्मापियरो आपुच्छामि		
जहा मेहो महेलियावज्जं जाव वड्ढियकुले	३।६३-७३	ना० १।१।१०१-१०७;११०-११३
हट्ठ	६।५१	ना० १।१।१०१
हट्ठ जाव हियया	३।२५	ओ०सू०२०
हट्ठतुट्ठ जाव हियया	३।४२	३।२५

अणुत्तरोववाइयदसाओ

अंबगठिया इ वा एवामेव	३।४५	३।३१; वृत्ति
अमुच्छिए जाव अणज्झोववण्णे	३।२७	अं०६।५७
आयंबिलं नो अणायंबिलं जाव नावकंखति	३।२४	३।२२
इमासि जाव साहस्सीणं	३।५६	३।५५
इ वा जाव नो सोणियत्ताए	३।३३	३।३१
इ वा जाव सोणियत्ताए	३।३६	३।३१
उच्च जाव अडमाणे	३।२४	भ० २।१०९
उण्हे जाव चिट्ठइ	३।३५	३।३४
उरालेणं जहा खंदओ जाव सुहुय चिट्ठइ	३।३०	भ० २।६४
ऊरू जाव सोणियत्ताए	३।३५	३।३१
एवं जाव सोणियत्ताए	३।३४	३।३१
एवामेव०	३।३९-४४,४६,४७,४९,५०	३।३१
गोयमे जाव एवं	१।१०	भ० २।७१
चंदिम जाव नवय०	३।५९	१।८
जहा खंधओ तहा जाव हुयासणे	३।५२	भ०२।६४; ना०१।१।२०२
जहा जमाली तहा निग्गओ। नवरं पायचारेणं।		
जाव जं नवरं अम्मयं भद्दं सत्थवाहिं आपुच्छामि।		
तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए पव्वयामि।		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ। मुच्छिया। वुत्तपडिवुत्तया जहा महव्वले जाव जाहे नो संचाएइ जहा थावच्चापुत्तस्स जियसत्तुं आपुच्चइ। छत्तचामराओ। सयमेव जियसत्तू निक्खमणं करेति जहा थावच्चापुत्तस्स कण्हो जाव पव्वइए अणगारे जाए--इरियासमिए		
जाव गुत्तबंभयारी	३।११-२१	भ० ६।३३,११,११; ना० १।१,१।५
जाव उप्पिं पासा विहरइ	१।७	ना० १।१।६३
तरुणए जाव चिट्ठइ	३।५१	३।४३
तरुणिया एवामेव	३।४८	३।४३
विलमिव जाव आहारेइ	३।५७	३।२७
मुंडावली इ वा	३।३८	३।३१
मुंडे जाव पव्वइए	३।६६	३।२२
सजमेणं जाव विहरइ	३।६६	३।२७
संजमेणं जाव विहरामि	३।५७	३।२७
सुक्कं०	३।३७	३।३१
सुक्काओ जाव सोणियत्ताए	३।३२	३।३१
सुपुण्णे सुकयत्थे कयलक्खणे	३।५८	३।५८
सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए	१।८	ना० १।१।२११

पण्हावागरणाइं

अंतरप्पा जाव चरेज्ज	१०।१५	१०।१४
एवं जाव इमस्स	५।१०	५।१
एवं जाव चिरपरिगत०	३।२६	३।१
एवं जाव परियट्टंति	५।८	४।१३
पत्थणिज्जं एवं चिरपरि०	४।१५	४।१
रूसियव्वं जाव चरेज्ज	१०।१७	१०।१४
रूसियव्वं जाव न	१०।१५	१०।१४
सज्जियव्वं जाव न सइं	१०।१७	१०।१४
सज्जियव्वं जाव न संति	१०।१६	१०।१४
हीलियव्वं जाव पणिहिंदिए	१०।१६	१०।१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठमस्स उक्खेवओ	१।८।१,२	१।२।१,२
अट्ठि जाव महियगत्तं	१।४।२८	१।२।६४
अतुरिय जाव सोहेमाणे	१।१।२८	वृत्ति
अद्धहारं जाव पट्टं मउडं	१।६।८	वृत्ति
अब्भणुण्णाए जाव बिलमिव	१।७।७	अं० ६।५७
अम्मयाओ जाव सुलद्धे जाओ	१।२।२४	ना० १।१।३३
अवओडय जाव उग्घोसिज्जमाणं	१।३।१३	१।२।१४
अविणिज्जमाणंसि जाव भियामि	१।२।२६	१।२।२४
असिपत्तेहि य जाव कलंबचीरपत्तेहि	१।६।२३	१।६।१६
अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे	१।१।४७;१।३।१६	वृत्ति
अहम्मिए जाव लोहियपाणी	१।३।७	वृत्ति
अहम्मिए जाव साहस्सिए	१।१।७०	वृत्ति
अहापडिरूवं जाव विहरइ	१।१।२	ओ० सू० २२
अहिमडे इ वा जाव तओ वि अणिट्ठतराए चेव जाव गंधे	१।१।३६	ना० १।८।४२
अहीण जाव जुवराया	१।६।२	१।५।४
अहीण जाव सुरूवा	१।२।७	ओ० सू० १५
अहीण जाव सुरूवे	१।२।१०	ओ० सू० १४३
आसि जाव पच्चणुभवमाणे	१।२।१६	१।१।४२
आसी जाव विहरइ	१।३।१६	१।१।४२
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे	१।३।४१	१।२।६४
आसुरुत्ते जाव साहट्टु	१।६।३५	१।२।६४
आहेवच्चं जाव विहरइ	१।२।७;१।३।७	वृत्ति
इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति	१।१।१६	ना० १।१।६६
इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति	१।१।२०	ना० १।१।६७
इट्ठरूवे जाव सुरूवे	२।१।१५	२।१।१५
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।६।३४	१।१।४१
इरियासमिए जाव बंभयारी	१।१।७०	ओ० सू० २७
इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा	२।१।३१	ओ०सू० २१
उंबरदत्ते निच्छूढे जहा उज्झियए	१।७।३४	१।२।५६
उक्किट्ठि जाव करेमाणे	१।३।४३	१।३।२४
उक्किट्ठि जाव समुद्द०	१।३।२४	ओ०सू० ५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कोस नेरइएसु	१।३।६५	१।१।७०
उक्खित्त जाव सूले०	१।६।६	१।२।१४
उक्खेवओ नवमस्स	१।६।१,२	१।२।१,२
उक्खेवओ सत्तमस्स	१।७।१,२	१।२।१,२
उग्घोसिज्जमाणं जाव चिता	१।४।१२,१३	१।२।१४,१५
उज्जला जाव दुरहियासा	१।१।५६	वृत्ति
उम्मुक्क जाव जोव्वणग०	१।१।७०	वृत्ति
उम्मुक्कबालभावा जोव्वणेण रूवेण लावण्णेण य जाव अईव	१।६।३४	१।४।३६
उम्मुक्कबालभावे जाव विहरइ	१।६।२६	१।४।३५
उराले जाव लेस्से	२।१।२०	ओ० सू० ८२
उवगिज्जमाणे जाव विहरइ	१।६।४८	ना० १।१।६३
उस्सुक्कं जाव दसरत्तं	१।३।५२	वृत्ति
एवं पस्समाणे भासमाणे गेण्हमाणे जाणमाणे	१।१।५०	१।१।५०
ओहय०	१।२।२७	१।२।२४
ओहय जाव झियाइ	१।२।२४;१।६।१६	वृत्ति
ओहय जाव झियासि	१।२।२५;१।६।१७	१।२।२४
ओहय जाव पासइ	१।२।२५;१।६।१७	१।२।२४
करयल०	१।३।४०,५५,५६;१।६।३८	१।१।६६
करयल०	१।३।५०	१।३।४०
करयल जाव एवं	१।३।४४;१।४।२८	१।३।४०
करयल जाव एवं	१।३।५२,५३;१।६।३४	१।१।६६
करयल जाव पडिसुणेंति	१।३।५३,६२;१।६।३४;१।६।२०,४०	ओ० सू० ५६
करयल जाव वद्धावेइ	१।६।४५	१।३।५५
करेइ जाव सत्थोवाडिए	१।६।२३	वृत्ति
कुमारे जाव विहरइ	१।६।३६	१।१।६६
०खुत्तो०	१।१।७०	१।१।७०
गंगदत्ता वि	१।७।३३	१।२।५५
गामागर जाव सण्णिवेसा	२।१।३१	ओ० सू० ८६
गाहावई जाव तं धण्णे	२।१।२३	वृत्ति
गिण्हावेइ जाव एएणं	१।५।२७	१।२।६४
घाएंति २	१।३।१४	१।३।१४
चउत्थं छट्ठ उत्तरेणं इमेयारूवे	१।७।१०,११	१।७।६;१।२।१५
चउत्थस्स उक्खेवओ	१।४।१,२	१।२।१,२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठंछट्ठेणं जहा पण्णत्तीए पढम जाव जेणेव	१।२।१२-१४	भ० २।१०६-१०८
छट्ठस्स उक्खेवओ	१।६।१,२	१।२।१,२
छिंदइ जाव अप्पेगइयाणं	१।२।२८	१।२।२४
जणसद्दं च जाव सुणेत्ता	१।१।१९	ओ० सू० ५२
जहा विजयमित्ते जाव कालमासे कालं किच्चा	१।७।३१,३२	१।२।५०,५१
जातिअंधे जाव आगितिमेत्ते	१।१।६४	१।१।१४
जायसड्ढे जाव एवं	१।१।२५	ओ० सू० ८३
जाव पुढवी	१।३।६५;१।४।३९	१।१।७०
०ट्ठिइएसु जाव उववज्जिहिइ	१।१।७०	१।१।५७
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	१।३।४७,५५;१।९।४५	१।२।६४
ण्हायाए जाव पायच्छित्ताए	१।९।५०	१।२।६४
ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ	१।७।२०	१।२।६४
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	१।३।२४	१।२।६४
तं चेव जाव से णं	१।३।१५	१।२।१५
तंतीहि य जाव सुत्तरुज्जुहि	१।६।२३	१।६।१८
तं महया जहा पढमं तहा	२।१।३२	२।१।१२; भ० ९।१५८
तच्चस्स उक्खेवो	१।३।१,२	१।२।१,२
तह त्ति जाव पडिसुणेंति	१।३।४६	१।१।६६
ताओ जाव फले	१।७।२३	१।७।१९
तीसे य०	१।१।२३	ना० १।१।१००
तेगिच्छियपुत्तो वा जाव उग्घोसेंति	१।१०।१३,१४	१।८।२१,२२
तो णं जाव ओवाइणइ	१।७।२१	१।७।१९
दसमस्स उक्खेवओ	१।१०।१,२	१।२।१,२
दारगस्स जाव आगितिमित्ते	१।१।२६	१।१।१४
नगरगोरूवा जाव भीया	१।२।३४	१।२।३३
नगरगोरूवा जाव वसभा	१।२।३३	१।२।२४
नगरगोरूवाणं जाव वसभाण	१।२।२८	१।२।२४
नगर जाव विणिज्जामि	१।२।२४	१।२।२४
निक्खेवओ	१।३।६६	१।१।७१
निक्खेवो १।२।७४;१।४।४०, १।५।३०;१।६।३८;१।७।३९;१।८।२८;१।९।६०		१।१।७१
निच्छुभेमाणे अन्नत्थ कत्थइ सुइं वा अलभ		
अण्णया कयाइ रहस्सियं सुदरिसणाए गिहं	१।४।२६,२७	१।२।६२,६३
नीय जाव अडइ	१।७।७	१।२।१५
पंचमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ	१।५।१,२	१।२।१,२
पंच्चाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं	२।१।३१	२।१।१३
पज्जेइ जाव एगमुत्तं	१।६।२३	१।६।१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पम्हल०	१।७।२१	वृत्ति
पावं जाव समज्जिणइ	१।१।७०	१।१।५१
पुढवीए संसारो तहेव पुढवी	१।५।२६	१।३।६५
पुप्फ जाव गहाय	१।७।२३	१।७।२१
पुरा जाव विहरइ	१।१।४१,४२;१।२।६५	१।१।४१
पुरिसे जाव निरयपडिरूवियं	१।२।१५	१।१।४१
पुव्वभवपुच्छा वागरेइ	१।७।१२,१३	१।१।४२,४३
पुव्वभवे जाव अभिसमण्णागया	२।१।१५	वृत्ति
पुव्वाणुपुव्वि जाव जेणेव	१।१।२	ना० १।१।४
पुव्वाणुपुव्वि जाव दूइज्जमाणे	२।१।३२	२।१।३१
पोराणाणं जाव एवं	१।७।११	१।२।१५
पोराणाणं जाव पच्चणुभवमाणे	१।१।६६	१।१।४१
पोराणाणं जाव विहरइ	१।३।६४।१।४।६१;१।५।२८;१।७।३७;१।८।८,२६;१।६।५८;१।१०।१८	१।१।४१
फलएहिं जाव छिप्पतूरेणं	१।३।४३	१।३।२४
फुट्टमाणेहिं जाव विहरइ	२।१।११	ना० १।१।६३
बहूणं गोरूवाणं ऊहे जाव लावणेहि	१।२।२६	१।२।२४
बहूहिं चुण्णप्पओगेहि य जाव आभिओगित्ता	१।१०।७	१।२।७२
बहूहिं जाव ण्हाया	१।७।२५	१।७।२३
भगवं जाव जओ णं	१।१।३४	१।१।३३
भगवं जाव पज्जुवासामो	१।१।२१	ओ०सू० ५२
भवित्ता जाव पव्वइस्सइ	२।१।३५	२।१।१३
भवित्ता जाव पव्वएज्जा	२।१।३१	२।१।१३
मज्झंमज्झेणं जाव पडिदंसेइ	१।२।१५	भ० २।११०
महत्थं जाव पडिच्छइ	१।३।५६	१।३।४०
महत्थं जाव पाहुडं	१।३।५५	१।३।४०
महावीरे जाव समोसरिए	१।१।१७	वृत्ति
महिय जाव पडिसेहेति	१।३।४६	वृत्ति
मासाणं जाव आगितिमेत्ते	१।१।६६	१।१।६४
मासाण जाव दारियं	१।६।३१	१।२।३१
मासाणं जाव पयाया	१।७।२६	१।२।३१
मित्त०	१।३।६०;१।८।१७	१।२।३७
मित्त०	१।७।२७	१।७।१६
मित्त जाव अण्णाहि	१।३।२८	१।३।२४
मित्त जाव परियणं	१।६।४७	१।२।३७
मित्त जाव परियणेण	१।६।५७	१।२।३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मित्त जाव परिवुडा	१।२।५४	१।२।३७
मित्त जाव परिवुडाओ	१।७।२३	१।७।१६
मित्त जाव परिवुडे	१।३।५५	१।२।३७
मित्त जाव महिलाओ	१।७।२६	१।७।१६
मित्त जाव सद्धि	१।७।२३	१।७।१६
मित्त जाव सद्धि	१।६।४५	१।२।३७
मियादेवी जाव पडिजागरमाणी	१।१।२६	१।१।१५
मुंडा जाव पव्वयंति	२।१।३१	२।१।१३
रट्ठं च	१।१।५७	१।१।५७
रट्ठे य जाव अंतेउरे	१।१।५७	वृत्ति
राईसर जाव नो खलु अहं	२।१।१३	वृत्ति
राईसर जाव पभियओ	१।२।७२	१।१।५०
राईसर जाव प्पभियओ	१।१०।७	१।१।५०
राईसर जाव सत्थवाह०	१।५।२२,२३	१।१।५०
राईसर जाव सत्थवाहाण	१।१।५०	ओ०सू० ५२
राईसर जाव सत्थवाहेहिं	१।६।५७	१।१।५०
राया जाव भीईवयमाणे	१।६।३७	१।६।३६
वेणुलयाहि य जाव वायरासीहि	१।६।२३	१।६।१६
संगयगय०	१।२।७	वृत्ति
सणाहाण य जाव वसभाण	१।२।२४	१।२।२०
सण्णद्ध जाव पहरणे	१।२।२८	१।२।१४
सण्णद्धबद्ध जाव पहरणेहिं	१।३।४७	१।२।१४
सण्णद्धबद्ध जाव प्पहरणा०	१।३।२४	१।२।१४
सत्थेहि य जाव नहच्छेयणेहि	१।६।२३	१।६।२२
समणे जाव विहरइ	१।१।२०	ना० १।१।६७
समाणे सिंघाडग तहेव जाव सुदरिसणाए	१।४।२२-२४	१।२।५७-५६
समुप्पण्णे जाव तहेव निग्गए	१।३।१५	१।२।१५
सागरोवम०	१।१।७०	१।१।५७
सिंघाडग जाव एवं	१।१०।१३	१।१।५३
सिंघाडग जाव पहेसु	१।२।५७;१।८।२१;२।१।२३	१।१।५३
सुंदरथण	१।२।७	वृत्ति
सुबहुं जाव समज्जिणित्ता	१।८।१३;१।६।२६;१।१०।८	१।१।५१
सुबाहुकुमारे जाव अलंभोगसमत्थं	२।१।१०,११	ओ०सू० १४८,१४६
हट्ठतुट्ठहियया	१।१।२६	ओ०सू० २०
हय जाव पडिसेहिए	१।३।५०	१।३।४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुद्धि-पत्र

मूलपाठ

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२०	°मणप्पत्ते	°मणुप्पत्ते
५७	१२	जहेसु	जूहेसु
६०	२२	हीत्थ	हत्थी
१७७	३	कट्ट	कट्टु
२०६	१०	विप्पइर-माण	विप्पइरमाण
३०६	१६	संकाणि	संकामणि
४२६	१६	वेरमणाइ	वेरमणाइं
४५५	१५	पज्जुवासण्णयाए	पज्जुवासणाए
४६१	७	देवदेसंस	देवसंदेस
५१६	१६	तुम	तुमं
५५१	७	ताइ	ताइं
५७५	१६	°समुदएणं	°समुदएण
५६८	१२	सस्सिरीएण	सस्सिरीएणं
६१६	६	दसं	दस
७३०	२०	खणमाणे	खणमाणे
७३८	७	अप्पेगइयाण	अप्पेगइयाणं
७३६	१२	दुप्पडियाणदे	दुप्पडियाणंदे

पाठान्तर

१६	पा० ६	पटटंसि	पट्टंसि
४८	पा० ४	पिणद्धति	पिणद्धेंति
५२२	पा० २	आसुरुत्त	आसुरुत्ते

परिशिष्ट

२८	२४	अभिगयजीवेजी णं	अभिगयजीवाजीवेणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org